हिन्दी साहित्य का इतिहास
आदिकाल से रीतिकाल तक

COURSE CODE: B21HD01DC

BACHELOR OF ARTS
HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

SELF LEARNING MATERIAL

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

Vision

To increase access of potential learners of all categories to higher education, research and training, and ensure equity through delivery of high quality processes and outcomes fostering inclusive educational empowerment for social advancement.

Mission

* To be benchmarked as a model for conservation and dissemination of knowledge and skill on blended and virtual mode in education, training and research for normal, continuing, and adult learners.

Pathway

Access and Quality define Equity.

हिन्दी साहित्य का इतिहासः आदिकाल से रीतिकाल तक

Course Code: B21HD01DC

Semester -I

Bachelor of Arts
Hindi Language and Literature
Self Learning Material

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

DOCUMENTATION

Academic Committee

Dr. C. Balasubramanian
Dr. Abdul Jabbar M.
Dr. Anish Cyriac
Dr. Antony Oliver
Dr. N. Shaji
Dr. Rajan T.K.
Dr. Roshni R.
Dr. Sreedevi
Dr. Suma S.
Dr. Sumith P.V.
John Panicker

Development of the content

Dr. Lembodharan Pillai B.

Review

Content : Dr. Suma S., Dr. N. Shaji
Format : Dr. I.G. Shibi
Linguistics : Dr. N. Shaji, Dr. Suma S.

Edit

Dr. Suma S., Dr. N. Shaji

Scrutiny

Dr. Vincent B. Netto, Dr. Karthika M.S., Dr. Mini B., Dr. Jesna Rehim

Co-ordination

Dr. I.G. Shibi and Team SLM

Design Control

Azeem Babu T.A.

Production

November 2022

Copyright

© Sreenarayanaguru Open University 2022

വിദ്യകൊണ്ട് സ്വതന്ത്രരാവുക
SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from Sreenarayanaguru Open University. Printed and published on behalf of Sreenarayanaguru Open University by Registrar, SGOU, Kollam.

www.sgou.ac.in

YouTube

MESSAGE FROM VICE CHANCELLOR

Dear

I greet all of you with deep delight and great excitement. I welcome you to the Sreenarayanaguru Open University.

Sreenarayanaguru Open University was established in September 2020 as a state initiative for fostering higher education in open and distance mode. We shaped our dreams through a pathway defined by a dictum 'access and quality define equity'. It provides all reasons to us for the celebration of quality in the process of education. I am overwhelmed to let you know that we have resolved not to become ourselves a reason or cause a reason for the dissemination of inferior education. It sets the pace as well as the destination. The name of the University centres around the aura of Sreenarayanaguru, the great renaissance thinker of modern India. His name is a reminder for us to ensure quality in the delivery of all academic endeavours.

Sreenarayanaguru Open University rests on the practical framework of the popularly known "blended format". Learner on distance mode obviously has limitations in getting exposed to the full potential of classroom learning experience. Our pedagogical basket has three entities viz Self Learning Material, Classroom Counselling and Virtual modes. This combination is expected to provide high voltage in learning as well as teaching experiences. Care has been taken to ensure quality endeavours across all the entities.

The University is committed to provide you stimulating learning experience. The UG programme in Hindi Language and Literature is framed on the format generally deployed by the quality universities in the country. Being a grammar spoken across the country, the pedagogy calls for special attention to the language and comprehension. The University addressed this through an integrated curriculum mapping between the linguistic and literary. The proportion gets endorsed on the basis of the priorities of the learner. The SLM and the virtual modules cater to these requirements. We assure you that the university student support services will closely stay with you for the redressal of your grievances during your studentship.

Feel free to write to us about anything that you feel relevant regarding the academic programme.

Wish you the best.

Regards,
Dr. P.M. Mubarak Pasha 21.11.2022

Contents

BLOCK - 01 काल विभाजन एवं आदिकाल का सामान्य परिचय 01

इकाई : 1 हिन्दी साहित्य का काल विभाजन 02

1.1.1 काल विभाजन 02

इकाई : 2 आदिकालः सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक पहलू 05

1.2.1 सामाजिक परिस्थिति : 05

1.2.2 राजनीतिक परिस्थिति : 05

1.2.3 सांस्कृतिक परिस्थिति :.. 06

इकाई : 3 आदिकाल के वर्गीकरण और विभिन्न नामकरण ।........................ 08

1.3.1 आदिकाल के नामकरण से संबंन्धित विद्वानों के मत एवं मतभेद :-.................. 08

इकाई : 4 आदिकालीन हिन्दी साहित्य की मुख्य विशेषताएँ ।........................11

1.4.1 रचना-प्रक्रिया के अनुसार आदिकाल में निम्न लिखित प्रकार के साहित्य उपलब्ध हैः-..........11

इकाई : 5 मुख्य लेखक और उनकी रचनाएँ.. 15

1.5.1 अपभ्रंश रचनाएँ 15

1.5.2 हिन्दी रचनाएँ 15

1.5.3 आदिकालीन प्रसिद्ध ग्रन्थ 15

1.5.4 आदिकालीन हिन्दी का प्रमुख जैन कवि और उनके साहित्य :- 16

1.5.5 सिद्ध कवि और उनके प्रमुख कवि 16

इकाई : 6 प्रारंभिक हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ और शैलियाँ ।........................ 19

1.6.1 प्रारंभिक हिन्दी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ 19

BLOCK - 02 वीरगाथा साहित्य एवं प्रमुख रचनाएँ। 22

इकाई : 1 वीरगाथा साहित्य की विशेषताएँ । 23

2.1.1 आदिकालीन वीरगाथात्मक रचनाओं की प्रमुख प्रवृत्तियाँः-........................ 23

इकाई : 2 वीरगाथाकाल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ ।........................ 28

2.2.1 अपभ्रंश और देशी भाषा (बोलचाल) की ।.. 28

2.2.2 वीरगाथात्मक प्रमुख रचनाएँः-.. 28

इकाई : 3 वीरगाथा काल के अन्य कवि ।.. 32

2.3.1 वीरगाथा काल की मुख्य रचना एवं रचनाकार :- 32

2.3.2 रासो नाम की अन्य रचनाएँ : 33

2.3.3 प्रमुख जैन कवियों का नाम :- 33
2.3.4 प्रमुख सिद्ध कवियों का नाम : - 33
2.3.5 नाथ साहित्य के प्रमुख कवियों का नाम :- 33

BLOCK - 03 **भक्तिकाल और उसकी प्रमुख शाखाएँ** 36

इकाई : 1 भक्तिकाल - सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक पहलू 37

3.1.1 राजनीतिक स्थिति 37
3.1.2 सामाजिक स्थिति 37
3.1.3 सांस्कृतिक स्थिति 38

इकाई : 2 मध्यकाल के वर्गीकरण और विभिन्न नामकरण 40

3.2.1 भक्ति काल के विभिन्न नामकरण 40

इकाई : 3 भक्ति आन्दोलन और भक्ति आन्दोलन की उत्पत्ति और विकास 43

3.3.1भक्ति आंदोलन की उत्पत्ति 43

इकाई : 4 निर्गुण भक्ति शाखा और उनकी प्रमुख विशेषताएँ 46

3.4.1 निर्गुण भक्ति काव्य 46

इकाई : 5 सगुण भक्ति शाखा और उसकी प्रमुख विशेषताएँ 49

3.5.1 सगुण भक्ति काव्य - दो धाराएँ 49

BLOCK - 04 **भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ और प्रमुख कवि** 54

इकाई : 1 भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ और शैलियाँ 55

4.1.1 भक्ति काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ 55

इकाई : 2 संत काव्य परंपरा, संत कवि और विशेषताएँ 58

4.2.1 संत काव्य परंपरा 58
4.2.2 प्रमुख संत-कवि 58

इकाई : 3 प्रेम काव्य परंपरा, कवि और प्रेम काव्य की विशेषताएँ 62

4.3.1 प्रेमाश्रयी काव्यधारा 62
4.3.2 प्रमुख सूफी कवि 63
4.3.3 प्रेमाश्रयी काव्यधारा की विशेषताएँ 63

इकाई : 4 राम काव्य परंपरा और प्रमुख कवि 67

4.4.1 राम काव्य परंपरा और तुलसीदास । 67

इकाई : 5 कृष्ण काव्य परंपरा और प्रमुख कवि 72

4.5.1 कृष्ण काव्य परंपरा और सूरदास 72
4.5.2 अन्य प्रमुख कवि 74

इकाई : 6 भक्तिकाल की अन्य प्रवृत्तियाँ और कवि 77

4.6.1 भक्तिकाल के प्रमुख कवि । 77
4.6.2 भक्तिकाल की अन्य प्रवृत्तियाँ 78

BLOCK - 05 **रीतिकाल और रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ** 82

इकाई : 1 रीतिकाल- सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिवेश 83

5.2.1 रीतिकालीन सामाजिक परिवेश 83
5.2.2 रीतिकालीन सांस्कृतिक और धार्मिक परिवेश 84
5.2.3 साहित्यिक परिस्थिति 84
5.2.4 रीतिकालीन राजनीतिक परिवेश 84

इकाई : 2 रीतिकाल के वर्गीकरण और विभिन्न नामकरण 86

5.2.1 'रीति' शब्द का अर्थ 86
5.2.2 विभिन्न नामकरण 86
5.2.3 रीतिकाल का वर्गीकरण 87

इकाई : 3 रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ 89

5.3.1 रीति निरूपण /लक्षण पन्थों का निर्माणः 89
5.3.2 श्रृंगारिकता 89
5.3.3 आलंकारिकताः 90
5.3.4 भक्ति और नीति 90
5.3.5 प्रकृति-चित्रण 90
5.3.6 नारी - चित्रण 90
5.3.7 शास्त्रीयता 90
5.3.8 मुक्तक काव्य-प्रणयन 90

इकाई : 4 रीतिकाल के प्रमुख कवियों एवं रचनाओं का परिचय 92

5.4.1 रीति बद्ध कवि और उनकी रचनायें 93
5.4.2 रीति मुक्त कवि और उनकी रचनाएँ 93
5.4.3 रीति सिद्ध कवि और उनकी रचनाएँ 93

BLOCK - 06 **रीतिकालीन कवियों की परंपरा और विशिष्टताएँ** 96

इकाई : 1 रीतिबद्ध परंपरा और उसके प्रमुख कवि 97

6.1.1 रीतिबद्धता और रीतिकाव्य 97
6.1.2 रीतिबद्ध काव्य 98
6.1.3 रीतिबद्ध काव्य के प्रमुख कवि 98

इकाई : 2 रीतिसिद्ध परंपरा और उसके प्रमुख कवि 102

6.2.1 प्रमुख रीति सिद्ध कवि 102
6.2.2 अन्य रीतिसिद्ध कवि 103

इकाई : 3 रीतिमुक्त परम्परा और उसके प्रमुख कवि 106

6.3.1 रीतिमुक्त काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ 106

इकाई : 4 रीतिकाल के अन्य प्रमुख कवि और प्रवृत्तियाँ 109

6.4.1 संत भक्तिकाव्य 109
6.4.2 सूफी तथा प्रेमाख्यान काव्य 109
6.4.3 अन्य प्रवृत्तियाँ 109

BLOCK - 01

काल विभाजन एवं आदिकाल

का सामान्य परिचय

इकाई : 1
हिन्दी साहित्य का काल विभाजन

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी साहित्य के काल-विभाजन से परिचय प्राप्त होता है ।
- आदिकाल की सामाजिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक स्थितियों को समझता है ।
- काल-विभाजन से संबंधित विद्वान के मत और मतभेद समझता है ।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी साहित्य के इतिहास को तत्कालीन प्रवृत्ति के आधार पर विभाजित करने का प्रयास आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने किया है । उनका कहना है कि हिन्दी साहित्य का विवेचन करने में एक बात ध्यान में रखे कि किसी विशेष समय में लोगों ने रुचि विशेष का संचार और पोषक किधर से और किस प्रकार से हुआ । उपर्युक्त व्यवस्था के अनुसार, काल विभाजन किया ।

Keywords / मुख्य बिन्दु

समय सीमा, नामकरण, मत भेद, काल-विभाजन, काल विभाजन से संबन्धित विद्वानों के मत और मत भेद समझने का अवसर ।

Discussion / चर्चा

1.1.1 काल विभाजन

- हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रारंभिक लेखकों - गार्सा द तासी , शिव सिंह सेंगर ने काल विभाजन की ओर कोई ध्यान नहीं दिया ।
- हिन्दी साहित्य का इतिहास का काल विभाजन की परंपरा में, सर्वप्रथम जॉर्ज ग्रियर्सन ने प्रयास किया। ग्रियर्सन का ग्रंथ अध्याय में विभक्त है, प्रत्येक अध्याय सामान्यः एक काल का सूचक है। उनका काल विभाजन क्रम निम्न लिखित है :-

1. चारण काल - 700 - 1300 ई
2. पुनर्जागरण काल - 15 वीं शताब्दी ।
3. जायसी की प्रेम कविता
4. ब्रज का कृष्ण संप्रदाय
5. मुगल दरबार
6. तुलसीदास
7. रीति काव्य
8. तुलसीदास के अन्य परवर्ती
9. अठारहवीं शताब्दी

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि यह काल विभाजन न होकर साहित्य के इतिहास के भिन्न - भिन्न अध्यायों का नामकरण है । इसमें काल क्रम की निरंतरता का भी अभाव है । इससे साहित्य की कपितय सीमित प्रवृत्तियों का ज्ञान तो हो जाता है किन्तु ऐतिहासिक चेतना का समग्र अवबोध संभव नहीं है ।

आगे चलकर मिश्र बन्धुओं ने ' मिश्र बिन्दु विनोद ' में काल विभाजन का प्रयास किया जो इस प्रकार है :-

1. आरंभिक काल
   - (क) पूर्वारंम्भिक काल (700 - 1343 वि.)
   - (ख) उत्तराम्भिक काल (1344 - 1444 वि.)
2. माध्यमिक काल
   - (क) पूर्व माध्यमिक काल (1445 - 1560 वि.)
   - (ख) प्रौढ़ माध्यमिक काल (1561-1680 वि.)
3. अलंकृत काल
   - (क) पूर्वालंकृत काल (1681 - 1790 वि.)
   - (ख) उत्तरालंकृत काल (1791 - 1889 वि.)
4. परिवर्तन काल - 1990 - 1925 वि.

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

5. वर्तमान काल - (1926 वि . से अध्यावधि)

नि:सन्देह मिश्र बन्धुओं का वर्गीकरण ग्रियर्सन की अपेक्षा प्रौढ़ है किन्तु इसमें असंगतियों का सर्वथा अभाव है ।

सर्वप्रथम दोष तो यह है कि मिश्र बन्धुओं ने भी 700 से 1300 शती ई के अपभ्रंश भाषा में निबध साहित्य को हिन्दी की परिधि में समेट लिया है । अलंकृत तथा परिवर्तन कालों का नामकरण भी वैज्ञानिक नहीं है ।

हिन्दी साहित्य के इतिहास को कालविभाजन की दृष्टि से विभाजित करने का प्रयास आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने किया है । उनका कहना है कि हिन्दी साहित्य का विवेचन करने में एक बात ध्यान में रखी है कि किसी विशेष समय में लोगों ने रुचि विशेष का संचार और पोषक किधर से और किस प्रकार से हुआ । उपर्युक्त व्यवस्था के अनुसार, काल विभाजन किया ।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास को चार कालों में विभाजित किया है :-

1. वीरगाथकाल - 1050 - 1375 ई
2. भक्ति काल (पूर्व मध्यकाल) - 1375 - 1700 ई
3. रीतिकाल (उत्तर मध्यकाल) - 1700 - 1900 ई
4. आधुनिक काल (गद्य काल) - 1900 - अब तक

इन कालों की रचनानाओं की विशेष्य प्रवृत्ति के अनुसार ही उनका नामकरण किया गया है ।

मिश्र बन्धुओं ने हमारे विवेच्य काल को आदिकाल के नाम से अभिहित किया, किन्तु शुक्ल जी ने इस युग में वीरगाथाओं की प्रमुखता को देखते हुए इसे वीरगाथा काल के नाम से पुकारा है । इसी प्रकार पूर्व मध्यकाल तथा उत्तर मध्यकाल में भक्ति और रीति की प्रमुख प्रवृत्तियों के आधार पर उन्हें क्रमशः भक्तिकाल तथा रीतिकाल के नामों से अभिहित किया है । आधुनिक काल में गद्य लेखन की प्रमुखता को देखकर उसे गद्य काल के नाम से अभिहित किया है ।

डॉ. रामकुमार वर्मा ने अपने इतिहास ग्रंथ में हिन्दी साहित्य का काल विभाजन इस प्रकार किया हैः -

1. संधि काल
2. चारण काल (आदिकाल)
3. भक्ति काल
4. रीतिकाल
5. आधुनिक काल

- डॉ हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने अनेक अनुसंधानों के बाद हिन्दी साहित्य का काल विभाजन इस प्रकार किया :-

1.आदिकाल - [1000- 1400 के मध्य तक]
2.भक्तिकाल - [1400 मध्य से - 1600 के मध्य तक]
3.रीतिकाल - [1600 के मध्य से-1900 के मध्य तक]
4. आधुनिक काल - [1900 के मध्य से - अब तक]

विद्वानों के मतभेद के कारण हम हिन्दी साहित्य का काल विभाजन निम्नलिखित रूप में कर सकते है :-

1. प्रारंभिक काल (आदिकाल) - 1050 - 1375 ई
2.पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) - 1375 - 1700 ई
3.उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) - 1700 - 1900 ई
4.आधुनिक काल - 1900 से अद्यावधि

लेकिन अधिकांश विद्वान शुक्ल जी के मत से सहमत है। आचार्य शुकल द्वारा साहित्यिक इतिहास लेखन का प्रयास एक ऐसि नींव का पत्थर है जिसके बिना हिन्दी साहित्य के इतिहास के भव्य महल का निर्माण अकल्पनीय है ।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

काला विभाजन की समस्या

विद्वानों के मतभेद

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने काल विभाजन किसी युग विशेष में प्राप्त होने वाली रचनाओं में किसी प्रवृत्ति - विशेष की रचना की प्रचुरता के आधार पर किया है । हिन्दी साहित्य के प्रारंभिक काल में अपभ्रंश और हिन्दी भाषा की कुल 12 कृतियाँ प्राप्त हुई है । इनमें वीरगाथात्मक कृतियों का बाहुल्य था ।

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी साहित्य का काल विभाजन ।
- विभिन्न विद्वानों के मत काल विभाजन का मुख्य आधार ।
- प्रमुख इतिहासकार ।

- जार्ज ग्रियर्सन ।
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल का योगदान ।
- काल विभाजन की प्रक्रिया ।
- विद्वानों के विभिन्न मत ।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. शुकल जी की पूरा नाम क्या था ?
2. काल विभाजन का सर्वप्रथम प्रयास किसने किया ?
3. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य को कितने कालों में विभाजित किया ?
4. शुक्ल जी ने हिन्दी साहित्य के इतिहास को कितने कालों में विभाजित किया ?
5. आदिकाल को संधिकाल एवं चारण काल संज्ञा किसने दी ?
6. आदिकाल को सिद्ध सामंत युग नाम किसने दिया ?
7. 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' के रचयिता कौन है ?
8. प्रारंभिक काल को आदिकाल नाम किसने दिया ?

Answers उत्तर

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ।
2. जोर्ज ग्रियर्सन ।
3. चार कालों में ।
4. चार कालो में ।
5. डॉ: रामकुमार वर्मा।
6. राहुल सांकृत्यायन ।
7. आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ।
8. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- हिन्दी साहित्य के इतिहास के काल विभाजन की समस्या ।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- काल विभाजन की समस्याएँ ?
- कालविभाजन से संबंधित विद्वानों के मत भेद क्या था ?
- शुक्ल जी के काल विभाजन की प्रक्रिया किस प्रकार है ?
- आदिकाल पर टिप्पणी लिखिए ।

इकाई : 2

आदिकाल: सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक पहलू

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रमुख परिस्थितियों का परिचय प्राप्त होता है ।
- प्राचीन और मध्यकालीन हिन्दी साहित्य की मुख्य विशेषताएँ समझता है ।
- आदिकालीन परिस्थितियों के बारे में समझता है ।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

किसी भी काल के साहित्य इतिहास को समझने के लिए उसके परिस्थितियों का परिचय आवश्यक है । इसलिए हिन्दी साहित्य के इतिहास के आदिकालीन राजनीतिक ,सांस्कृतिक और सामाजिक परिस्थितियों का परिचय आवश्यक है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

युद्धवर्णन, शौर्य प्रदर्शन्शन, हिन्दू राजाओं की लोभवृत्ति ।

Discussion / चर्चा

1.2.1 सामाजिक परिस्थिति :

राजनीतिक और धार्मिक परिस्थिति ने सामाजिक स्थिति को प्रभावित किया। जनता शासन और धर्म दोनों ओर से निराश्रय बन गयी। जातियों के बीच उच्च निति की भावना प्रबल बन गई थी। वर्ण व्यवस्था जाति भेद में बदल गई। आचार विचार और स्थान में अंतर होने से एक ही वर्ण की असंख्य उपजातियाँ भी हो गयी थी। छुआ - छूत के नियम कठोर हो गये । ऐसा माना गया था कि उच्च वर्ग के लोग भोग करने केलिए थे, और निम्नवर्ग के लोग श्रम करने केलिए पैदा हुए थे। नारी, केवल भोग क्रय - विक्रय एवं उपकरण की वस्तु मानी गई थी। सामान्य जन की शिक्षा के लिए कोई व्यवस्था नहीं थी । सती प्रथा भी प्रचलित थी ।

साधारण जनता अंध विश्वासों के जाल में फंसी हुई थी। उस समय स्वयंवर प्रथा का भी विशेष रूप में प्रचार था । इस पवित्र धार्मिक कृत्य के समय कभी - कभी खून की नदियाँ भी बहाया करती थी । राजा को बहु विवाह करने की रीति कायम थी । अंतपुर सुंदर युवतियों का बाज़ार बन गया। हिन्दू एक बार विधर्मि या म्लेच्छ हो गए, तो उन्हें फिर हिन्दू बनना कठिन लगता था ।

इस प्रकार हिन्दुओं की शक्ति क्षीण होने लगी इस प्रकार सामाजिक परिस्थिति भी विच्छृगल, अशांतिपूर्ण और अव्यवस्थित हो गयी थी ।

1.2.2 राजनीतिक परिस्थिति :

भारतीय इतिहास का यह युग राजनीतिक दृष्टि से अव्यवस्था, विच्छृगल, गृहकलस और पराजय का युग कहा जाता है ।

विदेशी आक्रमणों, आपसी फूट, और पारस्परिक विद्वेश के कारण देश खोखला होता जा रहा था। सम्राट हर्षवर्धन के निधन के पश्चात उत्तर भारत में केंद्रीय शक्ति का ह्रास हो गया था। देश की एकता को बनाए रखने के लिए जिस शक्ति की जरूरत थी, वह छिन्न-भिन्न हो गई थी। उस समय होने वाली लड़ाइओं के कई कारण थे :-

- अपने राज्य का विस्तार
- शौर्य प्रदर्शन के लिए युद्ध
- हिन्दू राजाओं की विवाह संबंधित लोभ वृत्ति ।
- आक्रमणों का सामना ।

इसलिए देश के अंदर अशांति और अनैक्य फैल गई थी। इसी समय देश पर बाहर से मुसलमानों का आक्रमण

हुआ। 710 से 711 में मुहम्मद खासिम ने, सिंध पर आक्रमण किया। नवीन शताब्दी तक अरब सिंध तक ही सीमित रहे थे।

दसवीं शताब्दी में मोहम्मद ग़ज़नी ने ग़ज़नी पर अपना अधिकार स्थापित किया। एक और बाहर से मुसलमान आक्रमण हो रहा था ओर दूसरी ओर अंदर से राज्य विस्तार के लिए लड़ाई हो गई थी। शुभ अवसर पाकर मोहम्मद गोरी ने भारत पर अपना अधिकार स्थापित करने का निश्चय किया। पृथ्वीराज चौहान और गौरी के बीच युद्ध हुआ। खनैज के राजा जयचंद्र की सहायता से गौरी ने चौहान को पराजित किया। उसकी मृत्यु के बाद उत्तर भारत मुगल सुल्तान के अधीन बन गए।

संक्षेप में कह सकते हैं कि 8 वीं से 15 वीं शताब्दी तक के भारतीय इतिहास की राजनैतिक परिस्थिति हिन्दू सत्ता के क्षय होने की और इस्लाम सत्ता के उदय होने की कहानी है।

1.2.3 सांस्कृतिक परिस्थिति :

वैदिक और पौराणिक धर्म के विविध रूपों के, साथ-साथ बौद्ध धर्म और जैन धर्म भी अपने वास्तविक आदर्शों और सिद्धांतों में से दूर हट गये। बौद्ध धर्म से महायान और सहजयान जैसी परंपरा का उदय हुआ। इन संप्रदायों में अलौकिक शक्ति की प्राप्ति और उनका प्रदर्शन की सिद्धि समझ गया ।

धर्म के नाम पर चमत्कार प्रदर्शन के द्वारा निरीह जनसमुदाय को वंचित करने की प्रवृत्ति बढी ।

इस प्रकार देश का नैतिक स्तर गिरा और इंद्रिय लोलुपता की प्रवृर्ति जाग उठी ।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

धर्म के नाम पर अधर्म का प्रभाव

अशांतिपूर्ण परिस्थिति ।

युद्धों का सजीवर्णन ।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

नारी केवल भोग विलास की वस्तु मानी गई थी । आदिकाल की परिस्थितियाँ अशांतिपूर्ण और अव्यवस्थित थी । हिन्दू सत्ता के धीरे क्षय होने की और इस्लाम सत्ता के उदय होने की प्रवृत्ति देख सकता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- काल विभाजन।
- आदिकाल ।
- आदिकाल की विशिष्टताएँ ।
- सामाजिक परिस्थिति ।
- सांस्कृतिक परिस्थिति ।
- राजनीतिक परिस्थिति ।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सामाजिक परिस्थिति की मुख्य प्रवृत्ति क्या है ?
2. आदि काल में नारी को किस प्रकार से देखा गया ?
3. राजनीतिक परिस्थिति की मुख्य विशेषताएँ क्या है ?
4. आदिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्ति क्या है ?
5. 'साहित्य प्रत्येक देश की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब है' यह पंक्ति किस आलोचक का है ?
6. आदिकालीन साहित्य की प्रमुख रस क्याा - क्या हैं ?

7. आदिकाल की प्रमुख भाषा क्या क्या है ?
8. आदिकालीन साहित्य की अत्यंत क्षीण धारा क्या है?

Answers उत्तर

1. वर्ण व्यवस्था और जाति भेद।
2. भोग वस्तुओं के रूप में ।
3. हिन्दू राजाओं के विवाह संबंधी लोभवृत्ती ।
4. वीरता प्रधान रचनाएँ ।
5. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ।
6. वीर और श्रृंगार रस ।
7. अपभ्रंश ,हिन्दी, मैथिली और खडीबोली ।
8. राजनीतिक परिस्थिति।

Assignment प्रदत्त कार्य

- आदिकाल की परिस्थितियों का परिचय दीजिए ।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- आदिकाल की सामाजिक परिस्थिति का विवरण दीजिए ।
- आदिकाल की सांस्कृतिक परिस्थिति किस प्रकार से है ?
- आदिकाल की परिस्थितियों का संक्षिप्त विवरण दीजिए ।
- आदिकाल की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि व्यक्त करें।

इकाई : 3
आदिकाल के वर्गीकरण और विभिन्न नामकरण

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- आदिकाल के विविध नामकरण के बारे में समझता है।
- नामकरण की संबंधित समस्याओं के बारे में समझता है ।
- आदिकाल का परिचय प्राप्त कर सकता है ।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी साहित्य का इतिहास करीब एक हज़ार वर्ष पुराना है । अध्ययन की सुविधा के लिए विद्वानों ने एक हज़ार वर्ष की लम्बे इतिहास को चार खंडों में विभाजित किया है । यह काल-विभाजन कोई ऐतिहासिक तत्व के आधार पर नहीं किया गया है, केवल अध्ययन की सुविधा के लिए की गई हैं । काल-विभाजन और नामकरण तथा समय-क्रम पर विद्वानों में मतभेद है । किन्तु अधिकांश लोगों ने महा पंडित आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के काल-विभाजन को स्वीकार कर लिया है ।

Keywords / मुख्य बिन्दु

नामकरण की समस्याएँ, विद्वानों के विभिन्न मत, वीरगाथकाल ।

Discussion / चर्चा

आदिकाल के नामकरण का प्रश्न हिन्दी साहित्य के इतिहास के विवादास्पद प्रश्नों में एक प्रमुख प्रश्न है । हिन्दी साहित्य के इतिहास के अनेक अधिकारी लेखक विद्वानों ने इस संबंध में अपने- अपने भिन्न मत दिए हैं ।

सर्वप्रथम मिश्र बंधुओं ने अपने 'मिश्र बंधु विनोद' नामक ग्रंथ में विवेच्य काल को आदिकाल के नाम से पुकारा, किन्तु आचार्य शुक्ल ने इस युग में वीरगाथाओं की प्रमुखता को ध्यान में रखकर इसे वीरगाथा काल के नाम से अभिहित किया ।

शुक्ल जी के नामकरण के संबंध में तीन प्रमुख बातों पर ध्यान देना आवश्यक है :-

1. वीरगाथात्मक ग्रंथों की प्रचुरता
2. जैनाचार्यों द्वारा विरचित प्राचीन ग्रंथों को धार्मिक साहित्य घोषित करके उसे रचनात्मक साहित्य की परिधि से निकाल देना।
3. रचनाओं में भिन्न - भिन्न विषयों पर फुटकर दोहे मिलते हैं, किन्तु उनसे किसी विशेष प्रवृत्ति का निर्माण न हो सकना ।

1.3.1 आदिकाल के नामकरण से संबंन्धित विद्वानों के मत एवं मतभेद :-

हिन्दी साहित्य का आदिकाल 1050 - 1375 ई तक ठहरता है। दलपति विजय कृत खुमाण रासो, जिसका रचना काल वि. सं 1190 माना गया है । यहाँ हिन्दी साहित्य का प्रारंभिक काल का आरंभ माना गया है ।

महापंडित जॉर्ज ग्रियर्सन ने आदि काल को **चारण काल** नाम दिया है । मिश्रबंधु ने इस काल का नाम **प्रारंभिक**

काल दिया है । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस काल का नाम **वीरगाथा काल** निर्धारित किया है । आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के मत में यह **बीजावपन काल** है । इस काल को **सामंत काल** नाम देकर राहुल साँकृत्यायन ने अपना मत प्रकट किया है । डॉ. रामकुमार वर्मा के मत में यह **संधि काल** है । आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस काल को '**आदिकाल**' नाम दिया है, जिसे प्रायः सभी विद्वानों ने स्वीकृति दी है ।

1.3.1.1 आदिकाल का नामकरण :-

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल - वीरगाथा काल (वीरभाव की प्रवृत्ति के कारण)।
- डॉ रामकुमार वर्मा - चारण काल (चारण या भाटों के द्वारा रचित कृतियों के कारण ।

  इसे दो कालों में विभक्त किया -

  1. संधि काल - सं 750 - 1000
  2. चारण काल - सं 1000 - 1375

रामकुमार वर्मा ने कहा कि इस काल के अधिसंख्य कवि चारण थे, अतः चारण काल नाम उपयुक्त होगा।

- राहुल सांकृत्यायन - सिद्ध सामंत युग (साहित्य में सिद्धों की वाणी और सामान्तों की स्तुति का प्रधान्य के कारण)
- महावीर प्रसाद द्विवेदी - बीजावपन काल। (आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने प्रारंभिक युग की प्रवृत्तिगत विविधताओं को देखते हुए इसे बीजवपन काल नाम से अभिहित किया। द्विवेदी जी का मंतव्य यही था कि हिन्दी भाषा के साहित्य के विकास का बीज इसी युग में बोया गया, किन्तु परवर्ती विद्वानों को यह नाम स्वीकार्य नहीं हुआ)
- डॉ हज़ारी प्रसाद द्विवेदी - आदिकाल । (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने प्रारंभिक युग को दिये विभिन्न नामों का विस्तृत विवेचन किया तथा उन्होंने समय के आधार पर इस युग का नामकरण करने का सुझाव दिया और उन्होंने मिश्र बंधुओं द्वारा प्रदत्त आदिकाल नाम को ही अधिक उपयुक्त माना)
- मिश्र बंधु - आरंभिक काल ।

प्रारंभिक काल में कौन - कौन सी प्रामाणिक रचनाएँ है, जो भाषा कि दृष्टि से प्रारंभिक हिन्दी के आधार पर ही इस काल की सीमा एवं नामकरण का निर्णय किया जा सकता है। आदिकाल को प्रारंभिक काल की संज्ञा से अभिहित करना अधिक उचित है।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

आदिकाल के विभिन्न नामकरण ।

वीरगाथा काल ।

आदिकाल नाम ।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

हिन्दी साहित्य इतिहास के प्रारंभिक काल को आदिकाल कहते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने अपने इतिहास ग्रन्थ में इस काल का नाम वीरगाथा काल रखा है। 'वीरगाथा काल' 'चारण काल', 'संधि काल', 'सिद्ध सामंत काल' आदि नामों से भी इस युग का संबंधित करते हैं । लेकिन आदिकाल नाम ही सर्वदा उपयुक्त माना गया है ।

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी साहित्य का इतिहास
- नामकरण
- नामकरण संबंधित विभिन्न विद्वानों के मतभेद ।
- विभिन्न नामकरण
- वीरगाथा काल ।
- आदिकाल ।
- प्रारंभिक काल ।
- आरंभिक काल ।
- सिद्ध सामंत युग ।
- बीजवपन काल ।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. आदिकल को शुकल जी ने क्या नाम दिया ?
2. चारण काल और संधि काल नाम किसने दिया ?
3. आदिकाल को आदिकाल काल नाम किसने दिया?
4. आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ क्या है ?
5. आदिकालीन रचनाओं के प्रमुख रस क्या है ?
6. परमाल रासो का दूसरा नाम क्या है ?
7. पृथ्वीराज रासो का प्रधान रस वीर है, इसका सहयोगी रस क्या है ?
8. पृथ्वीराज रासो में कितने समय है ?

Answers उत्तर

1. वीरगाथा काल
2. डॉ. रामकुमार वर्मा
3. डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी
4. वीर रस प्रधान रचनाएँ ।
5. वीर और श्रृंगार रस ।
6. आल्हा खंड।
7. श्रंगार रस ।
8. 69 समय ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- आदिकाल के विभिन्न नामकरण ।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- शुक्ल जी द्वारा दिया गया वीरगाथा काल नाम की विशेषताएँ क्या है ?
- आदिकाल के नामकरण संबंधी डॉ :रामकुमार वर्मा के मत क्या है ?
- आदिकाल नामकरण की मुख्य समस्याएँ क्या क्या है ?

इकाई : 4
आदिकालीन हिन्दी साहित्य की मुख्य विशेषताएँ ।

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- आदिकालीन साहित्य का परिचय प्राप्त होता है।
- आदिकालीन साहित्य की विशेषताएँ समझता है ।
- सिद्ध तथा नाथ साहित्य प्रवृत्ति से परिचय प्राप्त होता है ।
- जैन साहित्य की मुख्य संदर्भों से परिचय प्राप्त होता है ।
- चारण साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियों से परिचय प्राप्त होता है ।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी साहित्य के प्रथम काल 'आदिकाल' में विभिन्न प्रकार के साहित्य देख सकते हैं । इनमें विभिन्न प्रवृतियों का समावेश भी मुखरित हैं । आश्रेयदाताओं की प्रशंसा, युद्धों का वर्णन, वीररस की प्रधानता, प्रेम और श्रृंगार का वर्णन आदि विभिन्न प्रवृत्तियाँ आदिकालीन साहित्य की विशेषताएँ हैं । इन प्रवृतियों के आधार पर अधिकांश विद्वान उपलब्ध रचनाओं की प्रामाणिकता पर विचार प्रकट किए हैं । इसलिए इन रचनाओं और प्रवृत्तियों के अध्ययन के बिना आदिकाल का अध्ययन अधूरा है ।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

काल-विभाजन

काल विभाजन से संबन्धित विद्वानों के मत एवं मत-भेद ।

सिद्ध, नाथ, और जैन साहित्य की प्रवृत्तियाँ ।

रासो साहित्य की मुख्य विशेषताएँ ।

चारण साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ ।

Discussion / चर्चा

हिन्दी साहित्य के इतिहास को विद्वानों ने चार कालों में विभाजित किया है -

1. आदिकाल या वीरगाथा काल - (संवत् 1050 से 1375 तक)
2. पूर्व मध्यकाल या भक्तिकाल - संवत् 1375 से 1700 तक)
3. उत्तर मध्यकाल या रीति काल - (संवत् 1700 से 1900 तक)
4. आधुनिक काल या गद्य काल - (संवत् 1900 से आज तक)

1.4.1 रचना-प्रक्रिया के अनुसार आदिकाल में निम्न लिखित प्रकार के साहित्य उपलब्ध है:-

- सिद्ध साहित्य
- नाथ साहित्य
- जैन साहित्य
- रासो साहित्य
- चारण साहित्य
- लौकिक साहित्य

सिद्ध साहित्य

सिद्ध साहित्य का समय अपभ्रंश से हिन्दी की ओर का विकास काल है । सिद्धों तथा नाथों ने साहित्य को अपना

आदर्श-प्रचार का उत्तम उपाय मान लिया है । सिद्ध साहित्य भक्तिकाल के सगुण और निर्गुण भक्त कवियों को प्रभावित किया है ।

बुद्ध धर्म के वज्रयान शाखा के चौरासी संतों को सिद्ध माने जाते हैं । इसमें सबसे प्रसिद्ध एवं सर्वप्रथम सिद्ध सरहपा है । सरहपा, शबरपा, लुइपा, कण्हपा आदि प्रमुख सिद्ध कवियाँ हैं । समय की दृष्टि से इनमें सरहपा ही सबसे प्राचीन हैं ।

सिद्ध कवियों ने समाज की झूठी मान्यताओं के प्रति आक्रोश व्यक्त किया, साथ ही सद्कार्यों और सद्विचारों को अपनाने का उपदेश दिया । सरहपा दान और परोपकार का उपदेश देते हैं :-

` पर आर ण किअऊ अत्थि ण दीअउ दाण ।
एहु संसार कवणु फलु वरु छड्डहु अप्पाणु ।। `

सिद्धों की काव्य भाषा अपनी रहस्यात्मकता के कारण 'सन्ध्य भाषा ' या संधा भाषा कही गयी है । दोहाकोश, गीति, चर्यगीति, उपदेश, अजवज्र आदि सुप्रसिद्ध सिद्ध कवि सरहपा की कृतियाँ है। शबरपा की कृतियों में चर्यापद, वज्रयोगिनी, आराधना विधि आदि प्रमुख है। योगरत्न माला, वसंत तिलक आदि कण्हपा काग्रंथ है ।

नाथ साहित्य

निर्गुण या रूपहीन परमात्मा पर विश्वास कर, हठयोग पर महत्व दिये गये संतों को नाथ कहते हैं । नाथ पंथ के प्रवर्तक आदि नाथ अर्थात शिव माने जाते हैं, जिनके प्रमुख शिष्य के रूप में मत्स्येंद्रनाथ का नाम आता है। मत्स्येंद्रनाथ के शिष्यों की परंपरा काफी विस्तृत है । किन्तु उनके प्रमुख शिष्य गोरखनाथ थे ।

नाथ संप्रदाय के मार्गदर्शी आचार्य गोरखनाथ हैं। गोपीचंद, भर्तहरी आदि भी नाथ संप्रदाय के प्रसिद्ध कवि है। नाथ योगियों ने हिन्दु तथा मुसलमान दोनों धर्मों के लोगों को अपने पंथ में शामिल किया ।

नाथ कवियों ने गुरु को बहुत अधिक महत्व दिया है, तथा उसे ब्रह्मा के समान ही माना है ।

गोरखनाथ कहते हैं :-

" नाथ —निरंजन आरती गाऊँ।
गुरु दयाल आख्या जो पाऊँ।। ``

जैन साहित्य

प्राचीन काल में भारतवर्ष में जैन धर्म का उन्मेष बौद्ध धर्म के उन्मेष के साथ ही हुआ ।

आदिकाल काल के जैन साहित्य भी बौद्ध साहित्य के समान संपन्न है। जैन साहित्य के प्रमुख साहित्यकारों में स्वयंभू का महत्वपूर्ण स्थान है। पउम चरिउ, स्वयंभू छंद तथा रिठ्ठणेमि चरिउ आदि उल्लेखनीय है। जैन धर्म का विस्तार देश के पश्चिमी भाग अर्थात राजस्थान, गुजरात आदि तक सीमित रहा। 13 वीं शताब्दी के आसपास जैन कवियों द्वारा रचित अनेक रचनाएँ प्राप्त होती हैं, जिनकी भाषा अपभ्रंश है। जैन कवियों की कृतियाँ काव्यत्व की दृष्टि से बहुत श्रेष्ठ भले न हों, भाषा का प्रयोग की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, जिसका एक उदाहरण दृष्टव्य है :-

'वज्जिय सरल वियप्पहं परम समाहि लहंति ।
जं विदही साणंदू सो सिव सूक्ख भणंति ।। `

(सकल विकल्पों को त्यागकर जो परम समाधि प्राप्त करते हैं, और आनंद का अनुभव कराते है, उन्हें मोक्ष सुख कहते है)

जैन अपभ्रंश साहित्य के प्रमुख कवियों में सबसे महत्वपूर्ण कवि स्वयंभू है (8 वीं शती), जिस जैन प्रबन्धात्मक काव्य के प्रथम कवि माने जाते हैं। अपभ्रंश भाषा का वाल्मीकि कहे जानेवाले स्वयंभू कवि की बहुत रचनाएँ उपलब्ध नहीं होती तथा विद्वानों ने पउम चरिउ, स्वयंभु छन्द तथा णयकुमार चरिउ आदि को इनकी रचनाएँ माना है।

रासो साहित्य

हिन्दी के रहस्य शब्द को प्राकृत भाषा में रासो कहते है । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के मत में रासो शब्द का संबंध रसायन से होता है । श्रृंगार और वीररसयुक्त काव्य रासह या रासो नाम से अभिहित किया जाता है ।

प्रबंध काव्य के रूप में उपलब्ध सबसे प्राचीन ग्रन्थ **पृथ्वीराज रासो** है ।

वीरगीत के रूप में उपलब्ध प्राचीन ग्रंथ है, **बीसलदेव रासो** । जगनिक नामक कवि कृत **परमाल रासो**, शारंग्धर कृत **हम्मीर रासो**, दलपति विजय का **खुमाण रासो** आदि प्रमुख रासो साहित्य है ।

पृथ्वीराज रासो, आदि कालीन वीर काव्यों में छन्द वैविध्य परंपरा का श्रेष्ठतम महाकाव्य है । इसे हिन्दी के प्रथम महाकाव्य माना गया है। यह लगभग ढाई हज़ार पृष्ठों का है और इसमें 69 समय (सर्ग) हैं। इसके रचयिता दिल्ली के राजा पृथ्वीराज चौहान के मित्र, राजकवि एवं सेनापति चन्दबरदाई हैं। इस ग्रंथ की प्रामाणिकता पर हिन्दी के विद्वानों के बीच सर्वाधिक बहस हुई है। चन्दबरदाई की मृत्यु तक यह ग्रंथ पूरा नहीं हुआ था। चन्द के पुत्र जल्हण ने इसे पूरा किया ।

चारण साहित्य

चारण साहित्य के संस्थापक के रूप में राजशेखर का महत्वपूर्ण स्थान होता है । चारण साहित्य के ख्याति प्राप्त रचनाकारों में पिंगलाचार्य का नाम विशेष रूप में उल्लेखनीय है। स्तोत्र साहित्य के रचयिता पुष्पदन्त, काव्य मीमांसा के लेखक राजशेखर, कथा सरित्सागर के रचयिता सोमदेव आदि के नाम चारण साहित्य में महत्वपूर्ण है ।

लौकिक साहित्य

आदिकाल में लौकिक साहित्य की भी रचना हुई । 'रोला कवी की ढोला मारू रा दूहा', 'बसन्द विलास', 'राउल वेल', 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण', 'वर्ण रत्नाकर', 'अमीर खुसरो की पहेलियाँ और मुखरियाँ',' विद्धापती की पदावली' आदि प्रमुख लौकिक साहित्य हैं ।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

काल-विभाजन की समस्या
आदिकाल की नामकरण की समस्या
रासो साहित्य की विशेषताएँ
आदिकालीन प्रमुख कवियाँ ।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

वीरता प्रधान रचनाओं की प्रचुरता ।
हिन्दी साहित्य के प्रथम महाकाव्य पृथ्वीराज रासो ।
प्रबंध एवं मुक्त दोनों रूपों में काव्य रचना की है ।
डिंगल और पिंगल भाषा का प्रयोग भी किया है ।

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी साहित्य, काल विभाजन की परंपरा
- नामकरण की समस्या
- आदिकाल का विविध नामकरण
- वीरगाथा काल
- वीरतायुक्त रचनाओं की प्रचुरता ।
- वीर और श्रृंगार रस की प्रधानता ।
- रासो काव्य
- पृथ्वीराज रासो -पहला महाकाव्य ।
- सिद्ध, नाथ और जैन साहित्य और प्रमुख कवियाँ ।
- चारण साहित्य ।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिन्दी साहित्य के प्रथम महाकाव्य का नाम क्या है ?
2. आदिकाल को वीरगाथा काल नाम किसने दिया ?
3. पृथ्वीराज रासो के रचयिता कौन है ?
4. प्रमुख सिद्ध कवि कौन है ?
5. सिद्धों की भाषा क्या है ?
6. पृथ्वीराज रासो के अध्याय को क्या कहते है ?
7. एक जैन कवि की नाम लिखिए ?
8. आदिकाल को बीजवपन काल नाम किसने दिया ?
9. पउम चरिउ के रचयिता कौन है ?
10. पृथ्वीराज रासो में कितने समय हैं ?

Answers उत्तर

1. पृथ्वीराज रासो ।
2. रामचंद्र शुक्ल ।
3. चन्दबरदाई ।
4. सरहपा ।
5. संधा भाषा ।
6. समय ।
7. स्वयंभू ।
8. महावीर प्रसाद द्विवेदी ।
9. स्वयंभू ।
10. 69

Assignment प्रदत्त कार्य

- आदिकाल की नामकरण की समस्या ।
- सिद्ध, जैन, नाथ साहित्य और उसके प्रमुख कवियों का परिचय ।

Self Assesement Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- हिन्दी साहित्य के काल विभाजन की आवश्यकता क्या है ?
- रासो काव्य माने क्या है ?
- सिद्ध कवियों का नाम लिखिए ?
- आदिकालीन साहित्य के मुख्य विशेषताएँ क्या - क्या है ?

इकाई : 5
मुख्य लेखक और उनकी रचनाएँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- आदिकाल की प्रमुख रचनाएँ समझता है ।
- आदिकाल के प्रमुख रचनाकारों का नाम समझता है।
- आदिकालीन साहित्य का परिचय मिलता है।
- आदिकाल के प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ समझता हैं ।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रारंभिक काल को आदिकाल कहते हैं । हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने अपने इतिहास ग्रंथ में इसका नाम वीरगाथा काल रखा है । वीरगाथा काल का अर्थ है, वीर रस प्रधान रचनाएँ । आदिकाल में प्रमुख रूप से अपभ्रंश और हिन्दी रचनाएँ भी प्रचलित है ।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

रासो साहित्य ।
पृथ्वीराज रासो ।
प्रथम महाकवि चंदबरदाई ।
खुसरो की पहेलियाँ ।
श्रृंगारी कवि विद्यापति ।

Discussion / चर्चा

आदिकाल को आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने वीरगाथा काल नाम रखा है । शुक्ल जी ने उस काल में प्राप्त 12 ग्रंथों के आधार पर प्रारंभिक काल को वीरगाथा काल नाम दिया था। इनमें चार अपभ्रंश रचना और 8 हिन्दी रचनाएँ भी हैं ।

1.5.1 अपभ्रंश रचनाएँ

1. विजयपाल रासो
2. हम्मीर रासो
3. कीर्ति लता
4. कीर्ति पताका

1.5.2 हिन्दी रचनाएँ

1. खुसरो की पहेलियाँ - अमीर खुसरो।
2. खुमान रासो - दलपति विजय।
3. बीसलदेव रासो - नरपति नाल्ह ।
4. पृथ्वीराज रासो - चंदबरदाई ।
5. परमाल रासो - जगनिक ।
6. जय चंद्र प्रकाश - शारंगधर
7. जयमयकांजसचंद्रिका - मधुकर कवि
8. विद्यापति पदावली - विद्यापति ।

1.5.3 आदिकालीन प्रसिद्ध ग्रन्थ

- संदेश रासक - अब्दुल रहमान (10 वीं सदी की वियोग श्रृंगार प्रधान रचना।)
- पाउम चरिउ - स्वयंभू (14 वीं सदी की उच्च कोटि की रचना।)
- भविस्सयत कहा - धनपाल (14 वीं सदी की उच्च कोटि की कृति ।)

- परमात्मा प्रकाश - जोईंदू (आध्यात्मिक रचना।)
- पाहूड दोहा - मुनीराम सिंह (रहस्यवादी रचना।)
- बौद्धगान और दोहा संकलन - सरहपा (आदि सिद्ध कवि।)

हिन्दी साहित्य के आदिकाल का जन्म वीरों और तलवारों के बीच हुआ था। इसलिए वीरगाथा काल या आदिकाल का साहित्य युद्ध साहित्य होना स्वाभाविक है। आचार्य शुक्ल जी के मत में वीरगाथाओं की रचना दो रूपों में मिलती है :-

प्रबंध काव्य रूप में और वीर गीतों के रूप में।

इन रचनाओं में श्रृंगार और वीर रस का चित्रण दिखाई पड़ता है ।

ऐसी रचनाओं में मुख्य रूप से निम्नलिखित बातें दिखाई जाती है :-

- किसी राजा की शौर्य की गाथा ।
- किसी प्रेम कथा का वर्णन ।
- युद्ध वर्णन ।

प्रबंध काव्य के रूप में उपलब्ध सबसे प्राचीन ग्रंथ 'पृथ्वीराज रासो' है । 'बीसलदेव रासो' वीर गीत के रूप में उपलब्ध प्राचीन ग्रंथ है ।

- दलपतिविजय
- नरपतिनाल्ह
- चंदबरदाई
- भट केदार
- शारंगधर
- जगनिक
- खुसरो
- मधुकर आदि प्रमुख कवि है।

1.5.4 आदिकालीन हिन्दी का प्रमुख जैन कवि और उनक `साहित्य :-

आदिकालीन जैन - साहित्य की रचनावधि ईसा की दसवीं शताब्दी से मानी जाती है । इसमें अत्यंत उच्चकोटि का साहित्य सर्जन हुआ है । अतएव इस साहित्य का महत्व केवल जैनधर्म के प्रतिपादन की दृष्टि से ही नहीं, भाषा विज्ञान की दृष्टि से भी है ।

1. पाउम चरिउ – स्वयंभू (14 वीं सदी, उच्चकोटि की रचना।)
2. रिट्ठणेमि चरिउ - स्वयंभू (इसमें हरिवंश पूराण का वर्णन है।)
3. महापुराण, जसहर चरिउ, जयकुमार चरिउ - पुष्पदन्त (पुष्पदन्त का एक 'अभिमान मेरू' भी मिलता है।)
4. करकण्ड चरिउ - मुनि कनकामर ।
5. सून्दसण चरिउ - नयनन्दि मुनि ।
6. णेमिणाईचरिउ - हरिभद्र सूरि ।
7. नेमिनाथ चरिउ - विनय चन्द्र सूरि ।
8. भविस्सयत कहा - धनपाल ।
9. भरत बाहुबलि रास - शालिभद्र सूरि ।

1.5.5 सिद्ध कवि और उनके प्रमुख कवि

सिद्ध कवियों की परंपरा सातवीं शताब्दी से लेकर तेरहवीं शताब्दी तक मानी जाती है । ऐतिहासिक दृष्टि से इन कवियों की परंपरा बौद्ध धर्म के विकृत रूप के अन्तर्गत आती है। सिद्धों न प्रतीकात्मक भाषा को अपनाया, वह 'सन्ध्या' भाषा कहलायी।

सिद्धों में सरहपा शबरपा, लूईपा, गूण्डरिपा कुक्कूरिपा, कण्हपा, डोम्बिप्पा विणापा, दाणिपा, भादपा, धामपा आदि प्रमुख है ।

विद्यापति

विद्यापति आदिकाल और भक्तिकाल के बीच की कडी है। वे एक महान पण्डित थे। उन्होंने अपनी रचनाएँ संस्कृत, अवहट्ट और मैथिली भाषा में लिखी है ।

अवहट्ठ - कीर्ति लता, कीर्ति पताका ।

मैथिली - पदावली

संस्कृत - शैव सर्वस्वसार, वर्ण कृत्य, गया पत्तलक आदि।

हिन्दी साहित्य के आदिकाल विषय वैविध्यता, कथ्य, शिल्प और अनेक कवियों के योगदान की दृष्टियों से पर्याप्त संपन्न है। इस साहित्य की अनेक परंपराएँ और शैलिगत विशेषताएँ परवर्ती हिन्दी काव्य में पल्लवित और पुष्पित हूई ।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

रासो काव्य, प्रबंध और गीतों की रचना।

हिन्दी साहित्य का पहला कवि और पहला महाकाव्य।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

आदिकालीन हिन्दी साहित्य वीर गीत काव्यों और प्रेम कथाओं में समाहित है। हिन्दी साहित्य के आदिकाल का जन्म वीरों और तलवारों के बीच हुआ था। सभी रचनाओं में श्रृंगार और वीर रस का चित्रण दिखाई पड़ता है ।

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी साहित्य का आदिकाल ।
- वीरता प्रधान रचनाएँ ।
- अपभ्रंश और हिन्दी रचनाएँ ।
- रासो काव्य की श्रेष्ठता ।
- हिन्दी साहित्य का पहला महाकाव्य ।
- हिन्दी साहित्य का पहला कवि ।
- खुसरो की पहेलियाँ ।
- प्रमुख लेखक।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. नरपति नाल्ह की रचना का नाम क्या है?
2. पृथ्वीराज रासो के रचयिता कौन है ?
3. जगनिक द्वारा लिखा गया रासो काव्य क्या है ?
4. आदिकालीन आध्यात्मिक रचना का नाम लिखिए ?
5. पाहूड दोहा के रचयिता कौन है ?
6. सर्वाधिक चरित काव्य किस साहित्य के अंतर्गत लिखे गये है ?
7. संदेश रासक किस प्रकार की रचना है ?
8. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार हिन्दी का प्रथम महाकाव्य कौन है ?

Answers उत्तर

1. बीसलदेव रासो ।
2. चंदबरदाई ।
3. परमाल रासो या आल्हा खंड ।
4. संदेश रासक - अब्दुल रहमान ।
5. मुनीराम सिंह ।
6. जैन साहित्य ।
7. विरह काव्य।
8. चंदबरदाई ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- आदिकाल की प्रमुख रचनाएँ और उनके लेखक

Self Assesement Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- हिन्दी साहित्य के आदिकाल की प्रमुख रचनाएँ - क्या क्या है ?
- प्रमुख रासो काव्य का नाम क्या-क्या है ?
- आदिकालीन अपभ्रंश रचनाओं का नाम लिखिए ?

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई : 6

प्रारंभिक हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ और शैलियाँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्राचीन और मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के वर्गीकरण के बारे में जानकारी मिलता है ।
- हिन्दी साहित्य के इतिहास के मुख्य प्रवृत्तियाँ समझता है।
- रासो साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियों से परिचय प्राप्त होता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

काल विभाजन किसी युग विशेष में प्राप्त होने वाली रचनाओं की समान प्रवृत्ति विशेष के आधार पर किया है । आदिकाल के रचनाओं की विशेष प्रवृत्ति के अनुसार ही इसका नामकरण किया गया है। आदिकाल की विशेष प्रवृर्ति के वर्णन के आधार पर उसका नामकरण हुआ है ।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

वीर रस प्रधान प्रवृतियाँ ।
अपभ्रंश भाषा की रचनाएँ ।
वीर और श्रृंगार रस प्रधान रचनाएँ ।

Discussion / चर्चा

हिन्दी साहित्य के प्रारंभिक काल में, वीर गाथाओं का युग राजनीतिक दृष्टि से पतनोन्मुख, सामाजिक दृष्टि से दीन हीन तथा धार्मिक दृष्टि से क्षीण काल है। इस काल में जहाँ एक ओर जैन, नाथ और सिद्ध साहित्य का निर्माण हुआ वहाँ दूसरी ओर राजस्थान में चारण कवियों द्वारा चरित काव्य भी रचे गये है।

1.6.1 प्रारंभिक हिन्दी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

संदिग्ध रचनाएँ ।

प्रारंभिक काल के प्रायः सभी रचनाओं की प्रामाणिकता संदेह की दृष्टि से देखी जाती है ।

ऐतिहासिकता का अभाव ।

प्रारंभिक काल के साहित्य में इतिहास की अपेक्षा कल्पना का बाहुल्य है ।

युद्धों का सजीव वर्णन ।

प्रारंभिक काल के रचनाओं में युद्ध का वर्णन प्रमुख विषय है। युद्ध का वर्णन अत्यंत मूर्तिमान बिम्बग्राही रूप से हुआ है।

संकुचित राष्ट्रीयता ।

चारण कवियों ने अपने आश्रयदाता की प्रशंसा मुक्त कंठ से किया है। आजीविका प्राप्ति के लिए उसे अधिकारी राजाओं एवं सामंतों की प्रशंसा की है।

वीर और श्रृंगार रस ।

प्रारंभिक काल के साहित्य में वीर तथा श्रृंगार रस का सम्मिश्रण है ।

प्रकृति चित्रण ।

प्रारंभिक काल के साहित्य में प्रकृति का आलंबन और उद्दीपन दोनों रूपों में चित्रण मिलता है ।

रासो ग्रन्थ ।

प्रारंभिक काल के सभी ग्रंथों के नाम के साथ रासो शब्द जुड़ा हुआ है जो कि काव्य शब्द का पर्यायवाची है ।

काव्य के दो रूप

प्रबंध और मुक्तक ।

जन जीवन से संपर्क नहीं ।

प्रारंभिक काल के साहित्य में सामंती जीवन उभर कर आया है । इनके जीवन के साथ कोई संबंध नहीं है ।

छन्दों का विविध मुखी प्रयोग ।

छन्दों का जितना विविधमुखि प्रयोग इस साहित्य में हुआ है उतना इसके पूर्ववर्ती साहित्य में नहीं हुआ । दोहा, तोटक, तोमर, गाथा, गाहा आदि छन्दों का प्रयोग बडी कलात्मकता के साथ किया गया है ।

डिंगल और पिंगल भाषा का प्रयोग ।

प्रारंभिक काल के साहित्य की एक अन्य उल्लेखनीय विशेषता है डिंगल भाषा का प्रयोग । प्रारंभिक काल के समय की अपभ्रंश साहित्यक भाषा पिंगल के नाम से अभिहित की जाती है ।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

वीरता प्रधान रचनाएँ
वैविध्य पूर्ण छन्द
दोहा- चौपाई का अधिकाधिक प्रयोग
यत्र-तत्र प्रकृति चित्रण

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

आदिकालीन साहित्य इतिहास तथा साहित्य दोनों दृष्टि से महत्व है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से यह साहित्य अत्यंत उपादेय है। इसमें वीर तथा श्रृंगार रस का सुंदर परिपाक बन पड़ा है । निसंदेह इन ग्रन्थों में अतिरंजना पूर्ण शैली के प्रयोग से इतिहास दब-सा गया है।

Recap / पुनरावृत्ति

- प्रारंभिक रचनाओं की प्रामाणिकता पर सन्देह ।
- इतिहास से ज़्यादा कल्पना का प्रयोग ।
- युद्धों का चित्रण ।
- आश्रयदाताओं की प्रशंसा ।
- काव्य में मुक्त छन्दों का प्रयोग ।
- वीर रस की प्रधानता ।
- श्रृंगार रस का प्रयोग ।
- प्रबन्ध और मुक्तक काव्यों का महत्व ।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रासो काव्य किस काल के अंतर्गत आते हैं ?
2. आदिकालीन साहित्य की मुख्य प्रवृत्ति क्या है ?
3. शुकल जी द्वारा दिया गया आदिकाल के समय सीमा क्या है?
4. शुक्ल जी के मत में 'रासो' शब्द का अर्थ क्या है?
5. अपभ्रंश के वाल्मीकि कौन है ?
6. 'अपभ्रंश के भवभूति' किसे माना जाता है ?
7. पृथ्वीराज रासो के सर्ग को कहा गया है .....?
8. आदिकाल के कौन सा ग्रंथ सर्वाधिक विवाद रहा है ?

Answers उत्तर

1. आदिकाल ।
2. वीरता प्रधान रचनाएँ ।
3. 1050 - 1375 ई ।
4. रसायन ।
5. स्वयंभू ।
6. पुष्पदंत ।
7. समय ।
8. पृथ्वीराज रासो ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- आदिकालीन साहित्य की विशेषताएँ ।

Self Assesement Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- आदिकालीन साहित्य की मुख्य प्रवृतियाँ क्या-क्या है ?
- आदिकालीन रचना में वीर और श्रृंगार रस की प्रधानता ।
- आदिकालीन साहित्य की मुख्य विशेषता क्या क्या है ?

Reference Books सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल ।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास - संपादक डॉ .नगेन्द्र ।
3. हिन्दी साहित्य का आदिकाल - डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
4. हिन्दी साहित्य उद्‌भव और विकास - हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ।
5. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह
6. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास - विश्वनाथ त्रिपाठी

E- Content ई : सामग्री

1. https://hi.wikipedia.org/wiki/आदिकाल

BLOCK - 02

वीरगाथा साहित्य एवं प्रमुख रचनाएँ।

इकाई : 1

वीरगाथा साहित्य की विशेषताएँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- वीरगाथा साहित्य की विशेषताएँ समझता है ।
- वीरगाथा काल के कवियों के बारे में समझता है ।
- वीरगाथा काल के ऐतिहासिक परिस्थिति समझता है ।
- वीर- रस प्रधान रचनाओं के परिचय प्राप्त होता है ।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

आदिकाल हिन्दी साहित्य के आरम्भिक काल है । डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने इस काल को आदिकाल संज्ञा दिया है। लेकिन आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने अपने इतिहास ग्रंथ में इस काल का नाम 'वीरगाथा काल' रखा है । वीरगाथा का अर्थ है, वीरता की कहानियाँ । इस काल के समय सीमा को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने संवत् 1050 से लेकर संवत् 1375 तक मानी है। इस समय रासो साहित्य, सिध्द साहित्य, जैन साहित्य और नाथ साहित्य मिलता है और मुक्तक रचनाएँ भी मिलती है। वीरगाथा काल के अधिकांश कवियों ने अपभ्रंश भाषा को मुख्य भाषा बनाया है। इस काल के कवियों ने वीर रस एवं श्रृंगार रस को प्रधानता दिया है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

वीर -रस प्रधान रचनाओं की बहुलता ।
वीर और श्रृंगार रस की प्रधानता ।
रासो काव्य की श्रेष्ठता ।
काव्य में राष्ट्रीय भावना का अभाव ।
अपभ्रंश भाषा को साहित्यक भाषा के रूप में प्रयोग ।
पहला महाकाव्य पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता के बारे में मतभेद ।

Discussion / चर्चा

आचार्य शुक्ल जी ने आदिकाल को 'वीरगाथा काल' नाम दिया। शुक्ल जी ने बताया था कि जिस कालखंड के भीतर किसी विशेष ढंग की रचनाओं की प्रचुरता दिखाई पडी है, वह एक अलग काल माना गया है, और उसका नामकरण उन्हीं रचनाओं के अनुसार किया गया है । शुक्ल जी ने उस काल में प्राप्त बारह (12) ग्रंथों के आधार पर प्रारंभिक काल को वीरगाथा काल नाम दिया था । इनमें चार (4) अपभ्रंश रचनाएँ और आठ (8) हिन्दी रचनाएँ भी है ।

2.1.1 आदिकालीन वीरगाथात्मक रचनाओं की प्रमुख प्रवृत्तियाँ:-

ऐतिहासिकता का अभाव

वीरगाथा काल के कवियों ने अपने आश्रयदाताओं का वर्णन किया है । वे अपनी कल्पना के बल से अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन किया है। इसलिए इसमें ऐतिहासिक तथ्य एवं सत्यता की कमी है । इन कवियों के काव्यों के नायक ऐतिहासिक है । लेकिन घटनाओं के क्रम, विभिन्न नामावली, संवत् तथा तिथियाँ आदि बात संदिग्ध है। ऐतिहासिकता का अभाव 'वीरगाथा काल' के कृतियों में स्पष्ट दिखाई देता है।

आश्रयदाताओं की प्रशंसा

वीरगाथाकालीन साहित्य के अधिकांश कवि राजाश्रित थे। वे अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा करते थे । इससे इन्हें मान एवं धन की प्राप्ति होती थी। इस काल के कवियों ने आश्रयदाताओं का भावनापूर्ण तथा अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन किया है। कवियों ने अपने-अपने राजाओं को देवी-देवताओं से भी श्रेष्ठ बताया है। स्पष्ट मालूम होता है कि इन कवियों ने अपनी आमदनी तथा स्वार्थता हेतु अपने आश्रयदाताओं की झूठी प्रशंसा की है। कवियों ने राजाओं की धर्म-कर्म वीरता, शौर्य, प्रसिध्दि, ऐश्वर्य आदि का आश्चर्य चकित वर्णन किया है।

संदिग्ध रचनाएँ

वीरगाथा काल के रासो ग्रंथों में मुख्यतः सत्यता का अभाव दृष्टिगोचर है । इसमें कालक्रम, रचना काल, घटनाक्रम आदि में संदिग्धता दिखाई देती है।

कवियों ने भावना तथा अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन रीति स्वीकार किया है। इसमें भाषा, प्रसंगों, पात्रों तथा संवत तिथियों में गलती पायी जाती है। इसलिए वीरगाथाकाल के कृतियों को संदिग्ध रचनाएँ कहा जाता है।

पृथ्वीराज रासो

वीरगाथाकाल की प्रमुख रचना 'पृथ्वीराज रासो' है। यह पृथ्वीराज चौहान के चरित्र पर आधारित है । इसके रचयिता कवि चंदबरदाई है । विद्वानों के मत में इसमें समय -समय पर परिवर्तन हुआ है । इसलिए पृथ्वीराज रासो को आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ.रामकुमार वर्मा, डॉ.सुनितिकुमार चाटर्जी जैसे विद्वान अप्रामाणिक रचना मानते है। इसे कुछ विद्वानों अर्धप्रामाणिक मानते है। डॉः श्याम सुन्दनरदास, डॉ विपिन कुमार आदि विद्वानों ने प्रामाणिक माना, वैसे वीरगाथा काल के बीसलदेव रासो, विजयपाल रासो, परमाल रासो, खुमान रासो, हम्मीर रासो आदि रासो ग्रंथ भी संदिग्ध माने जाते हैं ।

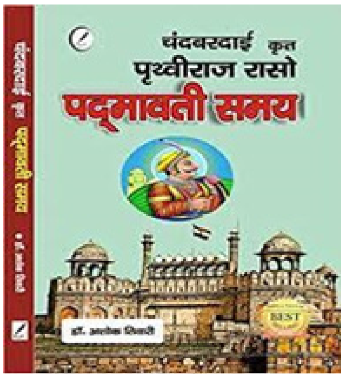

संकुचित राष्ट्रीयता

वीरगाथाकालीन रचनाओं में राजाओं की वीरता एवं युद्धों का वर्णन अधिकांश पाया जाता है। इसमें राष्ट्रीयता का पूर्ण रूप से अभाव देखने को मिलता है । उस काल में कुछ गाँव, कुछ प्रांत अथवा छोटे-छोटे राज्यों को ही राष्ट्र माना जाता था। वहाँ के राजाओं अपना सम्राट मानते थे। इन राजाओं के बीच कारण-अकारण समय-असमय पर युद्ध होते थे । युद्ध का मुख्य कारण सुंदरियाँ, राज्य विस्तार, धन प्राप्ति आदि है। मालूम होता है कि इस काल के राजा तथा उनके कवि पूरे भारत को एक राष्ट्र नहीं मानते थे। इसलिए वीरगाथा काल के कवियों के रचनाओं में संकुलित एवं स्वार्थपरता पूर्ण राष्ट्रीयता दृष्टिगोचर हैं ।

युद्धों का वर्णन

वीरगाथा काल में छोटे-छोटे राज्य के राजा समय-समय पर युद्ध करते थे। कभी-कभी युद्ध में आश्रयदाता राजाओं के साथ कवि भी तलवार लेकर युद्ध में उतरते थे। तात्पर्य यह है कि कवियों ने युद्धों को अपनी आँखें से देखा था। इसी कारण इन कवियों ने सेना-बल, युद्ध सामग्री, योद्धाओं के भाव, उत्साह-निरुत्साह आदि तथा विविध मानसिक दशाओं का सजीव वर्णन किया है। युद्ध प्रसंगों में कवियों ने कल्पना को स्वीकारा है। हिन्दी साहित्य के वीरगाथा काल में युद्धों का आँखों देखा जितना वर्णन मिलता है उतना और किसी काल में नहीं मिलता है । ऐसे प्रसंगों में वीर मुख्य रस बना है तथा अतिशयोक्ति अलंकार उसका सहचर हुए है।

प्रकृति चित्रण

वीरगाथा काल के साहित्य में युद्धों एवं सुंदरियों का वर्णन ही प्रचुर होने से प्रकृति चित्रण नाम मात्र हो गया है। इस काल के कृतियों में प्रकृति के विभिन्न रूपों का वर्णन नहीं पाया जाता है । इन काव्यों में यत्र-तत्र प्रकृति चित्रण मिलता है। किन्तु यह चित्रण आलम्बन तथा उद्दीपन रूपों में ही है। पृथ्वीराज रासो में नगर, नदी, पर्वत उपवन आदि का वर्णन काफी मनोरम है। कहीं-कहीं राज्य, नगर, पंछी आदि का वर्णन हुआ है। प्रकृति चित्रण सामान्यतः नीरस और उबाऊ है ।

आश्रयदाताओं की अतिशयोक्ति पूर्ण प्रशंसाः -

वीरगाथा काल की कवियों के मुख्य उद्देश्य राजाश्रय पाना था। इसके लिए वे राजाओं की झूठी प्रशंसा करते थे। इसी कारण इस काल का रासो साहित्य दरबारी साहित्य मान्- ा जाता है। अपने आश्रयदाताओं को प्रसन्न करने केलिए वह वास्तविक और अवास्तविक सभी प्रकार की घटनाओं

का वर्णन करता था। इन अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णनों का केन्द्र आश्रयदाता ही हुआ करता था ।

किसी भी कवि की दृष्टि सामान्य जन जीवन पर नहीं पड़ी। यही कारण वीरगाथा काल की रचनाएँ जन जीवन से दूर रहे।

डिंगल एवं पिंगल भाषा का उपयोग

वीरगाथाकालीन कृतियों में राज्यस्थानी मिश्रित अपभ्रंश- डिंगल भाषा का ज्यादा प्रयोग हुआ है। पृथ्वीराज रासो, परमाल रासो, बीसलदेव रासो, खुमान रासो आदि इस काल के रासो ग्रंथ में डिंगल भाषा का उपयोग ज़्यादा पाया जाता है। इसका यह भी कारण होगा कि वीर रस के सख्त भावों को व्यक्त करने के लिए डिंगल भाषा समुचित होता था। डिंगल को उँचे स्वर में पढ़ना पड़ता था। वीरगाथा काव्यों की भाषा प्रमुख रूप से डिंगल है तथापि कवियों ने पिंगल भाषा का प्रयोग भी किया है ।

काव्यों के दो रूप

आदिकालीन या वीरगाथाकालीन काव्य कृतियों में दो रूप देखने को मिलते हैं। पहला प्रबंध काव्य है, जिसके अंतर्गत महाकाव्य तथा खंडकाव्य आते हैं। दुसरा रूप मुक्तक काव्य है। यह कथा विरहित तथा अल्प स्वरूप का होता है। प्रबंध काव्य या महाकाव्य में सर्ग या अध्याय होते है। वीरगाथा कालीन महाकाव्य पृथ्वीराज रासो में 69 समय (अध्याय) है। बीसलदेव रासो मुक्तक काव्य हैं। इसमें कथा निर्वाह अवश्य है, किन्तु इसकी प्रकृति मुक्तक काव्य का है ।

कल्पना की विविधता

आदिकालीन या वीरगाथाकालीन काव्य कृतियों में ऐतिहासिकता कम है, कल्पनाशीलता अधिक लगता है। सभी कवियों ने ऐतिहासिक व्यक्ति को पात्र तो लिए है, किंतु बाकी काल्पना के अनुसार किया है। इसलिए काल का धड़कन समझने को असमर्थ हो जाता है ।

वीर तथा श्रृंगार रस

वीरगाथाकालीन साहित्य में वीर तथा श्रृंगार रस मुख्य रही है। युद्ध वर्णनों के प्रसंगों में वीर रस भारी मात्रा में पाया जाता है। वीर रस के साथ भयानक, अद्भुत, वीभत्स रासों का सुन्दर परिपाक मिलता है। इनके साथ ही ये कवि अपने आश्रयदाता के विलासी जीवन को उद्दीप्त करने केलिए श्रृंगार रस के वर्णन भी खूब करते थे। चारण कवियों ने सुंदरियों का रूप वर्णन, नखशिख वर्णन, संयोग एवं वियोग वर्णन का सहारा लिया है। युद्ध के समय वीर और शान्ती के समय श्रृंगार इन कवियों के मुख्य रस थे । चारण काव्य और मैथिल कोकिल विद्यापति की 'पदावली', 'कीर्ति लता' आदि में श्रृंगार रस की आधिक्य दिखाई देती है।

छंदों का प्रयोग

वीरगाथा काल में बहुत से छन्दों के सम्यक प्रयोग मिलता है। आदिकाल या वीरगाथा काल के रासो साहित्य में दोहा, गाथा, रोला, तोमर, तोटक, कुण्डलिया, उल्लाला, साटक, आर्या जैसे विभिन्न छंदों का उपयोग हुआ है। छंदों की बहुलता दिखाई देने वाली एकमात्र रचना पृथ्वीराज रासो है। पृथ्वीराज रासो में 68 छन्दों का प्रयोग मिलता है। पृथ्वीराज रासो में तो भावों के अनुकूल छन्द विधान हैं।

अलंकारों का समावेश

वीरगाथाकालीन साहित्य में अलंकारों का उपयोग बड़ी मात्रा में पाया जाता है। इस काल के कवियों ने अतिशयोक्ति, उत्प्रेक्षा, यमक, उपमा, रूपक, वक्रोक्ति, अनुप्रास आदि अलंकारों का अच्छा उपयोग किया है।

काव्य शैली

वीरगाथाकालीन काव्य में विविध प्रकार के नृत्य, गीत एवं अभिनय के चित्रण मिलते थे। इसलिए इसमें रासो शैली के सिवा फागु काव्य शैली भी दिखाई देती है। इस काल के कुछ रचनाएँ प्रबंधात्मक है तो और कुछ मुक्तक शैली में मिलती है। उपदेश-रसायन-रास, भरतेश्वर-बाहुबली रास, चंदनबाला रास, रेवंतगिरीरास आदि गीत नृत्यपरक रचनाओं के अंतर्गत आते हैं।

वीरगाथात्मक काव्य परंपरा का विकास परवर्ती हिन्दी साहित्य में हूआ। मध्यकाल में पृथ्वीराज राठौड़, दुरसाजी, बांकीदास, सूर्यमल्ल मिश्रण आदि की रचनाएँ डिंगल भाषा में वीरगाथाएँ ही प्रस्तुत करती है ।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

वीरगाथा काल नामकरण की समस्या ।

वीर और श्रृंगार रस की बहुलता ।

राष्ट्रीय भावना का अभाव ।

रचनाओं के प्रामाणिकता और अप्रमाणिकता संबन्धित मतभेद।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

आदिकालीन या वीरगाथाकालीन रचनाओं में जनजीवन का चित्रण दिखाई नहीं देता है । काव्य में प्रजा के

लिए स्थान नहीं है, राजा का स्थान सर्वोपरि है। इस समय के काव्यों में राजाओं की प्रशंसा तथा सुंदरियों का श्रृंगार वर्णन प्रबल है। मुख्य रस वीर तथा श्रृंगार है। इस समय काव्य मुख्यतः प्रबंधात्मक तथा मुक्तक रूप में दिखाई देता है। कवियों ने डिंगल-पिंगल भाषा का प्रयोग किया है। वीरगाथाकालीन काव्य में छंद और अलंकारों की विविधता पायी जाती है । कल्पना की व्यापकता इस काल के कृतियों में दृष्टिगोचर होती है।

Recap / पुनरावृत्ति

- प्रारंभिक काल की समय-सीमा ई 1050- ई 1375 है ।
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने वीरगाथा काल नाम दिया ।
- रचनाओं में वीरता और उत्साह का संचार ।
- आश्रयदाताओं की अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णना, प्रशंसा करना, राजाओं की विलासी जीवन आदि प्रमुख प्रवृत्तियाँ है ।
- वीर और श्रंगार रस का सम्यक प्रयोग ।
- सबसे श्रेष्ठ रचना चन्दबरदाई की 'पृथ्वीराज रासो' मानी जाती है ।
- छन्द वैविध्य (दोहा, दूहा, गाथा, रोला...)
- राष्ट्रीय भावना का अभाव ।
- प्रकृति चित्रण ।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रारंभिक काल को आचार्य शुक्ल जी ने क्या नाम दिया ?
2. प्रारंभिक काल का श्रेष्ठतम रचना क्या है ?
3. प्रारंभिक काल के रचनाओं में प्राप्त प्रमुख रस क्या है?
4. एक मुक्तक काव्य का नाम लिखिए ?
5. 'कयामत वध' किस ग्रंथ की प्रमुख घटना है ?
6. अमीर खुसरो का असली नाम क्या था ?
7. आदिकाल को अपभ्रंश काल किसने कहा ?
8. किस ग्रंथ की प्रामाणिकता अब भी संदिग्ध है?

Answers उत्तर

1. वीरगाथाकाल ।
2. चन्दपरदाई कृत पृथ्वीराज रासो ।
3. वीर और श्रृंगार ।
4. बीसलदेव रासो ।
5. पृथ्वीराज रासो।
6. अब्दुल हसन ।
7. धीरेंद्र वर्मा ।

8. पृथ्वीराज रासो ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- वीरगाथाकाल नाम करण की समस्या ।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- प्रबंध और मुक्तक रचनाओं के नाम लिखिए ?
- पृथ्वीराज रासो को प्रामाणिक और अप्रमाणिक माननेवालों की नाम लिखिए ?
- वीरगाथाकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ क्या है ?
- रासो काव्य क्या -क्या है ?
- वीरगाथाकाल में प्रयुक्त प्रमुख छन्दों का नाम लिखिए ?

इकाई : 2

वीरगाथाकाल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- वीरगाथात्मक रचनाओं के बारे में समझता है ।
- वीरगाथात्मक रचनाओं के प्रमुख लेखकों का परिचय प्राप्त होता है ।
- पृथ्वीराज रासो का परिचय प्राप्त होता है ।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

वीरगाथा काल की रचनाओं के प्रमुख विषय हैं, राजाओं के शौर्य प्रदर्शन, युद्धों का सजीव वर्णन, अपने राज्य के विस्तार और आक्रमणों के सामना करने की प्रवर्ति । इस समय की रचनाओं में अपभ्रंश और देशी भाषाओं के प्रयोग भी देख सकते हैं ।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

वीररस प्रधान रचनाएँ ।
रासो साहित्य ।
युद्ध वर्णन ।
शौर्य प्रदर्शन ।
आश्रयदाताओं की प्रशंसा ।

Discussion / चर्चा

आचार्य शुक्ल ने प्रारंभिक काल में वीरगाथाओं की प्रमुखता को ध्यान में रखकर इसे वीरगथा काल के नाम से अभिहित किया गया। शुक्ल जी ने उस काल में प्राप्त बारह (12) वीरगाथात्मक ग्रंथों के आधार पर प्रारंभिक काल को 'वीरगाथा काल' नाम दिया था । उक्त काल के भीतर दो प्रकार की रचनाएँ मिलती हैं :-

2.2.1 अपभ्रंश और देशी भाषा (बोलचाल) की ।

अपभ्रंश की रचनाएँ :-

1. विजयपाल रासो ।
2. हम्मीर रासो ।
3. कीर्तिपताका ।
4. कीर्तिलता ।

देशी भाषा काव्य की आठ पुस्तकों का नाम :-

1. खुमान रासो ।
2. बीसलदेवरासो ।
3. पृथ्विराजरासो ।
4. जयचन्द्रप्रकाश ।
5. जयमयंक जस चन्द्रिका ।
6. परमाल रासो ।
7. खुसरो की पहेलियाँ ।
8. विद्यापति कृत पदावली ।

2.2.2 वीरगाथात्मक प्रमुख रचनाएँ:-

1. चंदबरदाई कृत पृथ्वीराज रासो ।
2. जगनिक कृत परमाल रासो ।
3. नल्लसिंह कृत विजयपाल रासो ।
4. दलपति विजय कृत खुमाण रासो।
5. नरपतिनाल्ह कृत बीसलदेव रासो ।

6. शारङ्धर कृत हम्मीर रासो ।
7. मधुकर कृत जयमयकं जस चन्द्रिका ।
8. भटकेदार कृत जयचंद्रप्रकाश ।
9. अब्दुरहमान कृत सन्देशरासक ।
10. विद्यापति की पदावली ।
11. अमीरखुसरो की पहेलियाँ ।

▶ **खुमान रासो : दलपति विजय**

इसमें चित्तौड़ के राजा खूमाण द्वितीय का वर्णन है । रचना वीररस प्रधान है । गाथा और चौपाई छंद का प्रयोग हुआ है । खुमाण रासो आज उपलब्ध है ।

▶ **बीसलदेव रासो - नरपति नाल्ह**

इसके रचयिता नरपति नाल्ह है। बीसलदेव रासो की कथा चार खंडों में विभाजित है। अजमेर के चौहान राजा बीसलदेव और भोज परमार की पुत्री राजमती का विवाह, विरह और पुनर्मिलन की कहानी है । बीसलदेव रासो नृत्य गीत प्रधान है ।

▶ **पृथ्वीराज रासो : चंदबरदाई**

पृथ्वीराज रासो हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है। इसके रचयिता हिन्दी के प्रथम महाकवि चंदबरदाई है। कहा जाता है कि पृथ्वीराज के साथ ही चंदबरदाई का जन्म और मृत्यु हुई है। चंदबरदाई दिल्ली के महाराज पृथ्वीराज के राज कवि ही नहीं उनके सामंत और सेनापति भी था । पृथ्वीराज रासो ढाई हजार पृष्ठों का बड़ा ग्रन्थ है। प्राचीन काल में प्रचलित सभी छन्दों का प्रयोग उसमें किया गया है।

▶ **आल्हा खंड/ परमाल रासो - जगनिक**

'परमाल रासो' के रचयिता है जगनिक। जगनिक महोबा के शासक परमाल के दरबारी कवि थे । इसमें आल्हा और ऊदल के वीर चरित्रों का वर्णन किया गया है । आल्हा और ऊदल राजा परमाल के सामंत थे, क्षेत्रीय भी थे। यह वीर गीतात्मक काव्य है।

▶ **विजयपाल रासो - नल्लसिंह भट्ठ**

'विजयपाल रासो' नल्लसिंह की रचना है। इस ग्रंथ में करावली के राजा विजयपाल के युद्धों का वर्णन है। इसकी भाषा ओजस्विनी है।

▶ **हममीर रासो : शारंग्धर**

'हममीर रासो' शारंग्धर की रचना है। इसमें अलाउद्दीन के साथ राजा हम्मीर के भयंकर युद्ध का वर्णन है ।

▶ **जयचन्द्र प्रकाश : भटकेदार**

जिस प्रकार चंदबरदाई ने महाराज पृथ्वीराज को कीर्तिमान बनाया था, उसी प्रकार भटकेदार ने कनौज के साम्राट जयचंद्र का गुण गाया । भटकेदार ने 'जयचंद्र प्रकाश' के नाम एक महाकाव्य लिखा । जिसमें जयचंद्र के प्रताप और पराक्रम का विस्तृत वर्णन था । यह आज उपलब्ध नहीं है ।

▶ **जयमयंक जसचन्द्रिका : मधुकर**

कवि मधुकर ने जयमयंक जसचन्द्रिका नामक ग्रंथ लिखा था । यह भी आज उपलब्ध नहीं है ।

▶ **खुसरो की पहेलियाँ : अमीर खुसरो ।**

अमीर खुसरो बडे विनोदी और सह्यदय व्यक्ति थे। जन जीवन के साथ खुल मिलाकर काव्य रचना करनेवाले कवियों में खुसरो का महत्वपूर्ण स्थान है । इन्होने जनता के मनोरंजन के लिए पहेलियां लिखी थी। आदिकाल में खडीबोली को काव्य की भाषा बनाने वाला पहले कवि अमीरखुसरो माने जाते है ।

▶ **विद्यापति पदावली : विद्यापति**

विद्यापति संस्कृत के महान पंडित थे। 'कीर्ति लता', 'कीर्ति पताका' और 'पदावली' आदि श्रेष्ठ रचनाएँ है।'कीर्ति लता' और 'कीर्तिपताका' की रचना अपभ्रंश भाषा में, पदावली की रचना मैथिली भाषा में है। मधुर गीतों के रचयिता होने के कारण अभिनयजय देव नाम से भी पुकारे जाते हैं। मैथिली भाषा में लिखने के कारण विद्यापति को 'मैथिली कोकिल' कहा जाता है। हिन्दी के आदि गीतकार की उपाधि विद्यापति को ही दे सकते हैं।

आदिकालीन वीरगाथात्मक रचनाएँ हिन्दी साहित्य की समृद्धि के परिचायक हैं, तथा ये काव्यधाराएँ परवर्ती काव्य की पृष्ठभूमि तैयार करती हैं।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

वीर और श्रृंगार रस की प्रचुरता ।
शौर्य प्रदर्शन के लिए युद्ध ।
हिन्दू राजाओं की विवाह संबंधी लोभ वृत्ति ।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

हिन्दी साहित्य का जन्म वीरों और तलवारों के बीच हुआ था। इसलिए वीरगाथकाल का, साहित्य युद्ध साहित्य होना स्वाभाविक है । वीरगाथात्मक रचनाओं में वीर और श्रृंगार रस का चित्रण दिखाई पड़ता है । वीरगाथात्मक रचनाओं में मुख्य रूप से किसी राजा के शौर्य की गाथा, युद्ध वर्णन दिखाई जाती है ।

Recap / पुनरावृत्ति

- आदिकाल में अपभ्रंश भाषा की रचनाएँ उपलब्ध है ।
- 'परमाल रासो' जगनिक की रचना है ।
- 'विजयपाल रासो' नल्लसिंह की रचना है ।
- चन्दबरदाई हिन्दी का प्रथम महाकवि है ।
- 'पृथ्वीराज रासो' हिन्दी का प्रथम महा काव्य है ।
- प्राचीन काल से प्रचलित सभी छन्दों का प्रयोग पृथ्वीराज रासो में देख सकते है ।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. बीसलदेवरासो के रचयिता कौन है?
2. प्रारंभिक काल में किन-किन रूपों में काव्य मिलता है?
3. पृथ्वीराज रासो की विधा क्या है?
4. प्रारंभिक काल की भाषा क्या है?
5. विध्यापति की पदावली की भाषा क्या है?
6. 'मैथिली कोकिल' नाम से विख्यात कवि कौन थे?
7. कीर्तिलता की भाषा क्या थी?
8. अमीर खुसरो की भाषा क्या थी?

Answers उत्तर

1. नरपतिनाल्ह।
2. प्रबंध व मुक्तक।
3. महाकाव्य।
4. डिंगल और पिंगल।
5. मैथिली।
6. विद्यापति।
7. अवहट्ट ।
8. खड़ी बोली ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- वीरगाथकाल और प्रमुख रचनाएँ ।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- वीरगाथाकाल के प्रमुख रचनाकारों के नाम लिखिए ?
- वीर रचनाओं की विशेषताएँ क्या है ?

इकाई : 3
वीरगाथा काल के अन्य कवि

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- वीरगाथाकाल के अन्य प्रमुख कवियों का परिचय प्राप्त होता है ।
- वीरगाथा साहित्य में प्रमुख कवियों का योगदान समझता है ।
- वीरगाथा साहित्य की काव्यगत विशेषताएँ समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

आदिकाल में वीर काव्यों के अतिरिक्त कुछ और काव्य कृतियाँ भी उपलब्ध है। उनको धार्मिक काव्य कह कर साहित्य की मुख्य धारा से बाहर रखा है। वीरगाथा काल की सभी रचनाएँ हिन्दी साहित्य के विकास के आधार भूमि तैयार करती है ।

Keywords / मुख्य बिन्दु

वीर और श्रृंगार रस
युद्ध वर्णन

Discussion / चर्चा

वीरगाथा काल का साहित्य अनेक अमूल्य रचनाओं का सागर है। इतना समृद्ध साहित्य किसी भी दूसरी भाषा का नहीं है, और न ही किसी अन्य भाषा की परंपरा का साहित्य एवं रचनाएँ अविच्छिन्न प्रवाह के रूप में इतना दीर्घ काल तक रहने पाई है।

2.3.1 वीरगाथा काल की मुख्य रचना एवं रचनाकार :-

1. स्वयंभू - पाऊम चरिउ, रिट्ठणेमि चरिउ ।
2. सरहपा - दोहा कोश।
3. सबरपा - चर्यापद ।
4. कण्हपा - कण्हपा गीतिका, दोहा कोश।
5. गोरखनाथ नाथ(नाथपंथ के प्रवर्तक) - सबदी, पद, प्राण, संकली सिष्यादासन।
6. चंदबरदाई - पृथ्वीराज रासो । (शुक्ल के अनुसार हिन्दी का प्रथम महाकाव्य) ।
7. शारंगधर - हम्मीर रासो ।
8. दलपति विजय - खुमाण रासो।
9. जग्निक - परमाल रासो ।
10. नल्लसिंह भट - विजयपाल रासो ।
11. नरपति नाल्ह - बीसलदेव रासो ।
12. अब्दुल रहमान - संदेश रासक।
13. अज्ञात - मुंज रासो।
14. देव सेन - श्रावकाचार।
15. जिन दत्तसूरी - उपदेश रसायन रास।
16. आसुग कवि - चंदनबालारास।
17. जिनधर्मसूरी - स्थूलीभद्र रास।
18. शालीभद्रसूरी - भारतेश्वरबाहुबलिरास।
19. विजय सेन - रेवंत गिरी रास ।
20. सुमितगिण - नेमिनाथ रास।
21. हेमचंद्र - सिद्ध हेमचंद्र, शब्दनुशासन।
22. विद्यापति - पदावली(मैथिली) कीर्तिलता व,कीर्तिपताका (अवहट्ट) लिखनवली (संस्कृत)
23. कल्लोल कवि - ढोला मारू रा दूहा।
24. मधुकर कवि - जयमकांजस जस चंद्रिका ।
25. भटकेदार - जय चंद्र प्रकाश ।

2.3.2 रासो नाम की अन्य रचनाएँ :

1. कलियुग रासो - रसिक गोविंद।
2. कायम खाँ रासो - न्यामत खां जान कवि।
3. राम रासो - समय सुन्दर ।
4. राणा रासो - दयाराम (दयाल कवि)
5. रतन रासो - कुम्भकर्ण।
6. कुमरपाल रासो - देव प्रभ ।

वीरगाथा काल की रचनाएँ और रचनाकार उनके कालक्रम की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है ।

हिन्दी साहित्य के आदिकाल से वज्रायनि सिद्ध कापालिक आदि देश के पूर्वी, भागों में और नाथपंथ जोगी पश्चिमी भागों में रमते चले आ रहे थे ।

2.3.3 प्रमुख जैन कवियों का नाम :-

स्वयंभू : 'अपभ्रंश का वाल्मीकि' ।

रचनाएँ : पउम चरिउ, स्वयंभू छंद, रिट्ठणेमि चरिउ ।

पुष्पदंत : 'अपभ्रंश का व्यास'। 10वीं शताब्दी ।

रचनाएँ : महापुराण, जसहर चरिउ, णयकुमार चरिउ।

धनपाल : 10वीं शताब्दी।

रचना : भविस्सयत कहा ।

इसके अतरिक्त मुनीर राम सिंह कृत पाहूठ दोहा, देवसेन कृत सावयधम्मा दोहा, जोईदू कृत परमात्मा प्रकाश और योग सागर ।

2.3.4 प्रमुख सिद्ध कवियों का नाम : -

सरहपा : दोहा कोश, चर्यापद

लूईपा, शबरपा, डोम्बिपा, तंत्रिपा : चर्यगीत

सिद्ध कवियों की रचनओं में काव्य की दृष्टि से तीन रूप मिलते हैं :-

1. संप्रदाय के सिद्धांतों में से रहस्यात्मक साहित्य। उनकी यह भावना अधिकांश चर्यगीतों में व्यक्त हुई है ।
2. खंडन मंडन प्रधान उपदेशात्मक साहित्य ।
3. आचार तथा नीति प्रधान साहित्य।

2.3.5 नाथ साहित्य के प्रमुख कवियों का नाम :-

- ▶ आदि नाथ शिव है।
- ▶ प्रमुख शिष्य के रूप में मत्स्येंद्रनाथ का नाम आता है ।
- ▶ गोरखनाथ या गोरक्षनाथ।

1. नाथ साहित्य विशुद्ध रूप से योग परक साहित्य है।
2. नाथ कवियों के वाणियों में काव्य सौंदर्य का अभाव है।
3. नाथ कवियोंने गुरु को अधिक महत्त्व दिया है।

वीरगाथा काल में खण्ड काव्य, गीति काव्य, महाकाव्य, ऐतिहासिकता परक लौकिक प्रेम काव्यों, धार्मिक काव्यों, रूपक साहित्य, गद्य साहित्य आदि साहित्य के नाना विधाओं का प्रणयन हूआ है ।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

धार्मिक कवियों की योगदान

काव्यगत विशेषताएँ

वैविध्य पूर्ण भाषा

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

हिन्दी साहित्य के आदिकाल के विकास में जैन, नाथ और सिद्ध कवियों का योगदान है। अपभ्रंश से हिन्दी का विकास होने के कारण जैन साहित्य का हिन्दी पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा।

सामान्य जनता का मन भगवद् भक्ति की स्वभाविक हृदय पद्धति से हटकर अनेक प्रकार के मंत्र, तंत्र और उपाचारों में उलझ गया था । जनता का विश्वास सिद्धियों पर जमने लगा था ।

Recap / पुनरावृत्ति

- ▶ वीरगाथा काल।
- ▶ प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ ।
- ▶ अन्य प्रमुख काव्य क्षेत्र ।
- ▶ धार्मिक काव्य ।
- ▶ जैन, सिद्ध और नाथ।
- ▶ प्रमुख कवि ।
- ▶ काव्यगत योगदान ।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. दो जैन कवियों के नाम लिखिए ?
2. सिद्ध साहित्य के प्रवर्तक कौन है ?
3. नाथ साहित्य की आदि आचार्य कौन है ?
4. वीर साहित्य के प्रमुख कवियों के नाम लिखिए
5. बीसलदेव रासो किस प्रकार की रचना है ?
6. वीरता युक्त रचना खुमान रासो के रचयिता कौन है ?
7. पृथ्वीराज रासो किस प्रकार की रचना है ?
8. हम्मीर रासो के रचयिता कौन है ?

Answers उत्तर

1. स्वयंभू , पुष्पदन्त ।
2. सरहपा ।
3. मत्स्येंद्रनाथ ।
4. चंदबरदाई, दलपति विजय, जगनिक , नरपतिनाल्ह आदि ।
5. प्रेम काव्य ।
6. दलपति विजय ।
7. वीरता युक्त महाकाव्य्य ।
8. शारंगधर ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- वीरगाथा काल के प्रमुख कवि और उनका योगदान ।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- आदिकाल को क्यों वीरगाथा काल नाम दिया है ?
- वीरगाथा काल माने क्या है ?
- वीरगाथा काल की विशेषताएँ एवं क्या - क्या है ?
- वीरगाथा काल के प्रमुख कवियों का नाम लिखिए ?

Reference Books सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल ।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास - संपादक डॉ.नगेन्द्र।
3. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियॉं - डॉ.शिवकुमार मिश्र ।
4. हिन्दी साहित्य का आदिकाल - डॉहजारी प्रसाद द्विवेदी ।

E- Content ई : सामग्री

1. https://hi.wikipedia.org/wiki/आदिकाल

BLOCK - 03

भक्तिकाल और उसकी प्रमुख शाखाएँ

इकाई : 1

भक्तिकाल - सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक पहलू

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भक्तिकाल के समय एवं परिस्थिति से परिचय प्राप्त करता है ।
- भक्तिकाल के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक वातावरण से परिचय प्राप्त करता है ।
- भक्ति काल के भगवत धर्म के प्रचार एवं प्रसार के बारे में समझता है ।
- भक्तिकाल की समृद्ध दार्शनिक वातावरण से परिचय प्राप्त करता है ।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भक्ति काल का आरंभ एक विशेष परिस्थिति में हुआ है । उस समय हिन्दू राजाओं की राजसत्ता नष्ट होने के कारण राज्याश्रयी कवियों का पद भी नष्ट हो गया। इस लिए आजीविका के संकट में भारतवासी भक्ति की ओर प्रेरित हुए। भक्तिकालीन समय में हिन्दू और मुस्लिम संस्कृति एक जुड़ हो गयी ।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

भक्ति काल से तात्पर्य भगवत धर्म के प्रचार एवं प्रसार से है ।
लोक- प्रचलित भाषाएँ भक्ति मार्ग की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में बदल गयी ।
भक्तिकाल की समृद्ध दार्शनिक वातावरण।
समन्वय भावना का प्रदर्शन।
भक्ति काल में सामाजिक-सांस्कृतिक और भाषा संबंधी अभिवृद्धि।

Discussion / चर्चा

3.1.1 राजनीतिक स्थिति

राजनीतिक दृष्टि से देखें तो भक्ति काल उत्तर भारत का शासन तुगलक वंश के आरंभ से लेकर मुगल वंश के शाहजहाँ तक का समय है। तब गोरी वंश का मुहम्मद गोरी ने भारत पर आक्रमण शुरू किया था। चौहान वंशीय सम्राट पृथ्वीराज चौहान, मुहम्मद गोरी के हाथों से मारा गया। परिणामतः दिल्ली सम्राज्य की स्थापना हुई । कुतुबद्दीन ऐबक, मुहम्मद गोरी का उत्तराधिकारी बना । सन् 1290 में भारत में खिलजी वंश की स्थापना हुई । करीब छह वर्ष तक जलालुद्दीन खिलजी का शासन काल रहा था ।

जलालुद्दीन खिलजी की मृत्यु के पश्चात गियासुद्दीन ने तुगलक वंश की स्थापना की । सन् 1451 में लोदी वंश स्थापित हुआ । इसमें लोदी वंश के सुलतान सिकंदर लोदी प्रसिद्ध है। सन् 1525 में बाबर भारत आया । बाबर ने यहाँ के राजा-महाराजाओं को पराजित कर भारत में मुगल वंश की स्थापना की । मुगल काल हिन्दी के भक्ति साहित्य का सुवर्ण काल कहा जाता है। अकबर जैसे मानवीय एवं सुसंस्कृत सम्राटों और सत्ताधारियों ने भक्ति के प्रवाह को अवश्य प्रोत्साहन दिया ।

3.1.2 सामाजिक स्थिति

तत्कालीन सामाजिक जीवन की ओर दृष्टि डालने पर मालूम होता है कि इस समय हिन्दुओं में जाति-चिंता, वर्ण-व्यवस्था, अंधविश्वास आदि बुराइयाँ जोरों पर थीं। हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच सामाजिक-सांस्कृतिक या आर्थिक संपर्क और एकता न थे। इस संदिग्ध स्थिति में दोनों के बीच मेल बनाने के लिए कई कवियों ने लेखनी चलाई। स्पष्ट है कि भक्ति काल की कृष्ण भक्ति धारा में कई भक्त मुसलमान थे।

वैसे नाथों और सिद्धों ने जाति व्यवस्था का विरोध किया। यह भी नहीं, इस समय यहाँ के व्यापार-व्यवसाय का फैलाव देश-देशांतर में हुआ जिससे सामाजिक-सांस्कृतिक और भाषा संबंधी अभिवृद्धि अवश्य हुई ।

3.1.3 सांस्कृतिक स्थिति

समन्वयात्मकता भारतीय संस्कृति की सब से बड़ी विशेषता है। भक्तिकालीन समय में हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियाँ एक जुड़ हो गयी। संगीत और चित्र-कलाओं में दोनों संस्कृतियों का समन्वय स्थापित हुआ। इस प्रकार भक्तिकाल में भारत की संस्कृति का रूप अधिक निखरने लगा ।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

भक्ति काल के सामजिक, राजनीतिक, संस्कृतिक स्थिति।
भक्ति काल के महत्त्व।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

भक्ति काल के आरंभ की स्थिति को समझने के लिए तत्कालीन परिस्थितियों का अध्ययन करना ज़रूरी है। साहित्यिक दृष्टि से देखे तो मुगल काल हिन्दी के भक्ति साहित्य का सुवर्ण काल कहा जाता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- भक्ति भावना जगाने का पर्याप्त परिश्रम।
- भक्ति मार्ग के ज़रिये सामाजिक कल्याण मुख्य लक्ष्य बन गया।
- प्राकृतिक शक्तियों के दैवीकरण और ईश्वर का मानवीकरण होने लगा।
- भक्ति काल में हिंसक वृत्तियाँ कोमल वृत्तियों में बदलने लगी।
- भारतीय जीवन में समय के चलते विदेशी- विजातीय तत्व बदलाव लाने लगे।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भारतीय संस्कृति की सब से बड़ी विशेषता क्या है ?
2. पूर्व मध्यकाल या भक्तिकाल कहाँ से कहाँ तक सीमित है?
3. भक्ति काल में भक्ति के प्रवाह कितने काव्य-धाराओं में हुई?
4. 'भक्तिकाल' नामकरण किसने दिया है?
5. पृथ्वीराज चौहान किस वंश के चौहान थे ?
6. भारत में खिलजी वंश की स्थापना कब हुई ?
7. अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के पश्चात किस वंश की स्थापना हुई ?
8. भक्ति काल में हिंसक वृत्तियाँ कोमल वृत्तियों में बदलने लगी। सही या गलत ?

Answers उत्तर

1. भारतीय संस्कृति की सब से बड़ी विशेषता समन्वयात्मकता है।
2. 1375 वि. सं से 1700 वि.सं तक।
3. मुख्यतः दो काव्यधराएँ हैं, सगुण और निर्गुण ।
4. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

5. चौहान वंश के ।
6. सन् 1290 में ।
7. तुगलक वंश की स्थापना की ।
8. सही।

Assignment प्रदत्त कार्य

- भक्ति भावना जगाने का पर्याप्त परिश्रम भक्ति काल की सबसे बड़ी विशेषता है, स्पष्ट कीजिये ।

Self Assesement Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- भक्तिकाल की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियाँ लोगों में भक्ति जगाने को कहाँ तक सहायक बना?

इकाई : 2
मध्यकाल के वर्गीकरण और विभिन्न नामकरण

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भक्ति काल के वर्गीकरण से अवगत होता है ।
- विभिन्न आचार्यो के द्वारा दिए गए नामकरण से परिचय प्राप्त करता है ।
- निर्गुण भक्ति काव्यधारा और उसके कवियों के बारे में परिचय प्राप्त करता है ।
- सगुण भक्ति काव्यधारा और उसके कवियों के बारे में परिचय प्राप्त करता है ।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भक्ति काल हिन्दी साहित्य का श्रेष्ठ युग है। भक्ति काल में महाप्रभु वल्लभाचार्य द्वारा पुष्टि-मार्ग की स्थापना की। इसके अलावा मध्व तथा निंबार्क संप्रदायों की स्थापना भी हुई।
भक्ति काल की दो प्रमुख काव्यधाराएँ हैं, सगुण भक्ति और निर्गुण भक्ति। सगुण भक्ति की दो धाराएँ हैं - राम भक्ति शाखा और कृष्ण भक्ति शाखा। निर्गुण भक्ति के दो रूप हैं - ज्ञानाश्रयी शाखा और प्रेमाश्रयी शाखा ।
भक्ति काल के विभिन्न नामकरण हैं, पूर्व मध्यकाल, स्वर्णकाल, स्वर्णयुग और लोक जागरण काल आदि।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस समय को 'भक्ति काल' नाम दिया ।
हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'लोक जागरण' कहा ।
भक्ति काल को जॉर्ज ग्रियर्सन ने 'स्वर्णकाल' नाम दिया ।
भक्ति काल को रजत जोशी ने 'स्वर्णयुग' नाम दिया ।
सगुण एवं निर्गुण परमात्मा पर विश्वास पैदा करने का परिश्रम ।
वल्लभाचार्य द्वारा पुष्टि-मार्ग की स्थापना करना और विष्णु के कृष्णावतार की उपासना करने का प्रचार ।

Discussion / चर्चा

3.2.1 भक्ति काल के विभिन्न नामकरण

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्ति काल का महत्वपूर्ण स्थान है। इस युग को 'पूर्व मध्यकाल' भी कहा जाता है। इसकी समयावधि 1375 वि.सं से 1700 वि.सं तक की मानी जाती है। यह हिन्दी साहित्य का श्रेष्ठ युग है । इसे जॉर्ज ग्रियर्सन ने **स्वर्णकाल**, रजत जोशी ने **स्वर्णयुग**, आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने **भक्ति काल** एवं हजारी प्रसाद द्विवेदी ने **लोक जागरण** कहा। सम्पूर्ण साहित्य के श्रेष्ठ कवि और उत्तम रचनाएँ इसी समय में प्राप्त होती हैं। दक्षिण में आलवार संत नाम से कई प्रख्यात भक्त हुए हैं। इनमें से कई तथाकथित नीची जातियों के भी थे। वे बहुत पढे-लिखे नहीं थे, परंतु अनुभवी थे। आलवारों के पश्चात दक्षिण में आचार्यो की एक परंपरा चली जिसमें रामानुजाचार्य प्रमुख थे। रामानुजाचार्य की परंपरा में रामानंद हुए। उनका व्यक्तित्व असाधारण था। वे उस समय के सबसे बड़े आचार्य थे। उन्होंने भक्ति के क्षेत्र में ऊँच-नीच का भेद को तोड़ दिया। सभी जातियों के व्यक्तियों को अपना शिष्य बनाया।

रामानंद ने विष्णु के अवतार राम की उपासना पर बल दिया। रामानंद ने और उनकी शिष्य-मंडली ने दक्षिण की भक्तिगंगा का उत्तर में प्रवाहित किया। समस्त उत्तर-भारत

इस पुण्य-प्रवाह में बहने लगा। भारत भर में उस समय पहुँचे हुए संत और महात्मा भक्तों का आविर्भाव हुआ। महाप्रभु वल्लभाचार्य ने पुष्टि-मार्ग की स्थापना की और विष्णु के कृष्णावतार की उपासना करने का प्रचार किया। उनके द्वारा जिस लीला-गान का उपदेश हुआ उसने देशभर को प्रभावित किया। अष्टछाप के सुप्रसिध्द कवियों ने उनके उपदेशों को मधुर कविता में प्रतिबिंबित किया। इसके उपरांत मध्व तथा निंबार्क संप्रदायों का भी जन-समाज पर प्रभाव पड़ा है। साधना-क्षेत्र में दो अन्य संप्रदाय भी उस समय विद्यमान थे। नाथों के योग-मार्ग से प्रभावित संत संप्रदाय चला जिसमें प्रमुख व्यक्तित्व संत कबीरदास का है। मुसलमान कवियों का सूफीवाद हिन्दुओं के विशिष्टाद्वैतवाद से बहुत भिन्न नहीं है। कुछ भावुक मुसलमान कवियों द्वारा सूफीवाद से रंगी हुई उत्तम रचनाएँ लिखी गईं।

भक्ति-युग की दो प्रमुख काव्य-धाराएँ मिलती हैं, सगुण भक्ति और निर्गुण भक्ति। सगुण भक्ति की दो धाराएँ है -राम भक्ति शाखा और कृष्ण भक्ति शाखा। निर्गुण भक्ति के दो रूप हैं - ज्ञानाश्रयी शाखा और प्रेमाश्रयी शाखा।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

भक्ति काल के वर्गीकरण पर विचार करना ।

भक्ति काल के विविध नामकरण पर विचार करना ।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

भक्ति काल को विभिन्न आचार्यों ने विभिन्न नामों से अभिहित किया गया । आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा दिया गया 'भक्ति काल' नाम बाद में ज़्यादातर प्रयुक्त होने लगा ।

Recap / पुनरावृत्ति

- भक्ति का त दक्षिण से आने पर भी उत्तर भारत की नई परिस्थितियों में एक नया रूप ग्रहण किया।
- मुसलमानों के इस देश में बस जाने पर एक ऐसे भक्तिमार्ग की आवश्यकता थी जो हिन्दू और मुसलमान दोनों को ग्राह्य हो।
- महाराष्ट्र के संत नामदेव ने 14 वीं शताब्दी में इसी प्रकार के भक्तिमत का सामान्य जनता में प्रचार किया जिसमें भगवान के सगुण और निर्गुण दोनों रूप गृहीत थे।
- कबीर के संतमत के ये पूर्वपुरुष हैं।
- सूफी कवियों ने हिन्दुओं की लोककथाओं का आधार लेकर ईश्वर के प्रेममय रूप का प्रचार किया।
- विभिन्न मतों का आधार लेकर हिन्दी में निर्गुण और सगुण के नाम से भक्तिकाव्य की दो शाखाएँ साथ-साथ चलीं।
- निर्गुणमत के दो उपविभाग हुए -ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी। पहले के प्रतिनिधि कबीर और दूसरे के जायसी हैं।
- सगुणमत भी दो उपधाराओं में प्रवाहित हुआ - रामभक्ति और कृष्णभक्ति। पहले के प्रतिनिधि तुलसी हैं और दूसरे के सूरदास।
- भक्तिकाव्य की इन विभिन्न प्रणालियों की अपनी अलग अलग विशेषताएँ हैं पर कुछ आधारभूत बातों का सन्निवेश सब में है।
- प्रेम की सामान्य भूमिका सभी ने स्वीकार की।
- भक्तिभाव के स्तर पर मनुष्यमात्र की समानता सबको मान्य है।
- प्रेम और करुणा से युक्त अवतार की कल्पना तो सगुण भक्तों का आधार ही है पर निर्गुणोपासक कबीर भी अपने राम को प्रिय, पिता और स्वामी आदि के रूप में स्मरण करते हैं।
- ज्ञान की तुलना में सभी भक्तों ने भक्तिभाव को गौरव दिया है।
- सभी भक्त कवियों ने लोकभाषा का माध्यम स्वीकार किया है।
- आज की दृष्टि से इस संपूर्ण भक्तिकाव्य का महत्व उसकी धार्मिकता से अधिक लोकजीवनगत मानवीय

अनुभूतियों और भावों के कारण है।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'भक्ति काल' नाम किस ने दिया था ?
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भक्ति काल को क्या नाम दिया ?
3. भक्ति काल को जॉर्ज ग्रियर्सन ने क्या नाम दिया ?
4. भक्ति काल को रजत जोशी कौन-सा नाम दिया ?
5. भक्तिकाल की सब-से बड़ी विशेषता क्या है ?
6. पुष्टि-मार्ग की स्थापना किसने की ?
7. किन लोगों ने हिंदुओं की लोककथाओं का आधार लेकर ईश्वर के प्रेममय रूप का प्रचार किया?
8. सगुण भक्तों का आधार क्या है ?

Answers उत्तर

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस समय को 'भक्ति काल' नाम दिया ।
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'लोक जागरण' कहा था ।
3. भक्ति काल को जॉर्ज ग्रियर्सन ने 'स्वर्णकाल ' नाम दिया ।
4. भक्ति काल को रजत जोशी ने 'स्वर्णयुग' नाम दिया ।
5. सगुण एवं निर्गुण परमात्मा पर विश्वास पैदा करने का परिश्रम ।
6. वल्लभाचार्य द्वारा पुष्टि-मार्ग की स्थापना करना ।
7. सूफी कवियों ने ।
8. प्रेम और करुणा से युक्त अवतार की कल्पना ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- हिन्दी साहित्य के भक्ति काल विभाजन पर टिप्पणी लिखिए ।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- हिन्दी में भक्ति काल को सुवर्ण काल कहने के कारण ।
- सगुण एवं निर्गुण भक्ति द्वारा परमात्मा पर विश्वास पैदा करने का परिश्रम ।

इकाई : 3

भक्ति आन्दोलन और भक्ति आन्दोलन की उत्पत्ति और विकास

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी साहित्य में भक्ति आंदोलन के मुख्य कारण को समझता है ।
- भक्ति आंदोलन से उत्पन्न गुण-दोष का विवेचन करता है ।
- हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्ति आन्दोलन से उत्पन्न परिवर्तन को समझता है ।
- हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्ति आन्दोलन की आवश्यकता को समझता है ।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भक्ति का मूल स्रोत दक्षिण भारत से शुरू हुआ । भक्ति आन्दोलन हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव था। भक्ति आंदोलन के नेता है रामानन्द।

ईश्वर की भक्ति की ओर उन्मुख होना इस युग की प्रमुख प्रवृत्ति है। भारतीय धर्म साधना में भक्ति की एक सुस्पष्ट एवं सुदीर्घ परम्परा शुरू हुई।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

भक्ति आंदोलन के उन्नायक रामानन्द ने राम को भगवान के रूप में प्रतिष्ठित कर उसे केन्द्र बनाया।

अनेक विद्वानों ने मध्य युग के भक्ति आन्दोलन को वैदिक परम्परा की मूल बातों के उदय के रूप में देखने लगे हैं।

रूढिवाद के विरुद्ध आवाज़।

भक्ति आन्दोलन में जाति भेद और धार्मिक शत्रुता।

आत्मसमर्पण की भावना।

नाम की महत्ता एवं गुरु की महत्ता पर बल दिया गया।

Discussion / चर्चा

3.3.1 भक्ति आंदोलन की उत्पत्ति

मध्यकालीन भारत के सांस्कृतिक इतिहास में भक्ति आन्दोलन एक महत्वपूर्ण पड़ाव था। इस काल में सामाजिक-धार्मिक सुधारकों द्वारा समाज में विभिन्न तरह से भगवान की भक्ति का प्रचार-प्रसार किया गया। सिक्ख धर्म के उद्‌भव में भक्ति आन्दोलन की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है। पूर्व मध्यकाल में जिस भक्ति धारा ने अपने आन्दोलनात्मक सामर्थ्य से समूचे राष्ट्र की शिराओं में नया रक्त प्रवाहित किया, उसके उद्‌भव के कारणों के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है । लेकिन एक बात पर सहमति है कि भक्ति की मूल धारा दक्षिण भारत में छठीं-सातवीं शताब्दी में ही शुरू हो गई थी। 14 वीं शताब्दी तक आते-आते इसने उत्तर भारत में अचानक आन्दोलन का रूप ग्रहण कर लिया। किन्तु यह धारा दक्षिण भारत से उत्तर भारत तक कैसे पहूंची, उसके आन्दोलनात्मक रूप धारण करने में कौन- कौन से कारण रहे, इस पर विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। अब बहुत से विद्वान भक्ति आन्दोलन से सम्बन्धित 19 वीं-20 वीं शताब्दी के विचारों पर प्रश्न उठाने लगे हैं। अनेक विद्वान अब मध्य युग के भक्ति आन्दोलन को वैदिक परम्परा की मूल बातों का नए रूप में उदय के रूप में देखने लगे हैं। देश में मुसलमान शासन स्थापित होने के कारण हिन्दू जनता हताश, निराश एवं पराजित हो गई और पराजित मनोवृत्ति में ईश्वर की भक्ति की ओर उन्मुख होना स्वाभाविक था। हिन्दू

जनता ने भक्तिभावना के माध्यम से अपनी आध्यात्मिक श्रेष्ठता दिखाकर पराजित मनोवृत्ति का शमन किया। तत्कालीन धार्मिक परिस्थितियों ने भी भक्ति के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान किया। नाथ, सिद्ध योगी अपनी रहस्यदर्शी शुष्क वाणी में जनता को उपदेश दे रहे थे। भक्ति, प्रेम आदि ह्रदय के प्राकृत भावों से उनका कोई सामंजस्य न था। भक्तिभावना से ओतप्रोत साहित्य ने इस अभाव की पूर्ति की। भक्ति का मूल स्रोत दक्षिण भारत में था। जहाँ 7वीं शती में आलवार भक्तों ने जो भक्तिभावना प्रारंभ की उसे उत्तर भारत में फैलाने के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्राप्त हुईं। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने शुक्लजी के मत से असहमति व्यक्त करते हुए कहा कि भक्तिभावना पराजित मनोवृत्ति की उपज नहीं है और न ही यह इस्लाम के बलात प्रचार के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई। उनका तर्क यह है कि हिन्दू सदा से आशावादी जाति रही है तथा किसी भी कवि के काव्य में निराशा का पुट नहीं है। जार्ज ग्रियर्सन भक्ति आन्दोलन का उदय ईसाई धर्म के प्रभाव से मानते है। उनका मत है कि रामानुजाचार्य को भावावेश एवं प्रेमोल्लास के धर्म का सन्देश ईसाइयों से मिला। भारतीय धर्म साधना में भक्ति की एक सुस्पष्ट एवं सुदीर्घ परम्परा रही है। रामानुजाचार्य, रामानंद, निम्बार्काचार्य, बल्लभाचार्य जैसे विद्वानों ने अपने सिध्दांतों की स्थापना के द्वारा भक्तिभाव एवं अवतारवाद को दृढ़तर आयामों पर स्थापित किया, जिसे सूर, कबीर, मीरा, तुलसी ने काव्य रूप प्रदान किया।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

भक्ति आन्दोलन में जाति भेद और धार्मिक शत्रुता तथा रीति रिवाजों का विरोध ।

धार्मिक परिस्थितियों से भक्ति के प्रसार मे महत्त्वपूर्ण योगदान।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

भक्ति भगवान के प्रति मानव की प्रेम भावना का प्रवाह है । समानता का समर्थन करना भक्ति आंदोलन का लक्ष्य था।

Recap / पुनरावृत्ति

- भक्ति आन्दोलन का आरम्भ दक्षिण भारत में आलवारों एवं नायनारों से हुआ जो कालान्तर में (800 ई से 1700 ई के बीच) उत्तर भारत सहित सम्पूर्ण दक्षिण एशिया में फैल गया।
- हिन्दू क्रांतिकारी अभियान के नेता शंकराचार्य थे जो एक महान विचारक और जाने माने दार्शनिक रहे। इस अभियान को चैतन्य महाप्रभु, नामदेव, तुकाराम, जयदेव ने और अधिक मुखरता प्रदान की। इस अभियान की प्रमुख उपलब्धि मूर्ति पूजा को समाप्त करना रहा।
- भक्ति आंदोलन के नेता रामानन्द ने राम को भगवान के रूप में लेकर इसे केन्द्रित किया। उनके बारे में बहुत कम जानकारी है, परन्तु ऐसा माना जाता है कि वे 15वीं शताब्दी के प्रथमार्ध में रहे। उन्होंने सिखाया कि भगवान राम सर्वोच्च भगवान हैं और केवल उनके प्रति प्रेम और समर्पण के माध्यम से तथा उनके पवित्र नाम को बार-बार उच्चरित करने से ही मुक्ति पाई जाती है।
- चैतन्य महाप्रभु भगवान के प्रति प्रेम भाव रखने के प्रबल समर्थक, भक्ति योग के प्रवर्तक थे, चैतन्य ने ईश्वर की आराधना श्रीकृष्ण के रूप में की।
- श्री रामानुजाचार्य, भारतीय दर्शनशास्त्री थे। उन्हें सर्वाधिक महत्वपूर्ण वैष्णव संत के रूप में मान्यता दी गई है।
- रामानंद ने उत्तर भारत में जो किया वही रामानुज ने दक्षिण भारत में किया। उन्होंने रुढ़ीवादी कुविचार की बढ़ती औपचारिकता के विरुद्ध आवाज उठाई और प्रेम तथा समर्पण की नींव पर आधारित वैष्णव विचाराधारा के नए संप्रदाय की स्थापना की। उनका सर्वाधिक योगदान जाति के भेदभाव को समाप्त करना था।
- बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी में भक्ति आन्दोलन के अनुयायियों में संत शिरोमणि रविदास, नामदेव और संत कबीर दास शामिल हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भगवान की स्तुति के भक्ति गीतों पर

बल दिया।

- प्रथम सिक्ख गुरु और सिक्ख धर्म के प्रवर्तक, गुरु नानक जी भी संत और समाज सुधारक थे। उन्होंने सभी प्रकार के जाति भेद और धार्मिक शत्रुता तथा रीति रिवाजों का विरोध किया। उन्होंने ईश्वर का एक रूप माना तथा हिन्दु और मुस्लिम धर्म की औपचारिकताओं तथा रीति रिवाजों की आलोचना की।
- गुरु नानक का सिद्धांत सभी लोगों के लिए था। उन्होंने हर प्रकार की समानता का समर्थन किया।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की समस्त कृतियाँ किसकी उपज है ?
2. दक्षिण भारत में भक्ति आन्दोलन की समय सीमा निर्धारित कीजिये ।
3. हिन्दी में भक्ति आन्दोलन की समय सीमा निर्धारित कीजिये ।
4. 'रामचरितमानस' जिसे जन साधारण द्वारा किस नाम से जाना जाता है?
5. भक्ति आन्दोलन का आरम्भ दक्षिण भारत में किन लोगों के माध्यम से हुई ?
6. प्रथम सिक्ख गुरु कौन है ?
7. बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी के भक्ति आन्दोलन के अनुयायी कौन- कौन हैं ?
8. राम के अनुयायियों में प्रमुख संत कवि कौन है ?

Answers उत्तर

1. हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की समस्त कृतियाँ भक्ति-आंदोलन की उपज है ।
2. दक्षिण भारत में यह आंदोलन छठी शती से तेरहवीं शती तक हुआ है ।
3. हिन्दी में इसकी काल-सीमा तेरहवीं शती के उत्तरार्द्ध से सत्रहवीं शती तक मानी जाती है ।
4. 'रामचरितमानस' जिसे जन साधारण द्वारा 'तुलसीकृत रामायण' कहा जाता है ।
5. आलवारों एवं नायनारों के माध्यम से ।
6. गुरु नानक ।
7. संत शिरोमणि ,रविदास, नामदेव , कबीर दास आदि ।
8. तुलसीदास ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- भक्ति आन्दोलन और उसके उन्नायकों पर विचार कीजिये ।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की रचनाएँ भक्ति-आंदोलन की देन है । अपना मत प्रकट कीजिए ?

इकाई : 4

निर्गुण भक्ति शाखा और उनकी प्रमुख विशेषताएँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- निर्गुण भक्ति से परिचय प्राप्त करता है।
- ज्ञानमार्गी शाखा से परिचय प्राप्त करता है।
- प्रेममार्गी शाखा से परिचय प्राप्त करता है।
- भक्तिकाल के प्रमुख संत कवियों एवं कृतियों से परिचय प्राप्त करता है।
- भक्तिकाल के प्रमुख सूफी कवियों और कृतियों से परिचय प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

निर्गुण काव्य दो धाराएं बनकर प्रवाहित हुई -ज्ञानाश्रयी और प्रेममार्गी । ज्ञानाश्रयी काव्यधारा के अधिकतर कवि संत थे । निर्गुण भक्तिधारा में ब्रह्मा के निर्गुण स्वरूप की उपासना के प्रति आग्रह भाव व्यक्त किया है । निर्गुण कवियों के अनुसार परमात्मा प्रकृति के कण-कण में व्याप्त अगोचर रूप है । ज्ञानमार्गी शाखा में निर्गुण ब्रह्मा की उपासना ज्ञान के माध्यम से प्रस्तावित किया गया है ।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

ज्ञानाश्रयी शाखा में ज्ञान से परमात्मा को पाने का आदर्श-प्रचार ।
प्रेममार्गी शाखा में प्रेम से परमात्मा को पाने का आदर्श-प्रचार ।
गुरु की महिमा का उद्घोष ।
कविता में रहस्यवाद का प्रयोग ।
रहस्य भावना का वर्णन ।
परमात्मा के नाम-स्मरण की आवश्यकता ।
हिन्दू-मुसलमान एकता की अनिवार्यता पर बल ।

Discussion / चर्चा

3.4.1 निर्गुण भक्ति काव्य

निर्गुण भक्ति काव्य धारा के अंतर्गत उस परमात्मा की भक्ति की गई जो निराकार, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान है तथा समस्त गुणों से परिपूर्ण है । निराकार (रूपहीन) ब्रह्मा के विश्वासी कवि निर्गुण कहलाने लगे है । उसके अनुसार परमात्मा अगोचर है, जो प्रकृति के कण-कण में व्याप्त है ।

3.4.1 .1 निर्गुण भक्ति काव्य - दो धाराएँ

निर्गुण काव्य दो धाराएँ बनकर प्रवाहित हुआ -
1. ज्ञानाश्रयी 2.प्रेममार्गी।

ज्ञानाश्रयी शाखा व धारा के अधिकतर कवि संत थे। सत (Essence, Cream) रूपी परम तत्व प्राप्त महान लोग संत कहलाये । कबीर के सिवा निर्गुण भक्ति धारा के प्रसिद्ध कवियों में नामदेव, रैदास, नानक, दादू दयाल, रज्जब दास, मलूक दास, सुंदर दास आदि के नाम उल्लेखनीय है।

प्रेममार्गी या प्रेमाश्रयी धारा के अधिकांश कवि सूफी फ़क़ीर थे । जिसमें मलिक मुहम्मद जायसी, मंझन, कुतुबन, मुल्ला दाऊद, उसमान, नूर मोहम्मद, असायत आदि प्रसिद्ध है।

अधिकतर संत औपचारिक शिक्षा से वंचित थे। वे अशिक्षित थे। इसलिए उन्होंने बोलचाल की भाषा में

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

लिखा है। कबीर जैसे संत अधिकांश समय घूमते फिरते थे। इसलिए उनकी भाषा में विविध क्षेत्रों की भाषा-शैली पायी जाती हैं । कबीर की भाषा अवधी, खड़ी बोली, पूर्वी-हिन्दी, संस्कृत, अरबी, फारसी, पंजाबी, राजस्थानी आदि भाषाओं का सम्मिश्रित रूप है । इसे 'सधुक्कड़ी' मानी जाती हैं । उन्होंने स्थान-स्थान पर प्रतीकों और उलटबासियों की शैलियाँ भी अपनाई है। इसलिये कभी-कभी उनकी भाषा कठिन प्रतीत होती है ।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

निर्गुण भक्ति काव्य धारा के अनुसार परमात्मा की भक्ति सर्वव्यापी है ।

निर्गुण भक्ति कविता में रहस्यवाद का प्रयोग ।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

निर्गुण भक्ति सामान्यतः ज्ञान मार्ग से जुडी हुई है । निर्गुण भक्ति में 'गुरु' को विशेष महत्व दिए गए थे ।

Recap / पुनरावृत्ति

- निर्गुण भक्ति में ईश्वर को निर्गुण, निराकार, घट-घट व्यापी, सूक्ष्म माना गया है।
- निर्गुणोपासना में भक्ति आलंबन निराकार है, फलतः वह जनसाधारण के लिए ग्राह्य नहीं है।
- निर्गुण भक्ति का सम्बन्ध सामान्यतः ज्ञान मार्ग से जोड़ा जाता है।
- इस भक्ति में 'गुरु' को विशेष महत्व प्राप्त है।
- निर्गुण एवं निराकार ब्रह्मा से भावात्मक सम्बन्ध जोड़कर रहस्यवाद को काव्य में स्थान निर्गुण परम्परा के भक्त कवियों ने दिया।
- ईश्वर के नाम की महत्ता पर निर्गुण भक्त कवियों ने भी बल दिया है।
- इस भक्ति में माधुर्य भाव का समावेश होने पर रहस्यवाद का उदय होता है।
- नाथ पंथियों से उन्होंने शून्यवाद, गुरु की प्रतिष्ठा, योग प्रक्रिया को ग्रहण किया है।
- संत कवियों ने वैदिक साहित्य, वैदिक परम्पराओं एवं बाह्याचारों की आलोचना बौद्धधर्म के प्रभाव से की है।
- संतों ने नाम जप पर विशेष बल दिया। नाम ही भक्ति और मुक्ति का दाता है। वे मानसिक भक्ति पर बल देते हैं जो पूर्णतः आडम्बरविहीन होती है।
- निर्गुण भक्ति में प्रेम को भी महत्ता दी गई है।
- जाति, वर्ण के अंतर को दूर करके मानव मात्र की एकता का प्रतिपादन करते हुए सामाजिक समरसता लाने का प्रयास किया।
- इस भक्ति में सहज साधना पर भी बल दिया गया, जिसने धार्मिक जीवन की दुरूहताओ को कम किया।
- हृदय की पवित्रता, आचरण की पवित्रता, वासनाओं से मुक्ति गुरु कृपा से ही संभव है ऐसा निर्गुणोपासकों का विश्वास है।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निर्गुण भक्ति काव्य धारा के दो भेद निर्धारित कीजिए।
2. ज्ञानाश्रयी शाखा व धारा के अधिकतर कवि कौन थे ?
3. प्रेममार्गी या प्रेमाश्रयी धारा के अधिकांश कवि कौन थे ?
4. निर्गुण भक्ति काव्य धारा के प्रमुख कवि कौन थे ?

5. प्रेमाश्रयी काव्य धारा के प्रमुख कवि के नाम से कौन जाने जाते थे ?
6. निर्गुण भक्ति काव्य धारा के अनुसार परमात्मा की विशेषता क्या है ?
7. निर्गुण भक्ति में प्रेम को भी महत्ता दी गई है। सही या गलत ?
8. निर्गुण भक्त कवियों ने किस पर बल दिया है ?

Answers उत्तर

1. ज्ञानाश्रयी और प्रेममार्गी ।
2. ज्ञानाश्रयी शाखा व धारा के अधिकतर कवि संत थे ।
3. प्रेममार्गी या प्रेमाश्रयी धारा के अधिकांश कवि सूफी फ़कीर थे ।
4. निर्गुण भक्ति काव्य धारा के प्रमुख कवि कबीर थे ।
5. जायसी प्रेमाश्रयी काव्यधारा के प्रमुख कवि के रूप में जाने जाते थे ।
6. निर्गुण भक्ति काव्य धारा के अनुसार परमात्मा अगोचर है ।
7. सही ।
8. ईश्वर के नाम की महत्ता पर ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- भक्ति काल के निर्गुण भक्ति शाखा के विभाजन पर विचार प्रस्तुत कीजिए।
- हिन्दी भक्तिकाल के निर्गुण भक्त कवि का परिचय दीजिए ।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- निर्गुण भक्ति काव्य धारा के अनुसार परमात्मा या इश्वर अगोचर है ।
- निर्गुण भक्ति में प्रेम को भी विशेष महत्व है ।

इकाई : 5

सगुण भक्ति शाखा और उसकी प्रमुख विशेषताएँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- सगुण भक्ति से परिचय प्राप्त करता है।
- रामभक्ति धारा से परिचय प्राप्त करता है ।
- कृष्ण भक्ति धारा से परिचय प्राप्त करता है ।
- भक्तिकाल के प्रमुख राम भक्ति कवियों और कृतियों से परिचय प्राप्त करता है।
- भक्तिकाल के प्रमुख कृष्ण भक्त कवियों, कृतियों से परिचय प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

सगुण भक्ति में मानव हृदय का विश्राम देख सकते है । सगुण काव्य में लीलावाद का महत्त्व है।
सगुण भक्ति में श्रीकृष्ण और राम को विशेष स्थान है।

कृष्ण काव्य में भगवान के मधुर रूप का उद्घाटन मिलता है । कृष्ण भक्ति पर आधारित काव्यों की एक लम्बी परंपरा है सगुण भक्ति। मर्यादा पुरुषोत्तम राम की पूजा सगुण भक्ति की एक विशेषता है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

सगुण भक्तिधारा के सगुण रूप की उपासना के प्रति आस्था भाव व्यक्त किया गया है ।
राम भक्ती में श्रीरामचन्द्र को सृष्टि, स्थिति और संहार के अधिनायक के रूप में समर्थन ।
कृष्णभक्ति में श्रीकृष्ण को सृष्टि, स्थिति और संहार के अधिनायक के रूप में समर्थन ।
सुधारवादी दृष्टिकोण का प्रस्तुतीकरण ।
समन्वय भावना का प्रदर्शन ।
अहंकार एवं स्वार्थ भावना वर्जित करने का आह्वान ।
साहित्य में जनभाषा का उपयोग ।
लोक मंगल भावना की गूँज ।
जन सामान्य में परंपरा,धार्मिक मूल्य, संस्कृति तथा सभ्यता स्थापित करने का परिश्रम।
काव्य का उत्कर्ष ।
जीवन की नश्वरता पर अवबोधन ।
नश्वर जीवन को अनश्वर बना देने का सुगम मार्ग-दर्शन ।

Discussion / चर्चा

3.5.1 सगुण भक्ति काव्य - दो धाराएँ

सगुण भक्ति दो उपधाराओं में प्रवाहित हुई - रामभक्ति और कृष्णभक्ति। पहले के प्रतिनिधि तुलसी हैं और दूसरे के सूरदास। कृष्णभक्ति शाखा के कवियों ने आनंदस्वरूप लीलापुरुषोत्तम कृष्ण के मधुर रूप की प्रतिष्ठा कर जीवन के प्रति गहन राग को स्फूर्त किया। इन कवियों में सूरसागर के रचयिता महाकवि सूरदास श्रेष्ठतम हैं जिन्होंने कृष्ण के मधुर व्यक्तित्व का अनेक मार्मिक रूपों में साक्षात्कार किया। ये प्रेम और सौंदर्य के निसर्ग सिद्ध गायक हैं। कृष्ण के बालरूप की

जैसी मोहक, सजीव और बहुविध कल्पना इन्होंने की है वह अन्यत्र कहीं नहीं मिलती। कृष्ण और गोपियों के स्वच्छंद प्रेम प्रसंगों द्वारा सूर ने मानवीय राग का बड़ा ही निश्छल और सहज रूप उद्घाटित किया है। यह प्रेम अपने सहज परिवेश में सहयोगी भाववृत्तियों से संपृक्त होकर विशेष अर्थवान हो गया है। कृष्ण के प्रति उनका संबंध मुख्यतः सख्यभाव का है। आराध्य के प्रति उनका सहज समर्पण भावना की गहरी से गहरी भूमिकाओं को स्पर्श करनेवाला है। सूरदास वल्लभाचार्य के शिष्य थे। वल्लभ के पुत्र विट्ठलनाथ ने कृष्ण लीलागान के लिए अष्टछाप के नाम से आठ कवियों का निर्वाचन किया था। सूरदास इस मंडल के सर्वोत्कृष्ट कवि हैं। अन्य विशिष्ट कवि नंददास और परमानंददास हैं। नंददास की कलाचेतना अपेक्षाकृत विशेष मुखर है।

मध्ययुग में कृष्णभक्ति का व्यापक प्रचार हुआ और वल्लभाचार्य के पुष्टिमार्ग के अतिरिक्त अन्य भी कई संप्रदाय स्थापित हुए, उन सब सम्प्रदायों ने कृष्णकाव्य को प्रभावित किया। हितहरिवंश (राधावल्लभी संप्र.), हरिदास (टट्टी संप्र.), गदाधर भट्ट और सूरदास मदनमोहन (गौड़ीय संप्र.) आदि अनेक कवियों ने विभिन्न मतों के अनुसार कृष्णप्रेम की मार्मिक कल्पनाएँ कीं। मीरा की भक्ति दांपत्यभाव की थी जो अपने स्वतःस्फूर्त कोमल और करुण प्रेमसंगीत से आंदोलित करती हैं। नरोत्तमदास, रसखान, सेनापति आदि इस धारा के अन्य अनेक प्रतिभाशाली कवि हुए जिन्होंने हिन्दी काव्य को समृद्ध किया। यह सारा कृष्णकाव्य मुक्तक या कथाश्रित मुक्तक है। संगीतात्मकता इसका एक विशिष्ट गुण है।

कृष्णकाव्य ने भगवान के मधुर रूप का उद्घाटन किया पर उसमें जीवन की अनेकरूपता नहीं थी। जीवन की विविधता और विस्तार की मार्मिक योजना रामकाव्य में हुई। कृष्णभक्तिकाव्य में जीवन के माधुर्य पक्ष का स्फूर्तिप्रद संगीत था, रामकाव्य में जीवन का नीतिपक्ष और समाजबोध अधिक मुखरित हुआ। एक ने स्वच्छंद रागतत्व को महत्व दिया तो दूसरे ने मर्यादित लोकचेतना पर विशेष बल दिया। एक ने भगवान की लोकरंजनकारी सौंदर्यप्रतिमा का संगठन किया तो दूसरे ने उसके शक्ति, शील और सौंदर्यमय लोकमंगलकारी रूप को प्रकाशित किया। रामकाव्य का सर्वोत्कृष्ट वैभव 'रामचरितमानस' के रचयिता तुलसीदास के काव्य में प्रकट हुआ जो विद्याविद् ग्रियर्सन की दृष्टि में बुद्धदेव के बाद के सबसे बड़े जननायक थे। पर काव्य की दृष्टि से तुलसी का महत्व भगवान के एक ऐसे रूप की परिकल्पना में है जो मानवीय सामर्थ्य और औदात्य की उच्चतम भूमि पर अधिष्ठित है। तुलसी के काव्य की एक बड़ी विशेषता उनकी बहुमुखी समन्वय भावना है जो धर्म, समाज और साहित्य सभी क्षेत्रों में सक्रिय है। उनका काव्य लोकोन्मुख है। उसमें जीवन की विस्तीर्णता के साथ गहराई भी है। उनका महाकाव्य रामचरितमानस राम के संपूर्ण जीवन के माध्यम से व्यक्ति और लोकजीवन के विभिन्न पक्षों का उद्घाटन करता है। उसमें भगवान राम के लोकमंगलकारी रूप की प्रतिष्ठा है। उनका साहित्य सामाजिक और वैयक्तिक कर्तव्य के उच्च आदर्शों में आस्था दृढ़ करनेवाला है। तुलसी की 'विनयपत्रिका' में आराध्य के प्रति, जो कवि के आदर्शों का सजीव प्रतिरूप है, उनका निरंतर और निश्छल समर्पणभाव, काव्यात्मक आत्माभिव्यक्ति का उत्कृष्ट दृष्टांत है। काव्याभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों पर उनका समान अधिकार है। अपने समय में प्रचलित सभी काव्यशैलियों का उन्होंने सफल प्रयोग किया। प्रबंध और मुक्तक की साहित्यिक शैलियों के अतिरिक्त लोकप्रचलित अवधी और ब्रजभाषा दोनों के व्यवहार में वे समान रूप से समर्थ हैं। तुलसी के अतिरिक्त रामकाव्य के अन्य रचयिताओं में अग्रदास, नाभादास, प्राणचंद चौहान और ह्रदयराम आदि उल्लेख्य हैं।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

सगुण भक्ति में गुरु महिमा का स्थान ।

सगुण भक्ति में ब्रह्मा के अवतार रूप की प्रतिष्ठा ।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

सगुण भक्ति में ईश्वर की महिमा को अधिक स्थान दिया गया है। सगुण भक्तिधारा में सगुण रूप की उपासना के प्रति आस्था भाव व्यक्त किया गया है ।

Recap / पुनरावृत्ति

- सगुण भक्ति, राम और कृष्ण भक्ति धारा के दो रूप में प्रवाहित हुई ।
- तुलसीदास, नाभादास, स्वामी अग्रदास आदि राम भक्ति धारा के प्रमुख कवि हैं ।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

- राम भक्ति धारा के समानांतर कृष्ण भक्ति धारा भी प्रवाहित हुई । जिसमें अष्टछाप के कवि प्रसिद्ध हैं ।
- वल्लभाचार्य के चार शिष्य - सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास, कृष्णदास तथा वल्लभाचार्य के सुपुत्र विट्ठलनाथ के चार शिष्य-गोविंदस्वामी, नंददास, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास आदि इस शाखा में प्रमुख हैं ।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सगुण भक्ति शाखा के प्रमुख राम भक्त कवि कौन है?
2. सगुण भक्ति शाखा के प्रमुख कृष्ण भक्त कवि कौन है?
3. अष्टछाप के कवि किस काव्यधारा में प्रसिध्द है ?
4. वल्लभाचार्य के चार शिष्य कौन-कौन थे ?
5. विट्ठलनाथ के चार शिष्य कौन-कौन थे ?
6. सूरसागर के रचयिता कौन हैं ?
7. तुलसी के काव्य की एक बड़ी विशेषता क्या है ?
8. 'विनयपत्रिका' किसकी रचना है ?

Answers उत्तर

1. तुलसीदास
2. सूरदास
3. कृष्ण भक्ति धारा में अष्टछाप के कवि प्रसिद्ध हैं ।
4. सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास, कृष्णदास ।
5. गोविंदस्वामी, नंददास, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास ।
6. महाकवि सूरदास ।
7. उनकी बहुमुखी समन्वयभावना है ।
8. तुलसीदास की ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- सगुण भक्ति काव्यधरा की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए ।
- अष्टछाप के कवियों पर पर्चा लिखिए ।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- सगुण भक्ति शाखा नश्वर जीवन को अनश्वर बना देने का सुगम मार्ग-दर्शन देता है ।

Reference Books सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ।
2. कबीर का रहस्यवाद - डॉ. राजकुमार वर्मा ।
3. कबीर : अनुशीलन - डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी ।
4. बीजक का भाषाः शास्त्रीय अध्ययन- डॉ. शुकदेव सिंह ।
5. कबीर - डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ।
6. भाषा कबीर उदार - उषा प्रियंवदा ।
7. कबीर ग्रन्थावली - श्यामसुन्दर दास ।
8. कबीर ग्रन्थावली - माता प्रसाद ।
9. कबीर वाणी संग्रह - डॉ. पारसनाथ तिवारी ।
10. कबीर वाणी पीयूष - डॉ. जयदेव सिंह ।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

BLOCK - 04

भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ और प्रमुख कवि

इकाई : 1

भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ और शैलियाँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों को समझता है ।
- भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य की विशेषताओं को समझता है ।
- भक्ति - भावना सम्बन्धी विचारों को समझता है ।
- भक्ति काल में ईश्वर की महत्ता को समझता है ।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भक्ति काल का दायरा काफी विस्तृत है । भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ भक्ति संबंधित है । भक्ति काल का मुख्य तत्व इश्वर भक्ति है । भक्ति काल के सारे कवि पहले भक्त हैं और बाद में कवि ।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

नाम महिमा
गुरु की महत्ता
भक्तिभावना की प्रधानता
व्यक्तिगत अनुभव की प्रधानता
अंह भाव का अभाव
साधु संगति का महत्व
स्वान्तः सुखाई रचना
लोक कल्याण की भावना
भारतीय संस्कृति के आदर्शों की स्थापना
समन्वयकारी साहित्य

Discussion / चर्चा

4.1.1 भक्ति काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

4.1.1.1 नाम का महत्वः-

जप भजन, कीर्तन आदि के रूप में भगवान के नाम की महता संतो, सूफियों और भक्तों ने स्वीकार की है । सूफियों और कृष्णा भक्तों ने कीर्तन को बहुत महत्व दिया है। कीर्तन, भजन और जप आदि के रूप में ईश्वर का गुण गान सभी शाखाओं के कवियों में पाया जाता है। सभी कवियों ने अपने-अपने आराध्य के नाम का स्मरण किया है ।

4.1.1.2 गुरु महिमा :-

ईश्वर अनुभवग्मय है। उसका अनुभव गुरु ही करा सकता है। इसलिए सभी भक्तों ने गुरु महिमा का गान किया है। सूरदास, तुलसीदास ने भी गुरु की महिमा का वर्णन किया है। भक्तिकाल की चारों काव्यधाराओं (संत, प्रेम, राम, कृष्ण) में गुरु महिमा पर सामान रूप से बल दिया गया है ।

4.1.1.3 भक्तिभावना की प्रधानताः-

भक्ति भावना की प्रधानता को भक्ति काल की सभी शाखाओं के कवियों ने स्वीकार किया है। भक्ति ज्ञान का प्रमुख साधन है। इस समय की चारों काव्यधाराओं (संत, प्रेम, राम,

कृष्ण) में ईश्वरराधना के लिए भक्ति पर बल दिया गया है ।

4.1.1.4 व्यक्तिगत अनुभव की प्रधानताः-

भक्ति काल के कवियों की रचनाओं में उनके व्यक्तिगत अनुभव की प्रधानता है। इस काल के प्रायः सभी कवि तीर्थ यात्रा या सत्संग की कामना से प्रेरित होकर देश भ्रमण करने वाले थे। सूरदास के सूरसागर में व्यक्तिगत अनुभव की प्रधानता दी गई है। तुलसीदास पढ़े लिखे होने पर भी पुस्तक ज्ञान को महत्व नहीं देते थे। वे प्रेम और व्यक्तिगत साधना को ही प्रधानता देते हैं।

4.1.1.5 अहं भाव का अभावः-

मनुष्य के अहं भाव का जब तक विनाश नहीं होता तब तक वह भगवत प्राप्ति एवं मोक्ष से बहुत दूर रहता है। दीनता का आश्रय लेकर अन्य भाव से भगवान के शरण में जाने का उपदेश सभी भक्तों ने दिया है।

4.1.1.6 साधु संगति का महत्वः-

साधु संग का गुणगान सभी शाखाओं के कवियों ने किया है। कबीर का कथन है- 'कबीर संगति साधु की हरे और की व्यादी' ।

4.1.1.7 स्वामिनः सुखाय रचनाः-

भक्ति-साहित्य के प्रणेता संसार-त्यागी संत थे। वे आदिकाल या रीतिकाल के कवियों की तरह दरबारों में रहकर आश्रयदाताओं को प्रसन्न करने के लिए नहीं लिखते थे। आत्मतृप्ति के लिए उनका लेखन था। संतों एवं भक्तों का काव्य स्वामिनः सुखाय न होकर स्वान्तः सुखाय और बहुजन हिताय है। वह किसी राजा की फरमाइश पर लिखा जाने वाला साहित्य नहीं है। उसमें निश्छल आत्माभिव्यक्ति है। भक्ति काल की रचनाएँ स्वान्त सुखाय रची गई है।

4.1.1.8 लोक कल्याण की भावना -

भक्तिकाल का साहित्य लोकमंगल के महान आदर्श द्वारा अनुप्राणित है। इसमें सत्य, उल्लास, आनन्द और युग निर्माणकारिणी प्रेरणा है। भारतीय जनता उस युग में इस साहित्य से प्रेरणा और शक्ति पाती रही है, वर्तमान में भी उसे तृप्ति मिल रही है और भविष्य में भी यह उसका संबल बना रहेगा। तुलसीदास ने लोक कल्याण को ही साहित्य का मूल उद्देश्य माना है।

4.1.1.9 भारतीय संस्कृति के आदर्शों की स्थापना

इस काल के सभी कवियों में भारतीय संस्कृति और उसके आदर्शों के प्रति गहरी आस्था है। भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति और सभ्यता, आचार और विचार भक्ति साहित्य के सुन्दर कलेवर में सुरक्षित हैं। इसमें सगुण-निर्गुण, भक्ति, योग, दार्शनिकता, आध्यात्मिकता और आदर्श जीवन के भव्य चित्र सन्निहित हैं। कुल मिलाकर भक्ति साहित्य तत्कालीन जनता का उन्नायक, प्रेरक एवं उद्धारकर्ता है। वह भारतीय संस्कृति का सशक्त उपदेष्टा है। राम, कृष्ण,अलख निरंजन और ओंकार का स्मारक है जो आज भी हिन्दू जन-जीवन के लिए प्रायः स्मरणीय है।

4.1.1.10 समन्वयकारी साहित्य

भक्ति साहित्य साम्प्रदायिक संकीर्णताओं से ऊपर उठकर समन्वय का संदेश देता है। साहित्य में ऐसी भावनाओं का समावेश है जिनका इस्लाम धर्म से कोई विरोध नहीं है। रामचरितमानस में समन्वय का यह स्वरूप अत्यंत भव्य रूप में दिखाई देता है। तुलसीदास जी ने ज्ञान, भक्ति और कर्म का समन्वय करके तीर्थराज प्रयाग का निर्माण किया है।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

भक्ति में ज्ञान का प्रमुख स्थान है ।

भक्ति के बिना ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती ।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

भक्तिकाल की रचनाओं में समन्वयात्मकता का विशेष स्थान दिया गया है । लोकमंगल की भावना भक्तिकालीन साहित्य की प्रेरणा स्रोत है ।

Recap / पुनरावृत्ति

- भक्ति साहित्य समन्वय का महान साहित्य है ।
- भक्तिकाल का साहित्य लोकमंगल पर आधारित है ।
- भक्तिकालीन साहित्य में युग निर्माणकारिणी प्रेरणा दिखाई देती है।

- भक्तिकालीन रचनायें आत्मतृप्ति के लिए लिखी जाती थी।
- लोक कल्याण ही भक्तिकालीन साहित्य का मूल उद्देश्य है।
- भक्ति ज्ञान का प्रमुख साधन है ।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भक्ति को प्रमुख साधन के रूप में किसे मानते हैं ?
2. भक्तिकालीन साहित्य का मूल उद्देश्य क्या है ?
3. भक्तिकाल का साहित्य किस पर आधारित है?
4. ईश्वर की प्राप्ति कैसे होती है ?
5. भक्ति काल के कवियों की रचनाओं में किस की प्रधानता है?
6. भक्ति काल की सभी शाखाओं के कवियों ने किस भावना को स्वीकार किया है?
7. भक्तिकाल का साहित्य किस आदर्श द्वारा अनुप्राणित है ?
8. भक्ति काल के कवियों की रचनाओं में किसकी प्रधानता है ?

Answers उत्तर

1. ज्ञान को भक्ति का प्रमुख साधन के रूप में मानते हैं ।
2. लोक कल्याण
3. लोकमंगल पर आधारित है ।
4. भक्ति के बिना ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती ।
5. भक्ति काल के कवियों की रचनाओं में उनके व्यक्तिगत अनुभव की प्रधानता है ।
6. भक्ति भावना को ।
7. लोकमंगल के महान आदर्श द्वारा ।
8. व्यक्तिगत अनुभव की प्रधानता है ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य की विशेषताओं पर पर्चा लिखिए ।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- भक्तिकालीन रचनाओं में कवियों की व्यक्तिगत अनुभव की प्रधानता है, स्पष्ट कीजिए ।
- भक्ति साहित्य समन्वय का महान साहित्य है, अपना विचार व्यक्त कीजिए ।
- भक्तिकाल का साहित्य लोकमंगल पर आधारित है, इससे तात्पर्य क्या है ?

इकाई : 2

संत काव्य परंपरा, संत कवि और विशेषताएँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- संत काव्य परंपरा से परिचय प्राप्त करता है ।
- भक्ति काल की संत काव्य परंपरा से जानकारी प्राप्त करता है ।
- संत काव्य के कवि के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है ।
- संत काव्य परंपरा की विशेषताओं से परिचय प्राप्त करता है ।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

संत काव्य परंपरा में अध्यात्मिक विषयों की अभिव्यक्ति हुई हैं ।
संत काव्य परंपरा जन - जीवन में व्याप्त अनुभूतियों से संपन्न हैं ।
संत काव्य ने अनेक धार्मिक संप्रदायों के प्रभाव को आत्मसात किया है ।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

दार्शनिक और कवि ।
निर्गुण-निराकार ब्रह्म की अवधारणा ।
गुरु महिमा ।
धार्मिक भावना उदार है, जो मानवतावाद पर आधारित है ।
साखी का अर्थ है साक्षी, सबद का अर्थ है शब्द और रमैनी का अर्थ है रामायण ।
कबीर की भाषा सधुक्कडी पंचमेल खिचड़ी नाम में भी जाने जाते हैं ।
कबीर के अनुयायियों को कबीर पंथी कहते हैं ।
वाणी के डिक्टेटर ।

Discussion / चर्चा

4.2.1 संत काव्य परंपरा

संत काव्य परंपरा के भक्त-कवि निर्गुणवादी थे। वे गुरु को बहुत सम्मान देते थे तथा जाति-पाँति के भेदों को अस्वीकार करते थे। वैयक्तिक साधना पर वे बल देते थे। मिथ्या आडंबरों और रूढियों का वे विरोध करते थे। लगभग अधिकांश संत लोग अनपढ़ थे। परंतु अनुभव की दृष्टि से समृद्ध थे। प्रायः सब सत्संगी थे और उनकी भाषा में कई बोलियों का मिश्रण पाया जाता है । इसलिए इस भाषा को 'सधुक्कड़ी' कहा गया है। साधारण जनता पर इन संतों की वाणी का ज़बरदस्त प्रभाव पड़ा है।

4.2.2 प्रमुख संत-कवि

इन संतों में प्रमुख कबीरदास थे। अन्य मुख्य संत-कवियों के नाम हैं - नानक, रैदास, दादूदयाल, सुंदरदास तथा मलूकदास। शंकर अद्वैतवाद में भक्ति को साधन के रूप में स्वीकार किया गया है, किन्तु उसे साध्य नहीं माना गया है। संतों ने (सूफियों ने भी) भक्ति को साध्य माना है।

शंकर अद्वैतवाद में मुक्ति के प्रत्यक्ष साधन के रूप में 'ज्ञान' को ग्रहण किया गया है। वहाँ मुक्ति के लिए भक्ति का ग्रहण अपरिहार्य नहीं है। वहाँ भक्ति के महत्व की सीमा प्रतिपादित है। वहाँ भक्ति का महत्व केवल इस दृष्टि से है कि वह अंतकरण के मालिन्य का प्रक्षालन करने में समर्थ सिद्ध

होती है। भक्ति आत्म-साक्षात्कार नहीं करा सकती, वह केवल आत्म साक्षात्कार के लिए उचित भूमिका का निर्माण कर सकती है। संतों ने अपना चरम लक्ष्य आत्म साक्षात्कार या भगवद्-दर्शन माना है तथा भक्ति के ग्रहण को अपरिहार्य रूप में स्वीकार किया है क्योंकि संतों की दृष्टि में भक्ति ही आत्म-साक्षात्कार या भगवद्दर्शन कराती है।

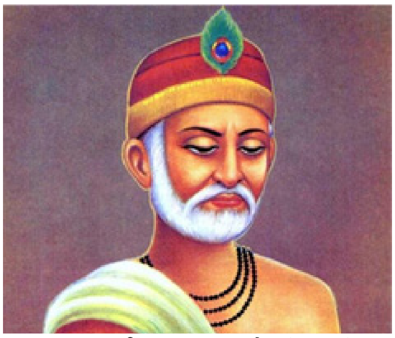

कबीर मूल रूप से संत एवं समाज सुधारक है, वे बाद में कवि के रूप में विख्यात हुए हैं । उनकी वाणियों में अनुभूति पक्ष सबल है, अभिव्यंजन पक्ष दुर्बल । उन्होंने जगह-जगह पर प्रेम के महत्व को समझाया है । उन्होंने स्पष्ट किया है कि स्थायी प्रेम के बिना सारा ज्ञान व्यर्थ है । वे समझते थे कि घमंड व अहंकार सच्चा प्रेम का घातक है ।

कबीर की भाषा साहित्यिक नहीं है, तत्कालीन जनभाषा है । जन-जीवन को प्रतिबिंबित करने के लिए उन्होंने ग्राम्य भाषा को अपनाया। कबीर घुमक्कड़ स्वभावी थे। इसलिए उनकी भाषा में अलग-अलग प्रदेशों के शब्द पाये जाते हैं। उसमें अवधी, ब्रज, खड़ी बोली, राजस्थानी, पंजाबी, पूर्वी हिन्दी, अरबी, फारसी आदि कई भाषा के शब्द पाये जाते हैं। इस मिश्रित जनभाषा खिचड़ी या सधुक्कड़ी नाम से जानी जाती हैं।

कबीर की भाषा को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने सधुक्कड़ी नाम दे कर पुकारा है । यह सधुक्कड़ी नाम से ख्याति पायी है । कबीर ने साखी, दोहा और चौपाई शैली में रचनाएँ की है । यमक, रूपक, अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, श्लेष आदि अलंकारों का अच्छा प्रयोग उन्होंने किया है । कबीर की भाषा वर्णनात्मक, चित्रात्मक, प्रतीकात्मक, भावनात्मक होती है । भाषा पर उसका अपरिमित अधिकार है । इसलिए डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को 'भाषा के डिक्टेटर' विशेषण दिया है।

कबीरदास ने अपनी वाणियों में बार-बार राम शब्द का प्रयोग किया है । किंतु उसका राम अयोध्या के नरपति दशरथ पुत्र श्रीराम नहीं है, उनका राम निराकार परमात्मा है । उनके राम का कोई रूप नहीं है, अरूपी है । किंतु वह सर्वशक्तिमान तथा सर्वव्यापी संचालक है । कबीरदास ने जाति और धर्म के नाम पर चलने वाले अंधविश्वासों, अनाचारों एवं आडंबरों का विरोध किया था । जब-जब वे बुराई देखते थे, तब-तब वे निर्भय-निडर एवं साहसी बन जाते थे । कबीर मानव-स्नेही होने के नाते मनुष्य को धर्म व जाति के आधार पर कभी नहीं बांटा है ।

कबीर मानवतावादी, बुद्धिमान विचारक और दार्शनिक-संत है । वे मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखते हैं। वे स्त्री और पुरुष के रूप में केवल दो ही जाति को मानते हैं। उनकी राय में बाकी सब जाति मनुष्य निर्मित है । मनुष्य निर्मित धर्म व जाति को कबीर नहीं मानते थे । वे ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे जिसमें ऊँच-नीच तथा अमीर-गरीब भेदभाव न हो, ब्राह्मण-शूद्र भेद भी नहीं हो । कबीर भक्त अवश्य है । किंतु वे ब्रह्मा को किसी रूप व आकृति में नहीं स्वीकारते हैं । उनकी परमात्मा निराकर व रूपहीन है, जो सर्वत्र व्याप्त और सर्वशक्तिमान है । कबीर सच्चे मन से परमात्मा का नाम स्मरण करना ही श्रेष्ठ भक्ति मानते हैं । उन्होंने जप, तप, माला जपना, शरीर पर भस्म लगाना, व्रत रखना, तीर्थ यात्रा करना आदि को बाह्यडंबर कहकर विरोध किया है। कबीर ने अपनी कविता को समाज-सुधार का माध्यम बनाया है। सामाजिक पुनर्निर्माण उनका लक्ष्य रहा था। वे अपने कलम को तलवार और स्याही को गोली समझते थे।

कबीर की दृष्टि में विषय वासना या मोह-माया परमात्मा की प्राप्ति के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा है। वे भौतिक सुख को माया जाल समझते थे। वे स्वयं मोह-माया छोड़ा था, दूसरों को ऐसी मोह-माया छोड़ने की आह्वान भी कई बार प्रकट किया है। नारी के प्रति कबीर का मनोभाव उदार है। किंतु उनके उस दृष्टिकोण को व्यापक कहना उचित नहीं है । क्योंकि कबीर मूल रूप में संत है । वे मानते थे कि पुरुष, नारी-मोह या विषय-वासना में गिर पड़ता तो उसकी लक्ष्य प्राप्ति में बाधा पड़ जाती । इसलिए जगह-जगह पर उन्होंने नारी को छोड़ने का उपदेश दिया है । उन्होंने नारी को कामिनी इसलिए बताया है कि उनके आदर्श और स्वभाव संत के अनुकूल थे । यह ध्यान देना योग्य है कि अधिकांश संतों ने स्त्री को भक्ति और मुक्ति यात्रा में बाधा डालने वाली माया के रूप में ही देखा है ।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

कबीर मूल रूप से संत एवं समाज सुधारक है, वे बाद में कवि के रूप में विराजमान है ।

कबीर भक्त अवश्य है, किंतु वे ब्रह्मा के किसी रूप या आकृति को स्वीकारते नहीं हैं ।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

संत कबीर युग स्रष्टा और युगांतरकारी महात्मा हैं। उसके मुंह से समय-समय पर निकली हुई वाणी लाखों-करोड़ों निर्बल दिलवालों को आत्म बल प्रदान कर देती है।

कबीर कभी भी और कदापि क्षणिक और काल्पनिक जगत के यात्री न थे । उन्हें मालूम था कि भौतिक तथा मोह-माया से मिलने वाला आनंद व सुख क्षण भंगुर है । शाश्वत आनंद या सुख भगवत कृपा से उपलब्ध है ।

Recap / पुनरावृत्ति

- महात्मा कबीर हिन्दी निर्गुण भक्ति-धारा के सर्वाधिक महत्वपूर्ण कवि हैं ।
- यह काल उत्तर भारत में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक अधःपतन का काल है ।
- तत्कालीन राजनीतिक वातावरण पूर्ण रूप में संघर्ष पूर्ण रहा । हिन्दू हो या मुसलमान, लोग धर्मांध और पाखंड से विवश थे । चारों ओर आक्रमण, डर, अविश्वास तथा आतंक फैले हुए थे ।
- सहिष्णुता नाममात्र और असहिष्णुता भारी रूप से चल रहे थे ।
- कबीर के काल को संक्रांति काल कहना उचित है ।
- इतिहासकारों के अनुसार कबीर और सिकंदर शाह लोदी समकालीन थे । सिकंदर लोदी सन् 1489 से सन् 1517 तक दिल्ली पर शासन करते थे ।
- हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच ईर्ष्या-द्वेष एवं पारस्परिक आक्रमण भावना जोरों पर थे ।
- हिन्दु बौद्ध धर्म, जैन, शैव एवं वैष्णव के रूप में विभाजित हो चुके थे । धार्मिक नेता ही नहीं, अनुयायी भी पारस्परिक झगड़ों में भाग ले जाते थे । ऐसे अनगिनत संघर्षों के समय, अंधकारपूर्ण समाज की ओर एक ध्रुव तारा के समान कबीर अवतरित हुए।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ज्ञानाश्रयी धारा के कवियों में आप किसको प्रमुख कवि मानते हैं और क्यों?
2. कबीर .... शाखा के सर्वोच्च कवि है ।
3. कबीर पहले दार्शनिक और बाद में ....है ।
4. कबीर का गुरु कौन है ?
5. बीजक के तीन भागों के नाम बताइए ।
6. साखी, सबद और रमैनी का अर्थ समझाइए ।
7. कबीर की भाषा को किसने सधुक्कड़ी संबोधित किया है?
8. कबीर पंथी कौन हैं?
9. 'कबीर वाणी के डिक्टेटर है' - यह किसकी उक्ति है?
10. कबीर की भाषा कौन सी है ?

Answers उत्तर

1. कबीर
2. ज्ञानाश्रयी
3. कवि है ।
4. कबीर का गुरु रामानन्द है ।
5. साखी , सबद और रमैनी
6. साखी का अर्थ साक्षी , सबद का अर्थ शब्द और रमैनी का अर्थ रामायण है ।
7. आचार्य रामचंद्र शुक्ल
8. कबीरपंथी कबीर के शिष्य हैं ।
9. हजारी प्रसाद द्विवेदी
10. कबीर की भाषा सधुक्कड़ी है ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- जाति संप्रदाय के विरुद्ध केरल के महान समाज सुधारक श्रीनारायण गुरु द्वारा किये गये परिश्रम के बारे में अपना विचार प्रकट करते हुए दो पृष्ठों का एक आलेख तैयार कीजिए ।
- जाति संप्रदाय के विरुद्ध अपना आदर्श और दृष्टिकोण व्यक्त करते हुए अपने मित्र के नाम पर एक पत्र लिखिए ।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- कबीरदास का जीवन परिचय ।
- कबीर ज्ञानमार्गी शाखा के सर्वोच्च कवि है ।
- कबीर में समर्पण की भावना अपरिमित है ।

इकाई : 3

प्रेम काव्य परंपरा, कवि और प्रेम काव्य की विशेषताएँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रेम काव्य परंपरा से परिचय प्राप्त करता है ।
- प्रेम काव्य परंपरा के कवि के बारे में समझता है।
- प्रेम काव्य परंपरा की विशेषताओं से अवगत होता है।
- भक्ति काल के प्रेम काव्य परंपरा की परिस्थितियों के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

सूफी रचनाएँ लोकमंगलकारी हैं। इन रचनाओं द्वारा जातिगत, धर्मगत एवं वर्गगत विद्वेष को मिटाने का सरस प्रयास किया गया है। ऐतिहासिक एवं काल्पनिक प्रेम कथाओं की अपेक्षा लोकगाथाओं पर आधारित प्रेम कथाओं में लोकतत्व की मात्रा अधिक है। प्रेम काव्य परम्परा विशुद्ध भारतीय काव्य परम्परा का अनुशीलन करता है।

Key Themes मुख्य प्रसंग

लोकजागरणवादी प्रवृत्ति
मानवतावादी प्रवृत्ति
प्रेम-भावना की प्रवृत्ति
रहस्यवाद
विरह-वर्णन
प्रबन्ध कल्पना
गुरु का सम्मान
प्रकृति-चित्रण
धार्मिक एकता का प्रचार
लोक भाषा की स्वीकृति
कथानक रूढ़ियों का प्रयोग
भारतीय एवं फ़ारसी तत्वों का सामंजस्य

Discussion / चर्चा

4.3.1 प्रेमाश्रयी काव्यधारा

हिन्दी के भक्तिकाल की एक विशिष्ट काव्यधारा है प्रेमाश्रयी काव्यधारा। इसे अनेक नामों से पुकारा जाता है- प्रेममार्गी (सूफी शाखा), प्रेम काव्य, प्रेमगाथा, प्रेम कथानक काव्य, प्रेमाख्यानक, प्रेमाख्यान आदि, लेकिन ये नाम अस्पष्ट हैं, ऐसे नामकरण से प्रेम-चित्रण वाले किसी भी काव्य को इस परम्परा में स्थान मिल जाएगा। जबकि प्रेमाश्रयी काव्यधारा से तात्पर्य मात्र स्वच्छंद प्रेम से है, जिसे अंग्रेजी में 'रोमांस' कहा गया है। इस काव्य परम्परा का सम्बन्ध एक ओर तो विश्व में व्याप्त रोमांस काव्य परम्परा से है, तो दूसरी तरफ इसका सम्बन्ध भारत की काव्य परम्परा से है। इसीलिए इस काव्यधारा का नामकरण 'प्राचीन रोमांसिक कथा काव्य परम्परा' किया है।

हिन्दी में सूफी कवियों ने अपने सम्प्रदाय के प्रचार करने के लिए फारसी मसनबियों के आधार पर किया है। इसी से इसका नाम सूफी काव्य-परम्परा हो गया। साहित्य के इतिहासकार मानते हैं कि इन काव्यों की प्रेम-पद्धति भारतीय न होकर विदेशी है, क्योंकि इनका प्रेम एकान्तिक और इनका आदर्श अरबी प्रेम कहानियाँ हैं।

4.3.2 प्रमुख सूफी कवि

सूफी कवियों में मुल्ला दाऊद (मुख्य रचना - चंदायन), मंझन (मुख्य रचना - मधुमालती), कुतुबन (मुख्य रचना - मृगावती), मलिक मुहम्मद जायसी (मुख्य रचना - पद्मावत महाकाव्य), नन्ददास (मुख्य रचना - रूपमंजरी), असाइत (मुख्य रचना - हंसावली), उसमान (मुख्य रचना- चित्रावली), शेख नबी (मुख्य रचना - ज्ञानदीपक), नुरमोहम्मद (मुख्य रचना - अनुराग बाँसुरी), कासीमशाह (मुख्य रचना - हंस जवाहिर) आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं ।

4.3.3 प्रेमाश्रयी काव्यधारा की विशेषताएँ

इस परम्परा की एक विशेषता है कि ये सामान्यतः नायिकाओं के नाम पर रचनाएँ लिखी गई हैं- जैसे पद्मावती, सत्यवती, मृगावती आदि। कुछ रचनाओं में नायक-नायिका दोनों के नाम हैं - माधवानन्द-कामकन्दला, प्रेम विलास-प्रेमलता, नल- दमयन्ती आदि। कुछ पुस्तकों के नामकरण के अन्य आधार भी हैं। जैसे- अनुराग-बाँसुरी, प्रेम-चिनकारी, प्रेम-दरिया आदि। यह जरूर है कि ऐसी पुस्तकों के नामकरण में नायिकाओं के नाम की प्रमुखता है। कुछ रचनाओं के नाम के अन्त में 'कथा' शब्द आया है।

लोकजागरणवादी प्रवृत्तिः

भक्ति आन्दोलन की लोकजागरणवादी भूमिका के निर्माण में सूफी संतों का महत्व अविस्मरणीय है। इन कवियों ने जाति-पाँति एवं सम्प्रदाय की दीवारों की हद को तोड़ा तथा मनुष्यता का नया दर्शन प्रस्तावित किया। इन सूफी संतों का आम जनता ने मुक्त ह्मदय से स्वागत किया। यही कारण है कि इन्हें भी सन्त कहा गया। कबीर एवं जायसी की परम्परा के सूफियों ने एक साझी लोक-संस्कृति का निर्माण किया, बताया कि सन्त सिर्फ हिन्दू ही नहीं, मुसलमान भी हो सकते हैं।

मानवतावादी प्रवृत्तिः

सूफी सन्त काव्य के सामाजिक नवजागरण को समझने के लिए तथा सामाजिक सांस्कृतिक आधार को समझने के लिए शोषित एवं नीची जातियों, विशेषकर कामगारों, बुनकरों, किसानों, कारीगरों, व्यापारियों एवं सामन्तों के पारस्परिक सामाजिक रिश्तों को समझना जरूरी है, क्योंकि ये सन्त इन्हीं जातियों व समुदाय से आए थे। एक प्रकार से यह पूरी काव्य परम्परा सामन्ती-सवर्णी सोच की, आचार-विचार की, प्रतिक्रिया थी। सन्त-साहित्य का सीधा सम्बन्ध 15वीं, 16वीं, 17वीं सदी के भारतीय समाज के सामन्ती ढाँचे के कमजोर पड़ने से है। भारतीय आमजीवन की सबसे त्रासद भूमिका के रूप में सामन्ती ढाँचे को देखा जा सकता है । इन सन्तों ने धार्मिक विद्वेष के बदले धार्मिक सहिष्णुता एवं मानववाद का प्रचार कर व्यापक जनता की इच्छाओं की पूर्ति की, साथ ही उनकी आहत संवेदनाओं पर स्पर्श किया।

प्रेम-भावना की प्रवृत्ति :

इस काव्य परम्परा के कवियों के सम्पूर्ण चित्रण का केन्द्र 'प्रेम' है। इनकी प्रेम-भावना श्रृंगारिकता का स्पर्श करती हुई भी उसे लौकिक से अलौकिक बना देती है। इनकी प्रेम भावना संघर्ष एवं साहस से अनुप्राणित है, जो सामाजिक मर्यादा को तथा परम्परा को विशेष महत्त्व नहीं देती। इनका प्रेम सौन्दर्यजन्य आकर्षण से शुरू होता है और परिस्थितियों के अनुसार उत्तरोत्तर गम्भीर होता चला जाता है। तथापि, सौन्दर्य का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन आज के पाठक को ग्राह्य नहीं होता। साथ ही इनका प्रेम कभी-कभी वासना एवं कामुकता का आवेग बन जाता है। यह वासना आगे चलकर निखर जाती है और विशुद्ध प्रेम का रूप ले लेती है। काम भावना प्रेम भावना के रूप में बदल जाती है।

विरह-वर्णनः

सूफी काव्य का प्रधान विषय प्रेम है, जिसके अन्तर्गत कवियों ने संयोग का कम, विरह का अधिक चित्रण किया है। वस्तुतः यहाँ विरह-दशा ही वह मनोभूमि है, जो चित्त की समाधि या प्रिय के प्रति ऐकान्तिक निष्ठा लाती है। इन कवियों ने विरह-वर्णन के अन्तर्गत ऋतु-वर्णन, बारहमासा आदि का विशेष वर्णन किया है, पर कभी-कभी यह विरह वर्णन अतिरंजित एवं वायवीय हो गया है, जैसे विरह के ताप से सूर्य का लाल हो जाना, गेहूँ का पेट फट जाना, कौए का काला पड़ जाना, आँखों से आँसू की जगह खून निकलना आदि। इससे कहीं-कहीं विरह-वर्णन बीभत्स हो जाता है। पद्मावत में नागमती का विरह-वर्णन हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है।

रहस्यवाद :

ज्ञान के क्षेत्र में जो अद्वैतवाद है, भावना के क्षेत्र में आकर वही रहस्यवाद हो जाता है। सूफी कवियों का रहस्यवाद भावनात्मक रहस्यवाद है। इन सूफी कवियों को ' प्रेम की पीर'

का कवि कहा गया। इन कवियों ने "रहस्यात्मकता के माधुर्य भाव ' का प्रचार किया, जिसका प्रभाव कबीर एवं कृष्ण भक्ति परम्परा पर स्पष्ट दिखाई देता है। सूफी कव्वाल गाते-गाते बेहोशी की दशा में चले जाते थे। चैतन्य महाप्रभु भी गाते-गाते मूर्छित हो जाते थे। मद, प्याला, उन्माद, ईश्वर का विरह इनके रहस्यवाद की रूढ़ियाँ हैं। कबीर का माधुर्य भाव सूफी प्रभाव से पूर्ण है। दादू, दरिया साहब जैसे निर्गुण सन्तों का ज्ञानमार्ग पूरी तरह सूफी रहस्यवाद है। भारतवर्ष में जब सूफी आए तो उन्हें साधनात्मक रहस्यवाद, हठयोग, तंत्र, रसायन आदि का जाल मिला था। फलतः, हठयोग की अनेक बातों का समावेश सूफियों के रहस्यवाद में मिलता है। सूफियों के रहस्यवाद में प्रेम एवं भावना की गहराई है और साधना की शक्ति है। रमणीय और सुन्दर अद्वैती रहस्यवाद के दर्शन पद्मावत में होते हैं। वस्तुतः भावात्मक रहस्यवाद सूफियों का ही लाया हुआ है।

प्रबन्ध कल्पना :

लौकिक प्रेम कहानियों के माध्यम से अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना के लिए इन कवियों ने प्रबन्ध काव्यों की रचना की है। इन्होंने प्रबन्ध संगठन का हमेशा ख्याल रखा है। इनकी प्रेम कहानियाँ प्रायः एक ही साँचे में ढली हैं, उनमें मौलिकता की कमी है, यान्त्रिकता है। फलतः इनकी प्रबन्ध कल्पना अस्वाभाविक एवं अमनोवैज्ञानिक हो गई है। वस्तुतः सूफी प्रबन्धकाव्य भारतीय काव्यशास्त्र के नियमों-आदर्शों की राह से अलग हैं। इन कवियों ने परम्परा से प्राप्त भारतीय कथानकों में रूढ़ियों का खूब उपयोग किया है। शैतान को माया के समान साधना-श्रेष्ठ करने वाला बताया गया है। पद्मावत में राघव शैतानी शक्ति है। सूफी कवियों की शैली मसनवी है। मसनवी शैली में इन कवियों ने भारतीय प्रेम कथाओं को स्वर दिया है। दोहा, चौपाई, झूलना एवं कुण्डलिया इन कवियों द्वारा प्रयुक्त प्रमुख छंद हैं।

गुरु को सम्मानः

इस परम्परा में गुरु को ईश्वर तुल्य दर्जा प्राप्त है। वही साधक को सिद्धि तक पहुँचाने का माध्यम है। गुरुकृपा से शैतान एवं माया दोनों का नाश होता है।

प्रकृति-चित्रणः

सूफियों का प्रेम-स्वरूप आलम्बन ईश्वर प्रकृति के कण-कण में व्याप्त है। प्रकृति इनके लिए आकर्षणपूर्ण है। 'रवि शशि नखत दीपहीं ओही जोती', ईश्वरीय ज्योति के कारण ही सब कुछ प्रकाशमान है। सूफियों के यहाँ प्रेमियों के विरह में प्रकृति भी समान रूप से दुःख महसूस करती है। वह उनके विरह ताप को कम करने की कोशिश करती है।

धार्मिक एकता का प्रचारः

सूफी-काव्य परम्परा के पूर्व निराशावादी सन्तों ने भक्ति के सामान्य मार्ग की प्रतिष्ठा कर दी थी, धार्मिक एकता का श्रीगणेश कर दिया था, परन्तु उन्हें अपने उद्देश्य में सफलता नहीं मिली थी। समाज में व्याप्त कुरीतियों, कर्मकाण्डों और पाखण्डों के लिए कबीर ने हिन्दू-मुसलमान दोनों को फटकारा। उनके स्वर में खण्डनात्मकता, प्रतिक्रिया एवं चुभने वाली बातें थीं, जिससे हिन्दू-मुसलमान दोनों चिढ़ गए। दूसरी तरफ प्रेमाख्यानक परम्परा के कवियों ने किसी सम्प्रदाय या मतवाद का खण्डन नहीं किया। इनकी पद्धति मनोवैज्ञानिक थी। शुक्ल जी लिखते हैं, "प्रेम स्वरूप ईश्वर को सामने लाकर सूफी कवियों ने हिन्दू-मुसलमान दोनों को मनुष्य के सामान्य रूप में दिखाया और भेदभाव के दृश्यों को हटा कर पीछे कर दिया।" इस काव्य परम्परा में कोई साम्प्रदायिक आग्रह नहीं है। वस्तुतः इन कवियों ने, जिन्हें सूफी कवि कहा गया, भारतीय भक्ति आन्दोलन की व्यापक शक्ति को जनता के ह्रदय तक पहुँचाया है। इनका साहित्य हृदय की मुक्तावस्था से उपजा साहित्य है जो धार्मिक एकता का सन्देश देता है।

लोक भाषा की स्वीकृति :

पूर्वी प्रान्त के सभी सूफी कवियों की भाषा अवधी है, जिसका ठेठ देसी रूप जायसी के पद्मावत में मिलता है। उनकी कविता में पहली बार हिन्दी भाषा सहज काव्य प्रवाह में बहने लगती है। दाऊद एवं कुतुबन की रचनाओं से तुलना करने पर लगता है कि अवधी भाषा काव्य-प्रवाह में कुछ रोड़े अटका रही है, पर जायसी की भाषा बिल्कुल आम जनता की भाषा हो जाती है।

रूढ़ियों का प्रयोग :

इन कवियों ने कथानक को गति देने तथा उसे लोकप्रिय बनाने के लिए परम्परा से प्राप्त भारतीय कथानकों की रूढ़ियों का प्रयोग किया है जैसे चित्रदर्शन, स्वप्नदर्शन, शुक-सारिका संवाद, मन्दिर या उद्यान में नायक-नायिका का मिलन, युद्ध, संघर्ष आदि रूढ़ियाँ सभी सूफी कवियों की रचनाओं में मिलती हैं।

भारतीय एवं फ़ारसी तत्वों का सामंजस्य :

इन कवियों की प्रेम गाथाओं में भारतीय और फ़ारसी कथा-तत्वों का अद्भुत सामंजस्य मिलता है। इन्होंने इस्लाम धर्म और हिन्दू धर्म का सामंजस्य करके कथानक का निर्माण किया। इनकी रचनाओं में फारसी रहस्यवाद तथा भारतीय

अद्वैतवाद का मेल देख सकता है। प्रकृति की समस्त सत्ता में इन्हें ईश्वरीय तत्व की उपस्थिति दिखाई देती है। परमात्मा को प्रियतमा मानना सूफियों की खोज है।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

जायसी मूलतः प्रेम कवि है ।

प्रेम काव्य परम्परा विशुद्ध भारतीय अध्यात्मवादी परम्परा है ।

Critical Overview / आलोचनात्मक

अवलोकन

सूफियों ने लौकिक प्रेम कहानियों के माध्यम से अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना करने के लिए प्रबन्ध काव्यों की रचना की है। प्रेम भावना सूफी काव्य का प्रधान विषय है, जिसके अन्तर्गत कवियों ने संयोग का कम, विरह का अधिक चित्रण किया है।

Recap / पुनरावृत्ति

- सूफी शब्द सूफ शब्द से बना है ।
- सूफ शब्द का अर्थ निकलता है पवित्र ।
- सूफी भक्ति साहित्य के अधिकांश कवि प्रेममार्गी नाम से जाने जाते हैं ।
- सूफी कवियों को प्रेमाश्रयी, प्रेमाख्यानक कवि नाम से भी कहलाते हैं ।
- उनके अनुसार परमात्मा का साक्षात्कार पारस्परिक स्नेह या प्रेम से संपन्न होता है।
- इस्लाम धर्म प्रचार के लिए विदेशों से भारत में आये हुए पंडित-श्रेष्ठों को सूफीवर्य कहलाते हैं ।
- चिश्ती संप्रदाय नक्शबंदी संप्रदाय तथा शत्तारी आदि कई सूफी संप्रदाय भारत में प्रचलित हुए ।
- सूफी असल में रहस्यवादी हैं ।
- सूफी ललित-भौतिक जीवन तथा उच्च विचार और उत्तम आध्यात्मिक जीवन बिताते हैं ।
- धर्म प्रचार के साथ-साथ पूरे समाज की उन्नति तथा भलाई भी उसके लक्ष्य थे ।

Objective types Questions   वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रेमाश्रयी धारा के सर्वप्रमुख कवि कौन है?
2. प्रेममार्गी धारा के सर्वप्रमुख महाकाव्य ....है ।
3. सूफ शब्द का अर्थ क्या है ?
4. प्रेममार्गी धारा के कवि किस आदर्श के रहे थे?
5. सूफी कवियों को किन -किन नाम से जाने जाते हैं ?
6. सूफी भक्ति साहित्य के अधिकांश कवि किस नाम से जाने जाते हैं ?
7. सूफी कवियों की भाषा कौन सी है?
8. कुतुबन की रचना क्या है?
9. पद्मावत प्रबंध काव्य है या मुक्तक काव्य?
10. सूफी कवियों के अनुसार परमात्मा का साक्षात्कार कैसे संभव है ?

Answers उत्तर

1. मलिक मुहम्मद जायसी
2. जायसी की पद्मावत
3. सूफ शब्द का अर्थ है पवित्र ।
4. प्रेमाश्रयी काव्यधारा के कवियों का आदर्श अरबी प्रेम कहानियाँ हैं।
5. सूफी कवियों को प्रेमाश्रयी, प्रेमाख्यानक कवि नाम में भी जाने जाते हैं ।
6. सूफी भक्ति साहित्य के अधिकांश कवि प्रेममार्गी नाम से जाने जाते हैं ।
7. सूफी कवियों की भाषा अवधी है ।
8. मृगावती
9. पद्मावत प्रबंध काव्य है ।
10. सूफियों के अनुसार परमात्मा का साक्षात्कार पारस्परिक स्नेह या प्रेम से संपन्न होता है।

Assignment प्रदत्त कार्य

- सूफी भक्ति साहित्य के अधिकांश कवि प्रेममार्गी नाम से जाने जाते हैं , अपना मत प्रकट कीजिये ।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- प्रेमाश्रयी काव्यधारा की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।
- सूफी कवि असल में रहस्यवादी है, व्यक्त कीजिए।

इकाई : 4

राम काव्य परंपरा और प्रमुख कवि

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी के राम भक्ति धारा के प्रतिनिधि कवि और कविता के सौंदर्य शास्त्र समझता है ।
- तुलसीदास की व्यक्तित्व, कृतित्व, आदर्श, दृष्टिकोण, राम पर अनन्य भक्ति, तुलसी का समन्वय भावना आदि जानकारी प्राप्त करता है ।
- तुलसीदास की भाषा-शैली, तुलसी की कविता में छंद, अलंकार, लोकनायक का रूप, भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं साहित्य पर तुलसी की देन आदि समझता है ।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

गोस्वामी तुलसीदास भारतीय संस्कृति-सभ्यता और जनमानस के महाकवि के पद पर विराजमान हैं। तुलसी केवल काव्य सृष्टा ही नहीं है जीवन सृष्टा भी रहे हैं। तुलसीदास मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के नायक है और पथ-प्रदर्शक भी । तुलसीदास लोक नायक के रूप में जाने जाते हैं । वे युगांतरकारी विश्व कवि के विशिष्ट स्थान पर विराजमान हैं ।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

तुलसी सगुणोपासक, किंतु परिवर्तनकारी कवि हैं ।
तुलसी सर्वाराध्य श्रीराम के भक्ति में मग्न रहे हैं ।
तुलसी के राम लोक हितैषी-लोक मंगलकारी राम हैं ।
तुलसी राम भक्ति काव्य धारा के सबसे बड़े और प्रतिनिधि कवि हैं ।
तुलसी के राम वाल्मीकि, तमिल कवि कंब, मलयालम कवि एषुत्तच्चन के राम नहीं हैं, तुलसी के राम लोक-नायक हैं ।
तुलसी ने समन्वय के साथ-साथ, सभ्यता, सामाजिकता, मर्यादा, मानवतावाद आदि उच्च विचारों को भी स्थान दिया है ।
समन्वयकारी कवि ।
तुलसी के काव्यों में भावपक्ष के समान कलापक्ष भी सबल और समृद्ध है ।
तुलसी ने अपने काव्य में तत्कालीन युग के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक स्थिति की आलोचना करके प्रशंसनीय रूप में उसका चित्रण किया है ।
तुलसी ने प्रकृति का चित्रण आलंबन और उद्दीपन रूप में किया है ।
तुलसी कृत श्री रामचरितमानस करोड़ों हिन्दुओं का धर्म ग्रंथ है ।
'रामचरितमानस' विश्व की श्रेष्ठ रचनाओं में एक है ।
तुलसी की भक्ति दास्य-भक्ति है ।

Discussion / चर्चा

4.4.1 राम काव्य परंपरा और तुलसीदास ।

लोकनायक तुलसीदास के जन्म स्थान के बारे में भी मतभेद है । अधिकांश विद्वान उनका जन्म सन् 1532 में उत्तर प्रदेश के वाँदा (वर्तमान नाम - चित्रकूट) जिले के राजापुर मानते हैं । तुलसी के बचपन का नाम रामबोला था । गुरु बाबा नरहरिदास ने रामबोला को तुलसीदास नाम दे दिया है । उनके पिता का नाम आत्माराम दूबे तथा माता हुलसी थी ।

तुलसीदास का गुरु नरहरिदास था । उन्होंने उसे सुचारु शिक्षा प्रदान की । उनकी देखरेख में तुलसी ने वेद, दर्शन, काव्य, ज्योतिष आदि का अध्ययन किया । महात्मा तुलसीदास की मृत्यु सन् 1623 में उत्तर प्रदेश के काशी में हुई।

तुलसी अपना सम्पूर्ण जीवन श्रीराम की भक्ति के उत्कर्ष के लिए व्यतीत किये थे । राम भक्ति में तल्लीन होकर वे एक तपस्वी के वेश में बद्रीनाथ, द्वारका, पुरी, तथा हिमालय का भ्रमण करते रहे थे । लेकिन उन्होंने अपने अधिकांश समय काशी, प्रयाग, अयोध्या और चित्रकूट में बिताये थे।

तुलसीदास की रचनाएँ निम्न लिखित हैं -

1. रामचरितमानस 2. गीतावली 3. कवितावली 4. बरवै रामायण 5. दोहावली या दोहा रामायण 6. चौपाई रामायण 7. सतसई 8. पंचरत्न 9. जानकी मंगल 10. पार्वती मंगल 11. वैराग्य संदीपनी 12.रामलला नहछू 13.श्री रामाज्ञा प्रश्न 14.संकटमोचन 15.विनय पत्रिका 16.हनुमानबाहुक 17.कृष्ण गीतावली।

रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं तुलसीदास। उन्होंने मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीराम चन्द्र जी का आदर्श जीवन अत्यंत सुन्दर रूप से रामचरितमानस में चित्रित किया है। उन्होंने रामचंद्र को आराध्य माना और 'रामचरित मानस' के द्वारा राम-कथा को घर-घर में पहुंचा दिया। तुलसीदास हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। समन्वयवादी तुलसीदास में लोकनायक के सब गुण मौजूद थे। आपकी पावन और मधुर वाणी ने जनता के तमाम स्तरों को राममय कर दिया। उस समय प्रचलित तमाम भाषाओं में रामचरितमानस का अनुवाद हुआ। जन-समाज के उत्थान में आपने सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य किया है। इस शाखा में अन्य कोई कवि तुलसीदास के समान उल्लेखनीय नहीं है तथापि अग्रदास, नाभादास तथा प्राणचंद चौहान भी इस श्रेणी में आते हैं। जिस युग में तुलसीदास का जन्म हुआ था उस युग के उत्तर भारतीय समाज धर्म, जाति, राजनीति, संस्कृति आदि के नाम पर विभाजित थे । हिन्दू और मुसलमान के रूप में ही नहीं, वैष्णव, शूद्र, शाक्त आदि के नाम पर भी विविध प्रकार ईर्ष्या-द्वेष-आपसी अलगाव बढ़ता जा रहा था। समाज अवर्णो-सवर्णो के रूप में विभक्त थे । तब कर्मकाण्ड और ब्राह्मणवाद जोरों पर था । शूद्रों की दशा शोचनीय थी। उन्हें संस्कृत, वेद तथा उपनिषद आदि पढ़ने में रोक लगी हुई थी । शूद्रों को हरि नाम भजन करने का अधिकार न था । तात्पर्य यह है कि निम्न जाति के लोगों को देव और देव मंदिर निषिद्ध था ।

तुलसी के समय मुगल शासक एक ओर भोग-विलास में डूबकर रहे थे तो दूसरी ओर भारतीय वेद-दर्शन मरे पड़े थे। निर्गुण भक्त निराकार ईश्वर के पीछे दौड़ रहे थे। वैष्णव तो कर्मकाण्ड एवं आडंबर में निमग्न थे। ऐसी विपरीत परिस्थितियों को सामना करते हुए लोक मंगल की भावना को लेकर साहित्य-संस्कृति क्षेत्र की ओर तुलसी का पदार्पण हुआ।

तुलसीदास के समकालीन कई सगुण भक्त और निर्गुण भक्त कवि थे। तुलसी के अलावा रामभक्त कवियों की श्रेणी में रामानंद, अग्रदास, ईश्वर दास, नाभादास, नरहरिदास आदि के नाम आते हैं। राम भक्ति धारा में अग्रदास का नाम सर्वोच्च आता हैं। अग्रदास तुलसी के समकालीन थे । उनके नाम पर चार ग्रंथ उपलब्ध हैं - 1. हितोपदेश, 2.ध्यान मंजरी, 3.रामध्यान, 4.कुंडलिया ।

तुलसीदास के समय हिन्दी साहित्य मुख्य रूप में सगुण भक्ति धारा (राजभक्ति तथा कृष्ण भक्ति) और निर्गुण भक्ति धारा (ज्ञानमार्गी तथा प्रेममार्गी) के रूप में बह रही थी । तुलसीदास सगुण-राम भक्ति के पोषक थे।

रामचरितमानस

रामचरितमानस तुलसी का कीर्ति स्तंभ है। उन्होंने अयोध्या में रहकर इसकी रचना की। इस विश्व प्रसिद्ध ग्रंथ अवधी भाषा में लिखी गई। इस प्रबंध काव्य का शुभारंभ उन्होंने सन् 1574 में, चैत्र मास के रामनवमी पर अयोध्या में किया था। दो साल, सात महीने और छब्बीस दिन का समय लगाकर इन्होंने इसे पूरा किया। रामचरितमानस विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय काव्यों में 46 वाँ स्थान में विद्यमान है। रामचरित मानस काण्डों में विभक्त है - 1.बालकांड 2.अयोध्याकांड 3.अरण्यकांड 4.किष्किंधाकांड 5.सुंदरकांड 6.लंकाकांड 7.उत्तरकांड ।

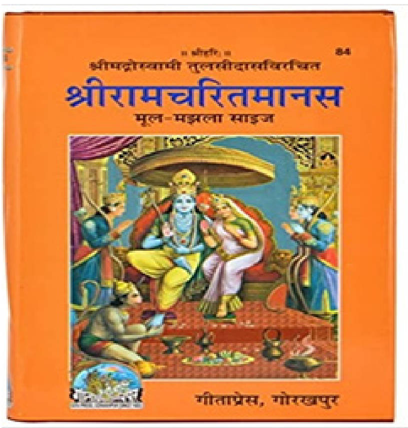

विनय पत्रिका

विनय पत्रिका का रचना काल 1574 से 1622 के

बीच के समय माना जाता है। रामगीतावली नाम से भी इसे पुकारते हैं। यह मुक्तकों का संग्रह है। इन मुक्तकों के द्वारा तुलसीदास ने अपना आत्म निवेदन अपने आराध्य भगवान श्रीराम को अर्पित किया है।

गीतावली

इसका रचना काल 1573-1613 के बीच मानते हैं । यह ग्रंथ पदावली रामायण के नाम में भी जाना जाता है।

कवितावली

कवितावली का रचना काल सन् 1574 से 1623 के बीच माना जाता है। इसकी कथा सात कांडों में विभाजित है। इस मुक्तक काव्य की भाषा ब्रजभाषा है ।

कृष्ण गीतावली

कृष्ण गीतावली का रचना काल सन् 1586-1603 के बीच माना जाता है। यह श्रीकृष्ण के जीवन से संबंधित गीतों का संग्रह है।

बरवैरामायण

बरवैरामायण का रचना काल सन् 1573-1623 के बीच माना जाता है। एकरूपता के बिना मिलने वाले इसमें बरवै छंद में राम की कथा बताई गई है। इसकी राम कथा सात कांड में विभक्त है। इस ग्रंथ में बरवै छंद में लिखे गये 69 मुक्तक उपलब्ध हैं।

दोहावली या दोहा रामायण

दोहावली, दोहा रामायण नाम में भी जाना जाता है। इसमें संगृहीत दोहे में कुछ तुलसी की अन्य रचनाओं में भी देख सकते हैं । इसमें कुल 573 दोहे संगृहीत हैं ।

जानकी मंगल

इसका रचना काल सन् 1572-73 माना जाता है। इसमें प्रयुक्त भाषा अवधी है। जानकी मंगल में श्रीराम और सीता देवी के विवाह को विषय-वस्तु बना दिया है।

पार्वती मंहल

पार्वती मंगल का रचना काल 1582 माना जाता है। यह अवधी भाषा में लिखी गई रचना है। इसकी शैली छंद और दोहा है। यह सोहर और हरिगीतिका छंदों में रचा गया काव्य है। तुलसी ने इसमें शिव-पार्वती का विवाहोत्सव का चित्रण किया है।

वैराग्य संदीपनी

इसका रचना काल सन् 1569-70 के बीच मानी जाती है। तुलसी ने इसमें वैराग्य के स्वरूप का चित्रण किया गया है।

रामलला नहछू

इस ग्रंथ का रचना काल सन् 1570-72 को मानते हैं। यह सोहर शैली में लिखी गई एक छोटी-सी कृति है। रामलला नहछू में शुभ अवसर पर नख काटने के रीति को व्यक्त किया गया है।

रामाज्ञाप्रश्न

माना जाता है कि तुलसी ने इसकी रचना सन् 1570 -71 में की है। यह ब्रजभाषा में लिखा गया काव्य है। इसमें सात सर्ग है, जिसमें राम-कथा कही गई है । इसमें रामचरितमानस में उपेक्षित सीता निर्वासन का प्रसंग को स्थान दिया है।

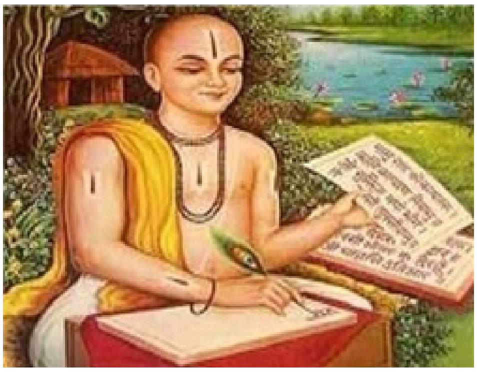

काव्यगत विशेषताएँ

तुलसीदास के काव्यों में भाव पक्ष के समान कला पक्ष भी सबल, संपन्न और समृद्ध है। साधारणतः काव्य की महत्ता उसका भाव पक्ष और कला पक्ष के महत्व के अनुसार मानी जाती हैं। इस दृष्टि में देखते समय लगता है कि निस्संदेह तुलसी हिन्दी के उच्च कोटि के कवि हैं। उनके साहित्य में व्याप्त सुगठित भाव पक्ष और कला पक्ष उन्हें हिन्दी साहित्य के महान और सर्वश्रेष्ठ कवि बना देता है।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

तुलसीदास सगुण-राम भक्तिधारा के पोषक है ।

तुलसी समन्वयकारी कवि है ।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

तुलसी ने समन्वय के साथ-साथ, सभ्यता, सामाजिकता, मर्यादा, मानवतावाद आदि उच्च विचारों का भी स्थान दिया है ।

Recap / पुनरावृत्ति

- तुलसीदास पहले भक्त है और बाद में विश्व प्रसिद्ध काव्यकार ।
- उसकी भक्ति शाश्वत एवं लाखों-करोड़ों लोगों को आश्रय-अवलंब प्रदान करने वाली होती है ।
- उसका आश्रय और अवलंब यह है कि आदर्शनिष्ठ एवं मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र का यशोगान और उन पर आत्मसमर्पण।
- तुलसीदास की राम भक्ति दास्य भक्ति है।
- उनका राम सृष्टि, स्थिति और संहार का सर्वाधिकारी है। अपने आराध्य के आगे तुलसी एक तुच्छ, साधारण भक्त-व्यक्ति प्रतीत होता है।
- तुलसीदास का राम निर्गुण भक्त कवियों का राम नहीं है । तुलसी का राम सगुणी है, वह अयोध्या नरपति दशरथ का नंद है, देवी सीता के पति हैं, लक्ष्मण-भरत तथा शत्रुघ्न का भाई है, समस्त जीव-अजीवों के मित्र है।
- तुलसीदास का राम अयोध्या-मिथिला के लोगों के ही नहीं, संपूर्ण प्रकृति जीव-जंतुओं के बंधु-बाँधव है । उस लोक रक्षक व मंगलकारी रामचंद्र का यश-गान खंड-खंड में, पंक्ति-पंक्ति में, वाक्य-वाक्य में, शब्द-शब्द में तुलसी ने किया है।
- तुलसी की भाषा में प्रसाद व माधुर्य गुण की प्रमुखता होती है।
- उनकी भाषा में कथ्य के अनुकूल वाक्य-विन्यास, शब्दों का उपयुक्त विन्यास, लोकोक्तियों तथा मुहावरों का सुनिश्चित प्रयोग, नाद सौन्दर्य, चित्रात्मकता आदि भाषा-संबंधी अनेक गुण देखने को मिलता है । लगता है कि यह उनकी भाषा की प्राण वायु है।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. तुलसीदास का कीर्ति स्तंभ क्या है?
2. तुलसीदासी का असली नाम क्या है?
3. तुलसीदास के गुरु कौन हैं?
4. रामबोला को किसने तुलसीदास नाम दे दिया?
5. तुलसी ने कहाँ रहकर रामचरितमानस की रचना की?
6. तुलसी किस काव्य धारा के कवि हैं?
7. रामचरितमानस कितने काण्डों में विभक्त हैं?
8. अवधी कहाँ प्रचलित भाषा थी?
9. तुलसी के काव्य की विशेषता क्या है ?
10. तुलसीदास ने अपनी रचना के मूल उद्देश्य के रूप में किसे स्वीकार किया हैं ?

Answers उत्तर

1. रामचरितमानस
2. रामबोला
3. गुरु बाबा नरहरिदास

4. रामबोला को उनके गुरु बाबा नरहरिदास ने तुलसीदास नाम दे दिया।
5. अयोध्या में रहकर तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना की।
6. रामभक्ति काव्यधारा के कवि हैं।
7. रामचरितमानस 7 काण्डों में विभक्त हैं।
8. अवधी 'अवध' में प्रचलित भाषा थी।
9. संगीत्मकता तुलसी के काव्य की विशेषता है।
10. तुलसीदास ने अपनी रचना का मूल उद्देश्य के रूप में लोकमंगल की भावना को स्वीकार किया है।

Assignment प्रदत्त कार्य

- हिन्दी साहित्य में तुलसी का स्थान निर्धारित कीजिए।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- तुलसीदास के जीवन और रचनाओं के मुख्य संदर्भों का उल्लेख कीजिए।

इकाई : 5

कृष्ण काव्य परंपरा और प्रमुख कवि

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- मध्यकालीन-भक्तिकालीन हिन्दी कविता के सौंदर्य शास्त्र समझता है।
- सूरदास के समय की सामाजिक, राजनीतिक, भक्ति संबंधी परिस्थितियाँ, कृष्ण भक्ति धारा का महत्व, कृष्ण भक्त कवियों के सामाजिक दृष्टिकोण आदि पर जानकारी प्राप्त करता है ।
- अष्टछाप के कवियों के स्थान एवं उनकी मुख्य रचनाओं की विशेषताएँ समझता है ।
- महाकवि सूरदास के जन्म, व्यक्तित्व, भक्ति, कृतित्व, आदर्श या दृष्टिकोण, उसकी देन तथा मृत्यु आदि को समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा के एक शाखा है कृष्ण भक्ति । कृष्ण, भगवान विष्णु के अवतार हैं । कृष्ण के चरित्र के आधार पर रचित रचना कृष्ण भक्ति साहित्य के नाम से जाने जाते हैं । कृष्ण भक्ति काव्य धारा के आधार ग्रंथ श्रीमद् भागवत है । काशी के सन्यासी वल्लभाचार्य ने अपने इष्ट देव कृष्ण की भक्ति के प्रचार-प्रसार का नेतृत्व दिया था । वल्लभाचार्य द्वारा संस्थापित पुष्टि मार्ग कृष्ण भक्ति धारा को गतिशील बना दिया है । अधिकांश कृष्ण भक्त कवियों ने वृंदावन में प्रचलित ललित-कोमल ब्रजभाषा को काव्य-भाषा के रूप में स्वीकार किया है । कृष्ण भक्ति के प्रचार-प्रसार में आचार्य वल्लभ एवं उनके सुपुत्र गोसाई विट्ठलनाथ ने महत्वपूर्ण योगदान किया है ।

Key Themes मुख्य प्रसंग

महात्मा सूरदास हिन्दी के सगुण भक्ति को प्रवाहमान बनानेवाले कृष्ण भक्त कवियों में सर्वश्रेष्ठ है।
सूरदास श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक तथा ब्रजभाषा के सर्वोच्च कवि है । उन्हें हिन्दी साहित्य के सूर्य कहा जाता है ।
सूरदास के गुरु है महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य ।
सूरदास अंधे थे ।
सूर को स्वामी विट्ठलनाथ ने पुष्टि मार्ग का जहाज़ कहा है ।

Discussion / चर्चा

4.5.1 कृष्ण काव्य परंपरा और सूरदास

भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का मेरुदंड है। महात्मा सूरदास भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा के सर्वश्रेष्ठ कृष्ण भक्त कवि है। कवि सूर की भाषा ब्रजभाषा है। उनकी अंधता के बारे में भी विद्वानों में मतभेद है । कुछ लोग उसे जन्मांध मानते हैं तो और कुछ लोगों के मत में पहले सूर की आँखें थीं, बाद में वे अंधे हुए । इस विषय में डॉ. श्यामसुन्दरदास ने अपना मत प्रकट किया है। सूर वास्तव में जन्मान्ध नहीं थे, क्योंकि श्रृंगार तथा रंग-रूपादि का जो वर्णन उन्होंने किया है वैसा कोई जन्मान्ध नहीं कर सकता। अठारह वर्ष की उम्र में सूरदास यमुना नदी के तट पर स्थित पवित्र स्नान स्थल गाऊघाट पहूँचकर वल्लभाचार्य का शिष्य बन गया। गुरु ने उसे भागवत लीला का गुणगान करने की उपदेश दिए। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सूर की काव्य कृतियों की विशेषता प्रकट करते हुए लिखा है कि सूरदास जब अपने प्रिय विषय का वर्णन शुरू करते हैं तो मानो अलंकार शास्त्र हाथ जोड़कर

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

उनके पीछे-पीछे दौड़ा करता हैं । उपमाओं की बाढ़ आ जाती है और रूपकों की बारिश होने लगती हैं । साथ ही सूरदास ने भगवान कृष्ण के बाल्यकाल का अत्यंत मनोरम एवं सजीव वर्णन किया है।

सूरदास

श्रृंगार एवं वात्सल्य रस के चित्रण में सूरदास अद्वितीय है। वैसे बालक-मनोविज्ञान का आविष्कार सूर ने कितनी सतर्कता से किया था, उतना अन्यत्र दुर्लभ है ।

श्रीकृष्ण के जीवन के महत्वपूर्ण संदर्भो का चित्रण सूर ने अपने ग्रंथों में अत्यंत आकर्षक एवं मार्मिक ढंग में किया है । ऐसा अनुपम वर्णन हिन्दी में अन्य किसी कवि ने नहीं किया है । काव्य में श्रृंगार एवं वात्सल्य रस के विन्यास में सूर सिद्धहस्त है । इसलिए उसे श्रृंगार एवं वात्सल्य रस के साम्राट कहते हैं । सूर के काव्यों में ब्रजभाषा की कोमलकांत पदावली नैसर्गिक रूप में बहती है । भाषा में ऐसा लालित्य एवं प्रभाव दूसरे कवियों में देखने को नहीं मिलता है । अतएव यों कहिए कि सूर हिन्दी साहित्य के सूरज है ।

सूरदास के ग्रंथ

सूरदास के तीन ग्रंथ प्रामाणिक माना जाता है -

1. सूरसागर
2. सूरसावली
3. साहित्य लहरी

1. सूरसागर

सूरसागर इतिहास काव्य श्रीमद्भागवत के आधार पर रचा गया महाकाव्य है । विद्वानों के मत में इसमें सवा लाख पद थे । अभी तक लगभग पाँच हजार पद संकलित कर प्रकाशित हो चुका है । इस महाकाव्य में बारह स्कन्ध हैं । इसका मुख्य वर्ण्य विषय श्री कृष्ण लीला है। साथ ही साथ विनय, वैराग्य, सत्संग एवं गुरु महिमा से संबंधित पद भी इसमें उपलब्ध हैं।

2. सूर सारावली

सूर सारावली में भगवान कृष्ण कुरुक्षेत्र से लौटने के बाद की घटनाएँ, संयोग लीला, वसंत हिंडोला एवं होली आदि प्रसंगों के वर्णन हुए हैं ।

3. साहित्य लहरी

साहित्य लहरी एक लघु ग्रंथ है । इसमें रस, अलंकार और नायिका-भेद आदि का वर्णन हुआ है। इसका मुख्य रस श्रृंगार है ।

मृत्यु

वल्लभाचार्य के पौत्र तथा विठ्ठलनाथ के पुत्र गोकुलनाथ कृत चौरासी वैष्णवन की वार्ता के अनुसार सूरदास की मृत्यु सन् 1584 में गोवर्धन पहाड़ के निकट स्थित पारसौली (उत्तर प्रदेश में मथुरा जिले के गोवर्धन ग्राम से एक सवा मील दूर स्थित गाँव) में हुई ।

सूरदास के समय की सामाजिक परिस्थितियाँ

आदिकाल में उत्तर भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना हुई थी। हिन्दू लोग धीरे-धीरे इस्लाम धर्म की ओर आकृष्ट हुए थे। धर्मांतरण जोरों पर चल रहे थे। हिन्दुओं में अंधविश्वास, जाति-प्रथा, छुआछूत, विधवाओं के प्रति अन्यायपूर्ण व्यवहार आदि फैले थे । अमानवीय व्यवहार सह सहकर निम्न जाति के लोगों के जीवन असह्य हो चुकी थी। बाल-विवाह, सती-अनुष्ठान आदि दुराचार चारों ओर प्रचलित थी । स्त्रियों को शिक्षा नहीं देती थी। पुरुष बहु विवाह कर आडंबरपूर्ण जीवन बिताते थे । इस समय हिन्दू समाज की अवस्था बड़ी शोचनीय थी । भक्ति काल के पूर्वार्द्ध में समाज दो वर्गों में विभक्त हो चुकी थी । पहला उच्च कुल जात बादशाह, राजा, सेठ, साहूकार और सामंत आदि है । दूसरे वर्ग में किसान, मजदुर, पद-दलित जैसे साधारण लोग आते थे । तब सामाजिक बदलाव एक अनिवार्य विषय बना था ।

सूरदास के समय की राजनीतिक परिस्थितियाँ

राजनीतिक दृष्टि से देखें तो भक्ति काल में उत्तर भारत में तुगलक वंश से लेकर मुगल वंश के शासन काल रहे थे । इस काल में अधिकांशतः तुगलक और लोदी वंश के शासकों ने शासन करते थे । ये शासक अन्यायी और अधिकार-मोही थे। उनमें सांप्रदायिक चिंता प्रबल थी । एक ओर बादशाह अलाउद्दीन खिलजी जैसे शासक अत्याचार करते थे, दूसरी ओर साम्राज्य का सीमा विस्तार कर देते थे। इस समय कई हिन्दुओं को इसलाम की ओर धर्मांतरण किया करते थे। भक्ति कालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ हिन्दुओं के लिए अनुकूल न था। भक्ति काल के शासक किसी न किसी बात पर परस्पर युद्ध करते थे । इन युद्धों के कारण धर्म और सीमा भी विस्तार होता था। इस समय को अशांति का काल कहना सर्वथा उचित हैं।

सूरदास के समय की धार्मिक परिस्थितियाँ

भक्तिकाल धार्मिक दृष्टि में उन्नति का काल है। भक्ति आंदोलन का शुभारंभ दक्षिण भारत में हुआ। अतएव भक्ति आंदोलन दक्षिण भारत से उत्तर की ओर प्रवाहित हुआ। तब हिन्दुओं में ही नहीं, मुसलमानों में भी धर्म के नाम पर कुछ अंधविश्वास जमे हुए थे। पूजा, नमाज, तीर्थ यात्रा, माला-जप, रोजा आदि कार्यक्रम भारी मात्रा में चलता था। पथ भ्रंष्ट लोगों में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों और आडंबरों को रोकने में तत्कालीन संतों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । इस कलुषित परिस्थिति में कबीर ने समाज सुधार का, तुलसीदास ने समन्वयवाद का और सूरदास ने भगवान कृष्ण का लोकरंजन रूप वर्णन द्वारा तत्कालीन वातावरण को बदलने के लिए भरसक प्रयत्न किया है।

सूरदास के समय की आर्थिक परिस्थितियाँ

सूरदास के समय लोगों की आर्थिक स्थिति बड़ी शोचनीय थी। इस समय के अधिकतर लोगों को जीने के लिए आवश्यक आमदनी न थी । खेतीबारी मुख्य नौकरी थी। धनिकों को कोई दुख-कष्ट न था। इसलिए धनिकों का जीवन आडंबर पूर्ण है तो दरिद्र अत्यंत संकटपूर्ण जीवन बिता करते थे।

सूरदास के समय की सांस्कृतिक परिस्थितियाँ

इस काल को समन्वय संस्कृति के विकास का काल कहना उचित है। इस समय के कवियों ने भक्ति से उत्पन्न साहित्य को संगीत से जोड़ा था । तब संगीत और चित्रकला का खूब विकास हुआ था। मुगल शासक ने कला और संगीत के प्रोत्साहन किया था। हिन्दी के भक्ति काल साहित्य और सांस्कृतिक एकता का ज्वलंत उदाहरण हैं।

सूरदास के समय की साहित्यिक परिस्थितियाँ

सूरदास के समय की राजभाषा फारसी थी । उच्च वर्ग के हिन्दू लोग संस्कृत भाषा का अध्ययन करता था। उर्दू, सैनिकों की भाषा के रूप में विकसित हुए थे। वृंदावन में ब्रजभाषा और अवध में अवधी भाषा का प्रचार था। संत कवियों की बोलचाल की भाषा सधुक्कड़ी नाम पर उसके बीच प्रचलित थी ।

भक्ति काल में विविध प्रकार के काव्यों की रचना हो चुकी थी, जिसमें प्रबंध, मुक्तक और गीतिकाव्य मिल जाती है। इस काल के कवि निर्गुण और सगुण भक्त थे। यह कहना अनुचित न होता है कि इस समय के साहित्य मन, मस्तिष्क और हृदय की अशांति को शांति के रूप में परिवर्तित कर देता था।

4.5.2 अन्य प्रमुख कवि

वल्लभाचार्य

पुष्टिमार्ग का संस्थापक महाप्रभु वल्लभाचार्य कृष्ण भक्ति धारा के महान नायक हैं। आचार्य वल्लभ का जन्म सन् 1479 में तथा मृत्यु 1531 में माना जाता है। उन्होंने अपने अनुयायियों को भगवान कृष्ण की सेवा में अपना सर्वस्व समर्पित करने का प्रोत्साहन किया । उनकी सेवा कहे जाने वाले कृष्ण भक्ति पंथ आगे पुष्टिमार्ग के नाम से प्रसिद्ध हुए।

व्यास सूत्र भाष्य, जैमिनी सूत्र भाष्य, भागवत टीका सुबोधिनी, पुष्य प्रवल मर्यादा, सिद्धांत रहस्य आदि कई कृतियाँ वल्लभाचार्य के नाम पर मिलती है । वे भाषा के रूप में संस्कृत और ब्रजभाषा को स्वीकार किया है ।

गोसाई विट्ठलनाथ

गोसाई विट्ठलनाथ महाप्रभु वल्लभाचार्य का द्वितीय पुत्र एवं कृष्ण भक्ति धारा के श्रेष्ठ सन्यासी भी है। उनका जन्म सन् 1515 में काशी में और मृत्यु सन् 1585 में मथुरा के गोवर्धन गिरी की गुफा में हुआ है । वल्लभ संप्रदाय के प्रवर्तक और अष्टछाप के स्थापक के रूप में हिन्दी साहित्य में विट्ठलनाथ का महत्वपूर्ण स्थान होता है। विट्ठलनाथ संगीत और चित्रकला में पारंगत थे। वे भक्ति मार्ग में जाति और वर्ण नहीं मानते थे। विट्ठलनाथ ने अपने पिताजी के चार शिष्यों (सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास तथा कृष्णदास) और अपने चार शिष्यों (चतुर्भुजदास, गोविन्दस्वामी, नंददास तथा छीतस्वामी) को जुड़ाकर अष्टछाप नामक आठ कवियों का एक संघ स्थापित किया। अष्टछाप आगे कृष्ण भक्ति धारा को तेज़ी

से प्रवहमान बना दिया।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

भक्तिकाल धार्मिक दृष्टि में उन्नति का काल है ।

भक्ति काल में विविध प्रकार के काव्यों की रचना हो चुकी थी।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

भक्तिकाल के साहित्य मन, मस्तिष्क और हृदय की अशांति को शांति के रूप में परिवर्तित कर देता था । भक्ति काल समन्वय संस्कृति के विकास काल है।

Recap / पुनरावृत्ति

- भक्ति काल के स्वर्णिम चमक के पीछे कई संतों, आचार्यों, महात्माओं एवं कवियों का महत्वपूर्ण योगदान हुआ है।
- सगुण या निर्गुण हो, राम भक्त हो या कृष्ण भक्त, ज्ञानमार्गी हो या प्रेममार्गी-उनके निस्वार्थ कर्म से भक्ति-मुक्ति तथा शांति सर्वत्र व्याप्त हुई।
- अलग-अलग धारा बनकर बहने पर भी उसके उद्‌भव और विलयन एक ही स्थान पर हुए। भक्ति अलग-अलग धारा बनकर बहने पर भी सब धाराएँ एक ही परमात्मा में विलीन हो गयी ।
- सूरदास वल्लभ संप्रदाय व अष्टछाप के सर्वोच्च महात्मा एवं कवि हैं
- सगुण भक्त सूर ने श्रीकृष्ण का जैसा मनोरम वर्णन किया है वैसा और किसी कवि ने नहीं किया है।
- उनकी कृष्ण भक्ति पुष्टि मार्गीय है, जिसकी तुलना करना व्यर्थ है।
- सूर का लक्ष्य कृष्ण भक्ति की पुष्टि और प्रचार-प्रसार है।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सूरदास हिन्दी साहित्य में किस नाम से जाने जाते थे?
2. सूर की अंधता के बारे में डॉ.श्यामसुदर दास का कथन क्या है?
3. सूरदास के प्रामाणिक ग्रंथों के नाम बताइए।
4. सूरसागर के आधार ग्रंथ का नाम बताइए।
5. सूरसागर कितने स्कंधों में विभक्त है?
6. साहित्य लहरी का मुख्य रस कौन सा है ?
7. वल्लभाचार्य के कृष्ण भक्ति पंथ किस नाम से प्रसिद्ध है ?
8. सूरदास के समय की राजभाषा कौन सी थी ?

Answers उत्तर

1. हिन्दी साहित्य के सूर्य कहे जाते थे ।
2. "सूर वास्तव में जन्मान्ध नहीं थे, क्योंकि श्रृंगार तथा रंग-रुपादि का जो वर्णन उन्होंने किया है वैसा कोई जन्मान्ध नहीं कर सकता।"
3. सूरसागर ,सूरसावली, साहित्य लहरी
4. सूरसागर इतिहास काव्य श्रीमद्‌भागवत के आधार पर रचा गया महाकाव्य है।

5. सूरसागर महाकाव्य में बारह स्कन्ध है ।
6. साहित्य लहरी का मुख्य रस 'श्रृंगार' है ।
7. वल्लभाचार्य के कृष्ण भक्ति पंथ पुष्टिमार्ग नाम से प्रसिद्ध है ।
8. सूरदास के समय की राजभाषा फ़ारसी थी ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- भक्ति मार्ग में सूर का स्थान निर्धारित करते हुए एक भाषण तैयार कीजिए ।
- अंधे की अंधता केवल बाहर ही है - इस विषय में टिप्पणी लिखिए ।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- सूरदास के जीवन परिचय ।
- सूरदास की सबसे प्रसिद्ध रचना 'सूरसागर' महाकाव्य है ।

इकाई : 6

भक्तिकाल की अन्य प्रवृत्तियाँ और कवि

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भक्ति काल की अन्य विशेषताओं को समझता है ।
- भक्ति काल के मुख्य कवियों के अलावा अन्य जो कवियाँ हैं उनके बारे में जानकारी प्राप्त करता है ।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भक्तिकाल हिन्दी साहित्य के सुवर्ण काल माने जाते हैं । इस काल में मूल रूप में धार्मिक चिंतन की प्रमुखता हुई है। ईश्वर के प्रति आस्था और आराध्य का गुणगान ही काव्य के रूप में प्रचलित हुई । स्वतंत्र रूप से काव्य की रचनाएँ दिखाई देते हैं।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

भक्तिकाल विविधता की दृष्टि से काफी विशाल है।

भक्ति काल के रचनाकारों ने अपने काव्य में भक्ति को विशेष अर्थ दिया है ।

Discussion / चर्चा

भक्तिकाल का दायरा काफी विस्तृत है । इस काल की प्रमुख प्रवृत्ति भक्ति के अलावा जो अन्य प्रवृत्तियाँ हैं- उनमें वीर काव्य, प्रबंधकाव्य, श्रृंगार, रीति-निरूपण आदि भी है। भक्ति काल का केंद्रीय तत्व ईश्वर भक्ति है। ईश्वर के प्रति आस्था और आराध्य का गुणगान ही काव्य के रूप में प्रचलित हुआ। महत्वपूर्ण बात यह है कि सभी भक्त संतो ने ईश्वर की भक्ति भावना से प्रेरित होकर अपनी रचनाएं की है, परंतु उनकी भक्ति की प्रकृति में अंतर है। इनमें से कई अपने ईश्वर को निर्गुण रूप में देखते हैं तो कई सगुण रूप में। लेकिन भक्ति ही दोनों धाराओं का सर्वसमावेशी तत्व है, भक्ति इस काल की मूल प्रवृत्ति और केंद्रीय चेतना भी है । चाहे वह निर्गुण संत हो या सगुण भक्त, सभी इस भक्ति द्वारा सत्य (ईश्वर) का साक्षात्कार करना चाहते हैं । उनके यहां ईश्वर की प्राप्ति का एकमात्र माध्यम ईश्वर के प्रति आस्था और समर्पण है।

संपूर्ण भक्ति काल को निर्गुण तथा सगुण दो रूपों में विभाजित किया जा सकता है। पुनः इसकी दो उप शाखाएँ हैं। निर्गुण धारा के भक्तों ने ईश्वर को निराकार रूप में स्वीकार किया। उनके अनुसार ईश्वर शक्तिमान तथा सर्वव्यापी है; वह कण-कण में विद्यमान है अतः वह किसी आकार के अंदर समा ही नहीं सकता है।

4.6.1 भक्तिकाल के प्रमुख कवि ।

निर्गुण धारा के ज्ञानमार्गी शाखा के कवियों में कबीर, रैदास, नानक, दादू, मलूक दास तथा सुंदर दास का नाम उल्लेखनीय है। इसकी प्रेम मार्गी शाखा के कवियों में जायसी, कुतुबन, मंझन आदि कवि हुए । ये कवि सूफी कहलाते हैं। जिनके आराध्य पुरुष नारी हैं। अर्थात साधक या प्रेमी अपनी प्रेमिका को पाने के लिए प्रयास करता है। उनके ईश्वर नारी के रूप में सर्व शक्तिमान सत्ता के रूप में विद्यमान है। इन कवियों ने प्रेम कथाओं का लोककथाओं के जरिए प्रस्तुत किया है ।

सगुण भक्ति कवियों ने ईश्वर को सगुण- साकार माना है। इनके अनुसार ईश्वर जगत के कल्याण के लिए अवतार लेता है और भक्तों के कष्टों को दूर करता है। इस धारा में कृष्ण तथा राम के रूप में दो शाखाएं हो जाती है। कवियों ने ईश्वर को अपना सखा, प्रेमी माना है। साथ ही साथ उनके बाल रूप का मनोहारी वर्णन किया। इसमें सूरदास, नाभादास, मीराबाई, आदि हैं। राम भक्ति शाखा के कवियों ने राम को मंगलकारी रूप प्रदान किया। उनके राम, परिवार, समाज एवं राष्ट्र की समस्याओं में से संघर्ष करते हैं और जनता का

कल्याण करते हैं। कवियों में सिरमौर, तुलसीदास हैं, जिनके राम संपूर्ण जगत में व्याप्त है।

भक्ति काल में निर्गुण-सगुण भक्ति की प्रमुख प्रवृत्तियों के अलावा जो गौण प्रवृत्तियां दृष्टिगत होती हैं उनमें वीर, श्रृंगार, रीति, नीति आदि प्रमुख है।

4.6.2 भक्तिकाल की अन्य प्रवृत्तियाँ

सम्मोहक संगीतात्मकता

भक्तिकाल में भाव और भाषा, काव्य और संगीत का मणि कांचन योग है। काव्य में संगीतात्मकता के समावेश के लिए जिस आत्म-विश्वास, तीव्र अनुभूति, सहज स्फूर्ति और अन्तःप्रेरणा की आवश्यकता होती है, वह भक्ति काव्य में पर्याप्त मात्रा में है। सूर तुलसी, मीरा, कबीर के पद सबके ह्मदयों और कठों में आज तक बसे हैं।

काव्य रूपों की विविधता

काव्य-रूपों की विविधता की दृष्टि से भी भक्तिकाल काफी समृद्ध है। इसमें प्रबन्धकाव्य, मुक्तक काव्य, सूक्तिकाव्य, संगीतकाव्य, जीवनचरित्र आदि सभी कुछ उपलब्ध होता है।

भक्ति काल की भाषा -

भक्तिकाल के साहित्य की भाषायें अवधी और ब्रजभाषा हैं। तुलसी ने अवधी को और सूर ने ब्रजभाषा को टकसाली और शुद्ध रूप देकर चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया।

अलंकार, रस एवं छन्द-

अलंकार, रस और छन्द इन तीनों की दृष्टि में भक्तिकाल महत्वपूर्ण है। भक्तिकालीन साहित्य में विविध अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। रसों की तो इस साहित्य में धारा ही बह रही है। छन्दों के नपे-तुले प्रयोग हैं।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

अलंकार, रस और छन्द इन तीनों की दृष्टि से भक्तिकाल समृद्ध है।

काव्य-रूपों की विविधता की दृष्टि से भी भक्तिकाल काफी संपन्न है।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

भक्ति काल में ईश्वर के प्रति आस्था और आराध्य का गुणगान ही काव्य के रूप में प्रचलित हुआ । ईश्वर भक्ति ही भक्ति काल का केंद्रीय तत्व है ।

Recap / पुनरावृत्ति

- धार्मिक काव्य की प्रमुखता ।
- वीर काव्य की कमी देखी जा सकती है। परंतु उसकी निरंतरता बनी रही।
- रामचरितमानस और रामचंद्रिका में वीरता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं ।
- अनेक कवियों ने प्रबंध काव्यो की रचना की।
- भक्ति काल में अकबर के दरबार में जिन हिन्दी कवियों को सम्मान प्राप्त था उनमें- चतुर्भुज दास, पृथ्वीराज, मनोहर, टोडरमल, बीरबल, गंग, रहीम आदि प्रमुख हैं ।
- रीति निरूपण की प्रवृत्ति यद्यपि इस काल में भक्ति के प्रवाह के कारण क्षीण रही ।
- भक्ति काव्य में रीति कवि हैं- कृपाराम, सुंदर दास, केशवदास, रहीम आदि ।
- कबीरदास के समकालीन कई महान कवि हुए थे, जिसमें सगुण भक्त और निर्गुण भक्त हैं ।
- रामभक्त, कृष्णभक्त, ज्ञानमार्गी तथा प्रेममार्गी कवि कबीर के समकालीन रहे थे ।
- दादू दयाल (साखी और पद), रैदास (पद), गुरुनानक (गुरु ग्रंथ साहबा) आदि ज्ञानमार्गी में शीर्षस्थ है ।
- मालिक मुहम्मद जायसी (पद्मावत), कुतुबन (मृगावती), उसमान (चित्रावली), मंझन (मधुमालती) आदि प्रेममार्गी कवियों में उल्लेखनीय है ।
- गोस्वामी तुलसीदास (रामचरितमानस), नाभादास (भक्तमाल), स्वामी अग्रदास (रामध्यान मंजरी) आदि रामभक्ति धारा के प्रसिद्ध कवि है ।
- सूरदास (सूरसागर), मीराबाई (पदावली), नंददास (पंचाध्यायी), कुंभनदास (पद), कृष्णदास (प्रेमतत्व) जैसे कवियों ने कृष्ण भक्ति धारा को महत्वपूर्ण बना दिया है ।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अकबर के दरबार के प्रमुख कवि कौन -कौन थे ?
2. भक्ति काल के रीति कवि कौन - कौन हैं ?
3. रामभक्ति धारा के अन्य प्रसिद्ध कवि कौन-कौन हैं ?
4. कृष्ण भक्ति धारा को प्रवाहमान बनानेवाले अन्य कवि कौन -कौन थे ?
5. प्रेममार्गी कवियों में उल्लेखनीय प्रमुख कवि कौन - कौन हैं ?
6. ज्ञानमार्गी शाखा के शीर्षस्थ कवि कौन -कौन हैं ?
7. प्रेममार्गी काव्यधारा के कवि मंझन के प्रमुख रचना कौन सी है ?
8. गुरुनानक की रचना का नाम क्या है ?
9. कृष्ण भक्ति धारा को प्रवाहमान बनानेवाली कवयित्री कौन थी ? और उनकी रचना का नाम क्या है ?

Answers उत्तर

1. अकबर दरबार में जिन हिन्दी कवियों को सम्मान प्राप्त था उनमें- चतुर्भुज दास, पृथ्वीराज, मनोहर, टोडरमल, बीरबल, गंग, रहीम आदि प्रमुख हैं।
2. भक्ति काल के रीति कवि हैं- कृपाराम, सुंदर दास, केशवदास, रहीम आदि।
3. नाभादास, स्वामी अग्रदास आदि रामभक्ति धारा के अन्य प्रसिद्ध कवियाँ हैं ।
4. मीराबाई, नंददास , कुंभनदास, कृष्णदास आदि कृष्ण भक्ति धारा के प्रमुख कवि है ।
5. कुतुबन, उसमान , मंझन आदि प्रेममार्गी काव्यधारा के अन्य कवियों में उल्लेखनीय है ।
6. दादू दयाल , रैदास, गुरुनानक आदि ज्ञानमार्गी में शीर्षस्थ कवियाँ हैं ।
7. मधुमालती
8. गुरुनानक की रचना का नाम 'गुरु ग्रंथ साहबा' है ।
9. मीराबाई और उनकी 'पदावली'

Assignment प्रदत्त कार्य

- हिन्दी साहित्य में भक्ति काल के अन्य कवियों का स्थान निर्धारित कीजिए ।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- कबीरदास के समकालीन अन्य महान कवि और उनकी रचनाएँ ।
- हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्ति युग की महत्ता ।

Reference Books   सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ।
2. कबीर का रहस्यवाद - डॉ. राजकुमार वर्मा ।
3. कबीर : अनुशीलन - डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी ।
4. बीजक का भाषा:शास्त्रीय अध्ययन - डॉ. शुकदेव सिंह ।
5. कबीर - डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ।
6. कबीर मीमांसा - डॉ. रामचन्द्र तिवारी ।
7. महात्मा कबीर - डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल ।
8. भाषा कबीर उदार - उषा प्रियंवदा ।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

BLOCK - 05

रीतिकाल और रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

इकाई : 1

रीतिकाल- सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिवेश

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी साहित्य के उत्तर मध्यकाल या रीतिकाल की जानकारी प्राप्त करता है ।
- रीतिकाल के समय की सामाजिकता समझता है ।
- रीतिकालीन समाज और विभिन्न वर्गों की स्थिति की जानकारी प्राप्त करता है ।
- रीतिकाल के समय की धार्मिक परिवेश समझता है ।
- रीतिकाल के समय की राजनीतिक परिवेश समझता है ।
- हिन्दी साहित्य के उत्तर मध्यकाल या रीतिकाल के समय की सांस्कृतिक परिवेश समझता है ।
- रीतिकाल के साहित्यिक एवं आर्थिक वातावरण के बारे में जानकारी प्राप्त करता है ।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

इतिहास का लक्ष्य अतीत की व्याख्या करते हुए विकास क्रम की जानकारी प्राप्त करना है । दूसरे शब्दों हम कह सकते हैं कि इतिहास के बिना वर्तमान का अध्ययन अधूरा है । अतः इतिहास के अध्ययन के बिना किसी भी क्षेत्र की विस्तृत जानकारी प्राप्त करना मुश्किल है । साहित्य की आलोचना के संदर्भ में भी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का उपयोग किया जाता है । हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में भी इतिहास लेखन की यह प्रमुखता देख सकते हैं ।

रीति काल हिन्दी साहित्य का तीसरा काल है । यह काल 'उत्तर मध्यकाल' नाम से भी जाने जाते हैं । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसकी समय-सीमा संवत् 1700 से संवत् 1900 तक निश्चित किया गया है । इस युग के साहित्य में रीति निरूपण और श्रृंगारिकता की प्रवृत्तियाँ देख सखते हैं ।

किसी भी साहित्य की गतिविधियों को समझने केलिए उस काल के साहित्य की तत्कालीन परिस्थितियों को समझना अनिवार्य है । इस दृष्टि से रीतिकालीन सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का अध्ययन करना आवश्यक है । रीतिकालीन समाज भेद-भावों से भरा हुआ था । मुगलों का पतन और अंग्रज़ों का शासन आदि के कारण राजनीतिक क्षेत्र में भी अशांति थी । सांस्कृतिक अवस्था भी शोचनीय थी । लोग धार्मिक मूल्यों से दूर रहकर विलास क्रीडाओं में आकृष्ट होने लगें ।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

रीतिकाल में देश की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक बदलाव का असर साहित्य पर देख सकते हैं । इस कारण से इस युग का साहित्य अत्यंत समृद्ध कहा जा सकता है । इस युग के अधिकांश कवि अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा कर रहे थे । इस युग के कवियों की व्यापक प्रवृत्ति श्रृंगारिक हैं । इस काल की रचनाएँ संस्कृत काव्य शास्त्र की पद्धति के अनुसार होने के कारण इस युग को 'रीतिकाल' कहा जा सकता है ।

Discussion / चर्चा

5.2.1 रीतिकालीन सामाजिक परिवेश

रीतिकालीन समाज सामंतवादी समाज था। समाज भेद-भावों से भरा था । कुरीतियों से भी भरा हुआ था। समाज में मुख्य रूप से दो वर्ग थे। उच्च वर्ग या अमीर और निम्न वर्ग या गरीब। किसान और श्रमिक वर्ग निम्न या गरीब वग में आते हैं। शासक वर्ग, साहूकार और व्यापारी वर्ग अमीरों

का प्रतीक था। जन सामान्य की शिक्षा, चिकित्सा आदि का कोई प्रबंध नहीं था। लोग नैतिक मूल्यों से अलग रहते थे ।

5.2.2 रीतिकालीन सांस्कृतिक और धार्मिक परिवेश

इस युग का सांस्कृतिक परिवेश अत्यंत शोचनीय था। अकबर, जहांगीर और शाह्जहाँ की उदारवादी नीति के कारण इस्लाम और हिन्दू संस्कृतियाँ निकट आयी थीं। संतों और सूफियों के योगदान भी उल्लेखनीय हैं। लेकिन बाद में आये राजनीतिक बदलाव के कारण लोग विलास क्रीडाओं में मग्न रहने लगे। मंदिरों में भी विलास की लीला होने लगी। हिन्दू और इस्लाम धर्म के लोग जीवन की वास्तविकता से हट गये। धर्म के आध्यात्मिक प्रभाव से हटकर जीवन बिताने लगे थे। इस प्रकार हिन्दू और मुसलमान दोनों, धर्म के मूल सिद्धांतों से दूर रहते थे। वे बाह्याडम्बर और अंधविश्वास में डूब गये थे। पूजारी और मुल्ला जनता के इस अंधविश्वास का लाभ उठाते थे ।

रीति काल में धार्मिक समाज में नैतिकता कम थी, अनैतिकता बढ़ चुकी थी। समाज में जातिवाद, अंधविश्वास, छुआछूत, तरह-तरह की रूढ़ियाँ, बाह्याडंबर, स्त्रियों के प्रति अन्याय आदि ज्यादा से ज्यादा फैले हुए थे। हिन्दुओं में विविध देवी-देवों की आराधना की प्रथा थी। मुसलमान एकेश्वरवाद पर आगे बढ़ते थे। कहीं-कहीं हिन्दु-मुसलमान में मानसिक अंतर था।

5.2.3 साहित्यिक परिस्थिति

रीति काल में मुगल शासक शासन करते थे। मुगल शासक संगीत, शिल्पकला, चित्रकला आदि को प्रोत्साहन देते थे। श्रृंगारिकता रीतिकालीन कवियों का प्राण रहा था। अधिकांश कवि राजा-महाराजा को खुशामद करने के लिए श्रृंगार पर अवलंबित रचनाएँ करते थे। रीतिमुक्त कवियों ने कृष्ण के इतिहास-चरित काव्य विषय बनाया है।

इस काल में कवियों और रचनाकारों को अपने राजा से सम्मान प्राप्त करने के कारण साहित्य और कला की स्थिति अच्छी रही।

5.2.4 रीतिकालीन राजनीतिक परिवेश

रीतिकाल मुगल शासन के वैभव के बाद का समय है । मुगल शासन के समय देश में शांति थी । राजनीतिक दृष्टि से यह काल मुगलों के शासन के चरमोत्कर्ष काल है। शाह्जहां के शासन काल में मुगल वैभव अपनी चरम सीमा पर रहा । जहांगीर ने अपने शासन काल में राज्य का विस्तार किया । शाह्जहाँ ने उसकी वृद्धि की । राजपूतों ने भी शासन कार्य संभाला । शाह्जहां की मृत्यु के बाद उनके पुत्र ने शासन कार्य संभाला । दाराशिकोह और औरंगज़ेब उनमें से हैं। औरंगज़ेब के पश्चात लगभग 50 वर्ष तक शासन स्थिर न हुआ । जो अधिक समय केलिए आये, वे विलास में निमग्न रहने के कारण राज्य की देखभाल न कर सका।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

रीतिकाल में कवियों और कलाकारों को तत्कालीन राजाओं से सम्मान प्राप्त होने के कारण साहित्य और कला की स्थिति अच्छी ही रही । लेकिन विलासी राजाओं के आश्रय में रहने के कारण इन कवियों का मुख्य लक्ष्य उन्हें संतुष्ट करना था । इसलिए इन रचनाओं में साहित्यिक गुण का अभाव देख सकते हैं ।

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल के बाद का समय है रीतिकाल ।
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल इसे 'रीतिकाल' नाम दिया ।
- यह मुगलों के शासन वैभव के बाद का समय है ।
- अधिकांश कविगण राजाश्रय में रह्ते थे ।
- साहित्यिक रचनाओं का समृद्धि का समय था रीतिकाल।
- रीतिकाल की सामाजिक परिस्थिति शोचनीय थी ।
- जनसामान्य की आर्थिक दुरवस्था ।
- राजनीतिक बदलाव ।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रीतिकाल की समय सीमा क्या है?
2. 'उत्तर मध्यकाल' किस काल का दूसरा नाम है ?
3. रीतिकाल को 'रीतिकाल' नाम किसने दिया ?
4. साहित्यिक दृष्टि से रीतिकाल की स्थिति कैसी थी ?
5. रीतिकालीन कविगण कैसे जीवन बिताते थे ?
6. भक्तिकाल के बाद के समय का नाम क्या है?
7. रीतिकालीन समाज किस तरह का था ?
8. इस युग के साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ क्या-क्या हैं?
9. इस युग को 'रीतिकाल' कहने का कारण क्या है ?
10. इस युग के अधिकांश कवियों का विषय क्या था ?

Answers उत्तर

1. संवत् 1700 से संवत् 1900 तक।
2. रीतिकाल ।
3. अचार्य रामचन्द्र शुक्ल ।
4. समृद्धि का समय था ।
5. राजाश्रय में रह्ते थे ।
6. रीतिकाल।
7. सामंतवादी समाज था ।
8. रीति निरूपण और श्रृंगारिकता ।
9. संस्कृत काव्य शास्त्र के पद्धति के अनुसार होने के कारण ।
10. अपने आश्रयदाताओं की प्रशस्तियाँ लिकते थे ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- रीतिकालीन विभिन्न परिस्थितियों का परिचय देकर साहित्यिक विकास पर टिप्पणी तैयार कीजिए ?
- रीति काल के राजनीतिक और धार्मिक परिस्थिति के बारे में एक निबंध तैयार कीजिए ।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- हर एक काल के सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिवेश के अनुसार साहित्यिक गतिविधियाँ बदलती रहती हैं । स्पष्ट कीजिए ?

इकाई : 2

रीतिकाल के वर्गीकरण और विभिन्न नामकरण

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- रीति काल के नामकरण संबंधी मत समझता है ।
- रीति काल के नामकरण से सबंधित विभिन्न समस्याओं से परिचय प्राप्त करता है ।
- काल विभाजन से जानकारी प्राप्त कर सकता है ।
- रीतिकालीन श्रृंगारिकता की प्रवृत्तियों की जानकारी प्राप्त करता है ।
- रीतिकालीन कवियों एवं उनकी प्रमुख रचनाओं की विशेषताओं से परिचय प्राप्त कर सकता है ।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

रीतिकाल की मुख्य प्रवृत्ति रीति निरूपण और श्रृंगारिकता है । इस लिए शुक्ल जैसे आचार्यों ने इसे 'रीतिकाल' नाम दिया है और कुछ विद्वान 'श्रृंगारकाल'। इसके अलावा अलंकृतकाल, कलाकाल जैसे नामकरण भी देख सकते हैं ।

रीतिकाल को 'रीतिकाल' नाम देने का श्रेय आचार्य रामचंद्र शुक्ल को है । अधिकांश विद्वान इस नाम को स्वीकार किया है । रीतिकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों के आधार पर दिये गए विभिन्न नामकरण पर यहाँ हम चर्चा करेंगे ।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

रीतिकाल का साहित्य 'समृद्ध साहित्य' है ।

आश्रयदाताओं की प्रशंसा ।

व्यापक श्रृगारिकता ।

कम नैतिकता।

रीति निरूपण की प्रवृत्ति

'विशिष्ट पद रचना'रीति

Discussion / चर्चा

5.2.1 'रीति' शब्द का अर्थ

भारत में रीति संप्रदाय के स्थापक आचार्य वामन है। लेकिन 'रीति' शब्द का 'रीति संप्रदाय' से कोई सम्बन्ध नहीं है।

आचार्य वामन ने 'विशिष्ट पद रचना' पद्धति को रीति कहा है । विभिन्न आचार्यों ने रीति शब्द को 'विशिष्ट पद रचना' ही कहा हैं ।

लेकिन संस्कृत की तरह हिन्दी में रीति का अर्थ विशिष्ट पदरचना नहीं है । रीतिकवि अथवा रीतिग्रंथ में प्रयुक्त रीति शब्द का अर्थ काव्य शास्त्र से समझना चाहिए। संक्षेप में सभी काव्य सिद्धांतों के आधार पर काव्यांगों के लक्षण सहित या उनके आधार पर लिखे गए ग्रंथों को रीतिग्रंथ कहा जाता है। दूसरे शब्दों में काव्य की रीति को काव्य की आत्मा समझकर उसके अनुसार रचने वाले ग्रंथ को रीति ग्रंथ कहते हैं ।

संवत् 1700 से संवत् 1900 तक रीति पद्धति पर विशेष जोर रहा। इस काल के प्रत्येक कवि ने रीति के साँचे में ढलकर रचना लिखी ।

5.2.2 विभिन्न नामकरण

रीतिकाल

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल इस काल को 'रीतिकाल'

नाम दिया। इस काल की प्रवृत्तियाँ, मानव-मनोविज्ञान और रीति ग्रंथों के प्रचार के कारण आचार्य शुक्ल ने यह नाम दिया।

इस काल को ‘रीतिकाल’ कहने वाला एक और विद्वान है, बाबू श्यामसुंदर दास। बाबू श्यामसुंदर दास ने ’हिन्दी साहित्य के उत्तर मध्यकाल’ नामक अपने ग्रंथ में यह व्यक्त किया है। बाबू श्यामसुंदर दास के अनुसार इस काल में श्रृंगार रस की प्रवृत्ति ज़्यादा थी। इसके अलावा उन्होंने रीतिमुक्त कवियों का महत्त्व स्वीकार करते हुए इसका नामकरण रीतिकाल ही उचित समझा।

रीतिकाव्य

ग्रियर्सन ने अपने इतिहास ग्रंथ ’मॉर्डन वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिंदुस्तान’ में इस काल को ’रीतिकाव्य’ कहा है ।

अलंकृतकाल

मिश्रबंधुओं ने इस काल को अलंकृतकाल कहा। उन्होंने ’मिश्रबंधु विनोद’ में यह स्पष्ट किया है । इस काल के अधिकांश आचार्य लोग स्वयं कविता लिखते थे और कविता करने की रीति भी सिखलाते थे। लेकिन हमें ध्यान रखना चाहिए कि इस काल में सिर्फ अलंकार की प्रवृत्ति ही नहीं बल्कि काव्य में अलंकारों की प्रधानता है अथवा अलंकरण पर अधिक बल दिया गया है।

श्रृंगारकाल

पं.विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने इस काल को ’श्रृंगारकाल’ नाम दिया। उनके अनुसार आलम, घनानंद, बोधा और ठाकुर जैसे कविगण श्रृंगार या प्रेम के उन्मुक्त प्रवर्तक थे । इस काल की मुख्य प्रवृत्ति रस और श्रृंगार की है। इस लिए इस काल को श्रृंगारकाल कहा जा सकता है।

कलाकाल

डॉ. श्यामशंकर शुक्ल जैसे आलोचक इस काल को ’कलाकाल’ कहते हैं । कला पक्ष की प्रधानता और महत्व को देखकर इसको यह नाम रखा।

5.2.3 रीतिकाल का वर्गीकरण

रीतिकाल की मुख्यः तीन धाराएँ हैं। रीतिमुक्त, रीतिसिद्ध और रीतिबद्ध। शास्त्रीय ढंग के अनुसार लक्षण, उदाहरण आदि से युक्त काव्य रचना को **रीति बद्ध** काव्य कहते हैं।

काव्य रीति के बन्धन से पूर्णतः मुक्त होकर रचना किये गये काव्य रचना को **रीति मुक्त** काव्य कहते है।

रीति के भली-भाँति जानकार होकर भी रीति ग्रंथ लिखे बिना उस जानकारी का पूरा- पूरा उपयोग अपने काव्य ग्रन्थों में किये गये कवि को **रीति सिद्ध** कवि कहते हैं ।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

इन सभी नामकरणों की विवेचना के पश्चात यही कहा जा सकता है कि रीतिकालीन सभी कवियों ने रीति-परम्परा का पूर्ण निर्वाह किया । अतः श्रृंगार रस की प्रधानता होने पर भी इसे ’श्रृंगारकाल’ नहीं कहा जा सकता है और उसी प्रकार ’अलंकृत काल’ भी । ’कलाकाल’ कहना तो बिल्कुल अनुचित होगा, क्योंकि साहित्य में भावपक्ष के बिना कला का कोई महत्त्व नहीं हैं। अतः रीतिकाल कहना ही तर्कसंगत प्रतीत होता है, क्योंकि रस, अलंकार आदि रीति पर आश्रित होकर आए हैं।

विषयवस्तु की दृष्टि से देखे तो इस काल को ’रीतिकाल’ नाम ही अधिक सराहनीय है । क्योंकि इस काल में रीतिनिरूपण और श्रृंगारिकता की प्रवृत्ति ही अधिक देख सकते है। फिर भी रीति की प्रवृत्ति ही अधिकांश रूप में देख सकते है। इस समय के अधिकांश कविगण काव्यांग निरूपण पर बल दिया था ।

Recap / पुनरावृत्ति

- ’रीति’ शब्द का मतलब ’विशिष्ट पद रचना’ है ।
- रीतिकालीन कविगण मुख्यतः तीन श्रेणियों में देख सकते है
- रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त आदि रीतिकालीन कवियों की तीन श्रेणियाँ हैं ।
- रीतिकाल को ’रीतिकाल’ नाम आचार्य रामचद्र शुक्ल ने दिया ।
- श्यामशंकर शुक्ल ने कला काल नाम दिया।

- मिश्रबंधु ने अलंकृत काल नाम दिया ।
- आचार्य विश्वनाथन प्रसाद मिश्र ने श्रृंगार काल नाम देकर इस काल को संबोधित दिया है

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'रीति' शब्द का मतलब क्या है?
2. रीतिकालीन कविगण की तीन श्रेणियाँ क्या- क्या हैं ?
3. रीतिकाल को 'रीतिकाल' नाम किसने दिया?
4. श्यामशंकर शुक्ल ने रीतिकाल को क्या नाम दिया है?
5. मिश्रबंधु ने रीतिकाल को क्या नाम दिया है?
6. आचार्य विश्वनाथन प्रसाद मिश्र ने रीतिकाल को क्या नाम दिया है?
7. काव्य रीति के बन्धन से पूर्णतः मुक्त होकर रचना किये गये कवियों को क्या कहते है ?
8. रीतिकाल की मुख्य प्रवृत्ति क्या क्या है ?

Answers उत्तर

1. 'विशिष्ट पद रचना' ।
2. रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त ।
3. आचार्य रामचद्र शुक्ल ने ।
4. कला काल ।
5. अलंकृत काल ।
6. श्रृंगार काल ।
7. रीतिमुक्त कवि ।
8. रीतिनिरूपण और श्रृंगारिकता ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- रीतिकालीन वर्गीकरण का परिचय देकर विभिन्न नामकरण पर प्रकाश डालिए ।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- आपकी राय में 'रीतिकाल' नामकरण संगत है या नहीं? क्यों ?

इकाई : 3
रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों की जानकारी प्राप्त करता है ।
- रीतिकालीन कवियों के विषयों की विविधता पर जानकारी प्राप्त करता है ।
- रीतिकालीन कवियों के प्रवृत्तियों तथा वर्गीकरण पर जानकारी प्राप्त होता है ।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

रीति काल के अधिकांश कवि तत्कालीन राजा-महाराजा के आश्रय में रहते थ। आश्रयदाताओं को खुश कराने के लिए श्रृंगार पर अवलंबित रचनाएँ करते थे । रीतिमुक्त कवियों ने कृष्ण के इतिहास-चरित काव्य विषय बनाया। इस काल में कवियों और रचनाकारों को अपने राजा से सम्मान प्राप्त होने के कारण साहित्य और कला की स्थिति अच्छी रही।

लेकिन विलासी राजाओं के आश्रय में रहने के कारण इन कवियों का मुख्य लक्ष्य उन्हें संतुष्ट करना था। इसलिए इन रचनाओं में साहित्यिक गुण का अभाव देख सकते हैं ।

Keywords / मुख्य बिन्दु

श्रृंगारिकता, रीति निरूपण , आलंकारिकता, भक्ति और नीति, नारी-चित्रण , लक्षण ग्रन्थों का निर्माण , शास्त्रीयता, मुक्तक काव्य प्रणयन ।

Discussion / चर्चा

रीतिकालीन कवियों में विभिन्न प्रवृत्तियों का समावेश हम देख सकते हैं । ये निम्न लिखित हैं :-

5.3.1 रीति निरूपण /लक्षण पन्थों का निर्माण:

रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्ति रीति निरूपण है। रीतिकाल के कवि ने कवि-कर्म और आचार्य- कर्म साथ-साथ निभाया । इस काल के प्रायः सभी कवियों ने लक्षण ग्रन्थों का निर्माण किया। इन कवियों ने संस्कृत के आचार्यों का अनुकरण करके लक्षण-ग्रंथों अथवा रीति ग्रंथों का निर्माण किया है । फिर भी इन्हें रीति निरूपण में विशेष सफलता नहीं मिली है । इनके ग्रंथ एक तरह से संस्कृत-ग्रंथों में दिए गए नियमों और तत्वों का हिन्दी अनुवाद हैं । इनमें मौलिकता और स्पष्टता का अभाव है ।

रीति निरूपण करने वाले आचार्यों के 2 भेद हैं- सर्वांग निरूपक और विशिष्टांग निरूपक ।

काव्यांग निरूपक कवियों का उद्देश्य काव्यांगों का परिचय देना है। इन्होंने लक्षण ग्रंथों के साथ अन्य कवियों की कविताओं का उदाहरण प्रस्तुत किये हैं।

इनके अलावा तीसरा वर्ग उन कवियों का है जिन्होंने रीति तत्व तो उनके ग्रंथों में जोडा है परंतु काव्यांगों का लक्षण उन्होंने नहीं दिया है।

रीतिकालीन कवि का उद्देश्य काव्यशास्त्र के ग्रन्थों का निर्माण करना न होकर, कवियों को काव्य-शास्त्र के विषय से परिचित कराना था ।

5.3.2 श्रृंगारिकता

रीतिकाल की दूसरी बड़ी विशेषता श्रृंगार रस की प्रधानता है। श्रृंगार के संयोग पक्ष के साथ वियोग पक्ष का

वर्णन इस युग की कविताओं की एक विशेषता है। श्रृंगार में आलंबन और उद्दीपन के उदाहरणों को भी देख सकते हैं। नखशिख वर्णन भी ज़्यादा हुई हैं । राधा-कृष्ण की प्रेम लीलाओं का चित्रण व्यापक स्तर पर हुआ है।

रीतिकालीन कवि श्रृंगार-वर्णन के द्वारा अपने आश्रयदाताओं को संतुष्ट कराते थे। संयोग चित्रण में कहीं-कहीं अश्लीलता भी दिखाई देती है ।

5.3.3 आलंकारिकता:

रीतिकाल की अन्य प्रवृत्ति है- आलंकारिकता। राज-दरबार और जन- मानस में पर्याप्त सम्मान मिलने केलिए कविगण को अलंकार-शास्त्र का ज्ञान होना आवश्यक था। इसीलिए अपने ज्ञान को प्रदर्शित करने, और राज-दरबार को चमत्कृत करने के लिए कवियों ने आलंकारिकता को अपनाया।

5.3.4 भक्ति और नीति

दरबारी कवि होने के कारण रीतिकालीन कवियों में भक्ति- भावना स्वाभाविक था। भक्ति- भावना के साथ -साथ नीति की प्राधानता भी देख सकते थे। लेकिन दोनों भाव बिखरी हुई थी। इसलिए इसका ठीक प्रयोग नहीं हुआ था। यह देखकर उसे भक्त या नीति कवि नहीं कहा जा सकता।

5.3.5 प्रकृति-चित्रण

रीतिकाल में प्रकृति का वर्णन आलम्बन या उद्दीपन रूप में ही हुआ था। अधिकांश: संयोग-वर्णन. में इसका उदाहरण देख सकते हैं ।

5.3.6 नारी - चित्रण

रीतिकाल के कवि राज्याश्रित होने के कारण आश्रयदाता को तृप्त करने के लिए नारी के विलासिनी चित्र प्रस्तुत किया। उनके सामने नारी केवल एक विलासिनी प्रेमिका थी । नारी का अस्तित्व भोग-विलास की सामग्री मात्र था। नारी के अन्य उदात्त रूपों पर उसकी दृष्टि पड़ी ही नहीं । रीतिकालीन कवि नारी के सामाजिक महत्त्व और उसकी गौरव को नहीं देख सका।

5.3.7 शास्त्रीयता

रीतिकालीन अधिकांश कवियों में शास्त्रीयता का व्यापक प्रभाव है। रीतिसिद्ध कवियों ने काव्यशास्त्र, कामशास्त्र, नीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, जैसे सभी सैद्धांतिक पक्षों को नहीं अपनाया। उन्होंने व्यावहारिक रूप से अपनी रचनाओं को उपर्युक्त शास्त्रों से संबंधित उदाहरण देकर शास्त्रीय ज्ञान का परिचय दिया है।

5.3.8 मुक्तक काव्य-प्रणयन

रीतिसिद्ध कवियों की अधिकतर काव्याभिव्यक्ति मुक्तकों के माध्यम से हुई है। लघु आकार के छंदों के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति जितनी मुक्तकों के माध्यम से हो सकती है, उतनी अन्य माध्यमों से नहीं।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

रीतिकालीन कवियों की प्रवृत्तियों की चर्चा करते वक्त मुख्य रूप से रीति निरूपण और श्रृंगारिकता ही आते हैं । लेकिन इस समय की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर अन्य प्रवृत्तियों पर भी प्रकाश डालना संगत है। इस दृष्टि से देखे तो भक्ति और नीति से लेकर प्रकृति चित्रण भी इनकी मुख्य प्रवृत्तियाँ हैं ।

Recap / पुनरावृत्ति

- रीतिनिरूपण और श्रृंगारिकता रीतिकाल की मुख्य प्रवृत्तियाँ हैं ।
- रीतिकालीन कवि प्रकृति चित्रण पर बल देते हैं ।
- रीतिकालीन कवि सौंदर्य वर्णन पर बल देते हैं ।
- भक्ति और नीति रीतिकालीन कवियों का मुख्य विषय है ।
- रीतिसिद्ध कवियों की काव्याभिव्यक्ति मुक्तकों के माध्यम से हुई ।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रीतिसिद्ध कवियों की काव्याभिव्यक्ति किसके माध्यम से हुई ?
2. रीतिकालीन कवियों की मुख्य प्रवृत्ति क्या है ?
3. रीतिसिद्ध काव्य के सौंदर्य वर्णन किसके माध्य से अभिव्यक्त हुई ?
4. श्रृंगार के उद्दीपक रूप में प्रकृति के विविध चित्र रीतिकालीन कविता में दृष्टिगत होते हैं। सही या गलत?
5. रीतिकालीन अधिकांश कवियों में किस शैली का व्यापक प्रभाव है ?
6. बिहारी की काव्याभिव्यक्ति किसके माध्यम से हुई ?
7. राज-दरबार और जन-समाज को चमत्कृत कविगण कौनसी प्रवृत्ति अपनाई ?
8. अपने आश्रयदाताओं की वासनाओं को तृप्त करने केलिए रीतिकालीन कवि कौनसी प्रवृत्ति को अपनाया ?
9. रीतिकालीन कवियों ने प्रकृति का वर्णन किस रूप में किया ?

Answers उत्तर

1. मुक्तकों के माध्यम से ।
2. रीति निरूपण और श्रृंगारिकता ।
3. श्रृंगारिकता के माध्य से ।
4. सही ।
5. शास्त्रीयता का ।
6. मुक्तक काव्य के माध्यम से ।
7. आलंकारिकता को ।
8. नारी चित्रण को ।
9. आलम्बन या उद्दीपन रूप में ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- रीतिकालीन कवियों की मुख्य प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए ।
- रीतिनिरूपण उर श्रृंगारिकता विषय पर टिप्पणी तैयार कीजिए ।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ क्या हैं? क्यों ?

इकाई : 4
रीतिकाल के प्रमुख कवियों एवं रचनाओं का परिचय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- रीतिकाल के प्रमुख कवियों और रचनकारों के बारे में जानकारी प्राप्त करता है ।
- रीतिकाल की रचनाओं की जानकारी प्राप्त करता है ।
- रीतिसिद्ध कवियों और रचनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करता है ।
- रीतिबद्ध कवियों और रचनाओं के संबन्ध में जानकारी प्राप्त करता है ।
- रीतिमुक्त कवियों और रचनाओं पर जानकारी प्राप्त करता है ।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

रीतिकाल की परिस्थितियों और प्रवृत्तियों की चर्चा के बाद अब हमें रीतिकालीन प्रमुख कवि और उनकी रचनाओं की चर्चा करना ज़रूरी हैं । हमें पता है विभिन्न विद्वानों ने रीतिकाल को विभिन्न नाम दियें।

हिन्दी साहित्य का उत्तर मध्यकाल को 'रीति काल' नाम रखने का श्रेय आचार्य रामचंद्र शुक्ल को है। डॉ. श्यामशंकर शुक्ल ने कला काल, मिश्रबंधु ने अलंकृत काल और आचार्य विश्वनाथन प्रसाद मिश्र ने श्रृंगार काल नाम देकर इस काल को संबोधित किया है । आचार्य शुक्ल का नामकरण सर्वमान्य हो गया है।

इसके अलावा साहित्यिक प्रवृत्ति की दृष्टि से देखे तो रीतिकालीन कवियों की मुख्यः तीन धाराएँ हैं। रीतिमुक्त, रीतिसिद्ध और रीतिबद्ध।

शास्त्रीय ढंग के अनुसार लक्षण, उदाहरण आदि से युक्त काव्य रचना किये गये कवियों को रीति बद्ध कवि कहते है। काव्य रीति के बन्धन से पूर्णतः मुक्त होकर रचना किये गये कवियों को रीति मुक्त कवि कहते हैं। रीति के भली-भाँति जानकार होकर भी रीति ग्रंथ लिखे बिना उस जानकारी का पूरा-पूरा उपयोग अपने काव्य ग्रन्थों में किये गये कवि को रीति सिद्ध कवि कहते हैं ।

इस इकाई में प्रमुख रीतिकालीन कवियों और उनकी रचनाओं से परिचय प्राप्त करेंगे । लेकिन उसका विस्तृत परिचय अगला अध्याय से प्राप्त करेंगे।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

रीतिकालीन प्रवृत्तियों के आधार पर इस काल में तीन श्रेणियों के कविगण को देख सकते हैं । रीतिबद्ध , रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त। वास्तव में इस युग के कवि कव्यांग निरूपण में अधिक ध्यान रखते थे । लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि इनमें से अधिकांश लोग आचार्य नहीं थे। फिर भी काव्य शस्त्रीय दृष्टि से काव्य रचना में निपुण थे ।

Discussion / चर्चा

इस काल की मुख्य प्रवृत्तियों में 'रीति निरूपण' आने के कारण इस काल को वैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषण करना अधिक संगत होगा। लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि इस युग में रीति सम्बन्धी ग्रंथ ही नहीं लिखे गये। विषयों की विविधता इस युग को संपन्न बना देते हैं ।

प्रवृत्ति की दृष्टि से रीतिकालीन कवियों और उनकी रचनाओं को विभिन्न श्रेणी में बाँटा जा सकता हैं, जो निम्न लिखित हैं:-

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

5.4.1 रीति बद्ध कवि और उनकी रचनायें

शास्त्रीय ढंग के अनुसार लक्षण, उदाहरण आदि से युक्त काव्य रचना किये गये कवियों को रीति बद्ध कवि कहते हैं।

1. चिंतामणि (प्रमुख रचनाएँ - 'कवित विचार प्रकाश', 'रामायण', 'कृष्णा चरित', 'रामेश्वमेघ')
2. देव (प्रमुख रचनाएँ - 'भावविलास', 'काव्य रसायन', 'भवानी विलास', 'रस विलास')
3. कुलपति मिश्र (प्रमुख रचनाएँ - 'रस रहस्य', 'युक्ति तरंगिणी', 'संग्राम सार') ।
4. कुमार मणि (प्रमुख रचनाएँ - 'रसिक रंजन', 'रसिक रसाल')
5. सोमनाथ (प्रमुख रचनाएँ - 'श्रृंगार विलास', 'रस पीयूष निधि', 'कृष्ण लीलावती')
6. भिखारीदास (प्रमुख रचनाएँ - 'रस सारांश', 'श्रृंगार निर्णय', 'काव्य निर्णय') आदि प्रमुख हैं ।

5.4.2 रीति मुक्त कवि और उनकी रचनाएँ

काव्य रीति के बन्धन से पूर्णतः मुक्त होकर रचना किये गये कवियों को रीति मुक्त कवि कहते हैं । इसके प्रमुख कवि और रचनाओं का नाम निम्न लिखित हैं :-

1. घनानन्द (प्रमुख रचनाएँ - 'सुजान सागर', 'विरहलीला', 'पदावली', 'सुजान हित')
2. आलम (प्रमुख रचनाएँ - 'आलमकेलि', 'सुदामा चरित', 'स्याम सेनही')
3. ठाकुर (प्रमुख रचनाएँ - 'ठाकुर ठसक', 'ठाकुर शतक')
4. बोधा (प्रमुख रचनाएँ - 'विरहवारीश', 'इश्कनामा')

5.4.3 रीति सिद्ध कवि और उनकी रचनाएँ

रीति के भली-भाँति जानकार होकर भी रीति ग्रंथ लिखे बिना उस जानकारी का पूरा-पूरा उपयोग अपने काव्य ग्रन्थों में किये गये कवि को रीति सिद्ध कवि कहते हैं । रीति सिद्ध कवियों में प्रमुख हैं **बिहारी लाल** ('बिहारी सतसई') ।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

रीतिकालीन साहित्य हिन्दी साहित्य के अनेक अमूल्य रचनाओं का सागर है । प्रवृत्ति और कालक्रम के अनुसार इस समय के हर एक रचना और रचनाकार का अपना महत्वपूर्ण स्थान है ।

Recap / पुनरावृत्ति

- रीतिबद्ध।
- रीतिसिद्ध।
- रीतिमुक्त।
- आचार्य कवि ।
- रीतिबद्ध कवियों में सर्व प्रमुख है चिंतामणी ।
- रीतिमुक्त कवियों में सर्व प्रमुख है घनानंद ।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रीतिकाल की तीन प्रमुख काव्य धाराएँ कौन सी हैं ?
2. प्रमुख रीतिमुक्त कवि का नाम लिखिए ?
3. प्रमुख रीतिबद्ध कवि का नाम लिखिए ?
4. प्रमुख रीतिसिद्ध कवि का नाम लिखिए ?
5. तीन रीतिमुक्त कवियों का नाम लिखिए ?
6. तीन रीतिसिद्ध कवियों का नाम लिखिए ?

7. तीन रीतिबद्ध कवियों का नाम लिखिए ?
8. सोमनाथ और भिखारीदास किस काव्य धारा के कवि हैं ?
9. 'इश्कनामा' किसकी रचना है?
10. 'रसिक रंजन' किसकी रचना है?

Answers उत्तर

1. रीतिमुक्त, रीतिबद्ध , रीतिसिद्ध ।
2. घनानन्द ।
3. चिंतामणी ।
4. बिहारी ।
5. आलम,ठाकुर, बोधा।
6. द्विजदेव, रसनिधि, कृष्ण कवि।
7. देव, कुलपति मिश्र, कुमार मणि ।
8. रीतिबद्ध ।
9. बोधा की ।
10. कुमार मणि की ।

Assignment प्रदत्त कार्य

▶ रीतिकाल के प्रमुख कविगण की सूचना दीजिए ?

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

▶ हिन्दी साहित्य के अध्ययन में रीतिकालीन रचनाओं का बड़ा स्थान है । अपनी राय क्या है ?

Reference Books सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल ।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास - संपादक डॉ.नगेन्द्र।
3. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ - डॉ.शिवकुमार मिश्र ।
4. हिन्दी साहित्य का आदिकाल - डॉ.हजारी प्रसाद द्विवेदी ।
5. हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास - हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ।
6. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह
7. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास - विश्वनाथ त्रिपाठी
8. रीति काव्य धारा - (सं) डॉ. रामचन्द्र तिवारी , डॉ. रामफेर त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणासी ।

9. रीति काव्य की भूमिका - डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिषिंग हाउस, दिल्ली ।
10. ब्रजभाषा साहित्य के इतिहास - डॉ. प्रभु दयाल मीत्तल, राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, जयपुर ।
11. रीतीकाव्य - नंदकिशोर नवल ।

BLOCK - 06

रीतिकालीन कवियों की परंपरा और विशिष्टताएँ

इकाई : 1
रीतिबद्ध परंपरा और उसके प्रमुख कवि

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- रीतिबद्ध काव्य के वर्गीकरण समझता है ।
- रीतिकालीन काव्य के परिप्रेक्ष्य में रीतिबद्ध काव्य का सामान्य परिचय प्राप्त करता है ।
- रीतिबद्ध काव्य के स्वरूप समझता है ।
- रीतिकालीन कविता में रीतिबद्ध काव्य के महत्व का परिचित प्राप्त करता है ।
- रीतिबद्ध काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करता है ।
- रीतिबद्ध प्रमुख कवियों और उनकी रचनाओं का परिचय प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

रीतिकाल की परिधि में काव्यरचना करनेवाले कवियों की व्यापक छानबीन करने के उपरांत आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने रीति ग्रंथकार कवि एवं अन्य कवि के रूप में दो ही श्रेणियाँ निर्धारित की थीं । उन्होंने रीतिसिद्ध कवि जैसा कोई वर्गीकरण या विभाजन नहीं किया । लेकिन कुछ आलोचक, विशेषकर विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने आचार्य कवियों की श्रेणी से अलग विशेषताएँ रखनेवाले कुछ कवियों को रीतिसिद्ध कवि के रूप में रेखांकित किया। इस तरह उनके द्वारा रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध रीतिमुक्त के रूप में वर्गीकरण किया गया, जो आज सर्वमान्य सा हो गया है ।

रीतिकाल में काव्यरचना का सर्वाधिक व्यापक प्रभाव रीतिबद्ध कवियों का है । इस काव्यधारा के कवियों की मूल प्रवृत्ति श्रृंगारपरक रचनाओं को विविध रूपों में प्रस्तुत करना है। रीतिनिरूपक लक्षणग्रंथों के माध्यम से काव्य के समस्त अंगों- उपांगों को स्पष्ट करना इनकी विशेषता है। इन कवियों ने लक्षणों और उदाहरणों के माध्यम से काव्य की रचना करते हुए हिन्दी कविता को संपन्न किया। काव्यरचना की परंपरागत पद्धाति अथवा रीति का अनुसरण करने के कारण वे रीतिबद्ध कवि कहे जाते हैं। वे परंपरा से प्राप्त रीति अथवा पंथ को स्वीकार कर रचना करने वाला कवि मानते हैं ।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

शास्त्रीय ढंग के अनुसार लक्षण, उदाहरण।
काव्यांगनिरूपण में लक्षणों का निर्माण।
काव्यरचना की परंपरागत पद्धाति।
काव्यांग का विस्तृत विवेचन।
तर्क द्वारा खंडन-मंडन।

Discussion / चर्चा

6.1.1 रीतिबद्धता और रीतिकाव्य

काव्यरचना के लिए काव्यशास्त्रीय परंपरा एवं पद्धति का पालन करते हुए लक्षण ग्रंथों की रचना करने वाले आचार्य कवि रीतिबद्ध कवि हैं। इस काव्यधारा के कवि काव्यरचना के नियमों में बँधकर रचना करते हैं । वे परंपरागत रीति से बँधी बँधाई परिपाटी पर काव्यरचना करने वाले कवि

हैं, जिन्हें रीतिबद्ध काव्यधारा के अंतर्गत स्थान दिया गया है। इस धारा के आचार्य कवियों ने अलंकार निरूपण, रस निरूपण, नायिका भेद निरूपण आदि की सुदृढ़ और व्यापक परंपरा हिन्दी में स्थापित की। यह संस्कृत काव्यशास्त्रीय संप्रदायों में प्रचलित थी। यह हिन्दी में एक नवीन काव्यपरंपरा की सूचक थी। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार 'रीतिबद्ध रचना' लक्षणों और उदाहरणों से युक्त होती है ।

संस्कृत में तो पहले से ही रस, ध्वनि, अलंकार संप्रदायों की विवेचना करने वाले लक्षणग्रंथों में रस निरूपण, अलंकार निरूपण, तथा नायक- नायिका भेद आदि का विस्तृत और व्यापक विवेचन विद्यमान था। इससे प्रेरणा लेकर रीतिकाल के रीतिबद्ध कवियों ने हिन्दी में रचना करना आरंभ किया।

रीतिबद्ध कवि संस्कृत आचार्यों से इस दृष्टि से भिन्न थे कि जहाँ संस्कृत के आचार्य काव्यांगनिरूपण में लक्षणों का निर्माण करते और उदाहरण किसी अन्य प्रसिद्ध कवि का उद्धृत करते हुए उन लक्षणों को स्पष्ट करते थे, हिन्दी के रीतिबद्ध कवि रीतिनिरूपण में लक्षणों का निर्माण करने के उपरांत उन्हें स्पष्ट करने के लिए स्वयं रचित काव्यमय उदाहरण भी देते थे। स्वयं के काव्य-उदाहरणों और लक्षणों को स्पष्ट करने के कारण वे संस्कृत आचार्यों से अलग हो जाते हैं।

रीतिकाल के कवियों में आचार्य और कवि दोनों एक ही व्यक्ति के होने का परिणाम उत्कृष्ट काव्यरचना की दृष्टि से बहुत संतोषप्रद नहीं कहा जा सकता, "संस्कृत साहित्य में कवि और आचार्य दो भिन्न-भिन्न श्रेणियों के व्यक्ति रहे। हिन्दी काव्यक्षेत्र में यह भेद लुप्त सा हो गया। इस एकीकरण का प्रभाव अच्छा नहीं पड़ा। आचार्यत्व के लिए जिस सूक्ष्म विवेचन या पर्यालोचन शक्ति की अपेक्षा होती है, उसका विकास नहीं हुआ। कवि लोग एक ही दोहे में अपर्याप्त लक्षण देकर अपने कविकर्म में प्रवृत हो जाते थे। काव्यांग का विस्तृत विवेचन, तर्क द्वारा खंडन-मंडन,नए-नए सिद्धांतों का प्रतिपादन आदि कुछ भी न हुआ।" (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ.181)

6.1.2 रीतिबद्ध काव्य

रीतिकाल में रचित रीतिबद्ध काव्य का स्वरूप बहुत व्यापक है। परंपरागत काव्य रचना पद्धति के अनुकरण में श्रृंगारपरक रचनाओं का सर्जन इस काल की सामान्य प्रवृत्ति कही जा सकती है। राजाश्रय में रहते हुए दरबार की अपेक्षाओं और आकॉक्षाओं के अनुरूप चमत्कारपूर्ण कलात्मक काव्याभिव्यक्ति करना इस काल के कवियों के लिए अनिवार्य सा हो गया था। यही कारण है कि कविगण अपने ज्ञान और पांडित्य को काव्यरचना के माध्यम से प्रस्तुत करना अपना साहित्यिक धर्म समझने लगे थे। परिणामतः काव्यशास्त्रीय प्रभाव में काव्य रचना की एक नवीन और अनूठी प्रवृत्ति रीतिकाल में विकसित हो गई, जो संस्कृत काव्यशास्त्र की परंपरा में रचित कतिपय प्रमुख लक्षणग्रंथों के अनुकरण में भले ही सामने आई हो, पर हिन्दी के लिए वह निःसंदेह काव्यरचना की नूतन पद्धति कही जा सकती है।

रीतिकाल में काव्यरचना की इस नवीन प्रवृत्ति में काव्यांग विवेचन के अंतर्गत रीतिनिरूपण करने वाले लक्षणग्रंथों के माध्यम से व्यक्त इस प्रकार की रचनाओं को रीतिबद्ध काव्य की संज्ञा दी गई। काव्य के विविध अंगों- उपांगों का बहुत सूक्ष्म वर्णन इस काल की काव्यरचना की प्रमुख विशेषता है। रसविषयक वर्णनों, नायिकाभेद विषयक रचनाओं एवं अन्य श्रृंगार काव्यसर्जन में इस काल के कवियों का काव्य चारुत्व एवं काव्यकौशल बहुत उत्कृष्ट कहा जा सकता है।

6.1.3 रीतिबद्ध काव्य के प्रमुख कवि

रीतिबद्ध कवि एवं उनकी रचनाएँ निम्न लिखित हैं :-

1. आचार्य केशवदास (1555 -1617)

केशवदास रीतिकाल के अलंकारवादी कवि है। सम्यक प्रस्तावना लिखने वाले रीतिबद्ध काव्यरचना के प्रेरक आचार्य कवि हैं आचार्य केशवदास। ओरछा नरेश इन्द्रजीत सिंह इन्हें गुरु मानते थे। आपका प्रमुख रीति ग्रंथ है 'रसिकप्रिया'। अधिकांश विद्वान 'रसिकप्रिया' को हिन्दी में रसविवेचन करने वाला प्रथम लक्षणग्रंथ के रूप में मानते हैं। इसमें 9 रसों का वर्णन है । लेकिन इसका मूल भाव श्रृंगार है। 'कविप्रिया', 'रतन बावनी', 'वीर चरित्र', 'जहाँगीर जसचंद्रिका', 'रामचंद्रिका', 'विज्ञानगीता', 'नखशिख', छाँद माला आदि अन्य प्रमुख ग्रंथ हैं ।

2. चिन्तामणि (1609-1685 के मध्य विद्यमान)

चिन्तामणी शाहजी भोंसला, शाहजहाँ और दाराशिकोह के आश्रय में रहते थे। चिन्तामणी ने रीतिनिरूपण को अत्यंत निष्ठा के साथ ग्रहण किया।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की दृष्टि में चिन्तामणी रीतिकाल के प्रवर्तक आचार्य कवि हैं, केशवदास से भिन्न आदर्श को लेकर चलने वाले कवि है और रीतिकाल की अविच्छिन्न काव्य परंपरा का प्रवर्तक भी हैं।

'रसविलास', 'छंदविचार पिंगिल', 'श्रृंगारमंजरी', 'कविकुलकल्पतरु', 'कृष्णचरित्र काव्यविवेक', 'काव्यप्रकाश',

'रामायण', 'रामाश्वमेध', 'गीत गोविंद', 'बारह खड़ी', 'चौंतीसा'।

3. जसवंतसिंह (सन् 1627-1729)

ये रीतिकाल के अलंकार निरूपक आचार्य कवियों में प्रमुख कवि हैं। आप मारवाड़ नरेश महाराज गजसिंह द्वितीय के पुत्र थे। पिता के मृत्यु की बाद बारह वर्ष की आयु में राज्य-भार संभालना पड़ा। शाहजहाँ और औरंगजेब के शासन काल में मुगल दरवार के राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रहे । अनेक कवि और पंडित इनके आश्रय में रहते थे। 'भाषाभूषण' इनका प्रमुख अलंकार विषयक ग्रंथ है।

'अपरोक्ष सिद्धांत', 'सिद्धांत बोध', 'अनुभवप्रकाश', 'आनंदविलास', 'सिद्धांतसार' आदि प्रमुख रचनाएँ हैं। संस्कृत के 'प्रबोधचन्द्रोदय' नाटक का ब्रजभाषा में पद्यानुवाद भी इन्होंने किया।

4. मतिराम (1608)

मतिराम का जन्म उत्तरप्रदेश के जिला पतेहपुर के बनपुर नामक स्थान में हुआ । आप चिन्तामणि के भाई हैं। श्रृंगार रस को प्रमुखता देने वाला कवि हैं मतिराम। जहांगीर, कुमायू- नरेश ज्ञानचंद, बूंदी नरेश राव भाव सिंह हाड़ा आदि अनेक राजाओं के आश्रय में रहे । इनके द्वारा रचित आठ ग्रन्थ कहे जाते हैं - 'रसराज', 'ललितललाम', 'साहित्यससार', 'मतिराम सतसई', 'लक्षण श्रृंगार', 'फूल मंजरी', 'अलंकार पंचशिका' और 'वृत्त कौमुदी'।

5. भूषण (सन् 1613-1715)

रीतिबद्ध कवियों में वीर रस के एकमात्र प्रमुख लोकप्रिय कवि हैं भूषण। अनुमान है कि चित्रकूट के राजा रुद्रसाह सोलंकी ने इन्हें भूषण की उपाधि से सम्मानित किया। इनका वास्तविक नाम में आज भी मत-भेद है। 'शिवराज भूषण', 'शिवबावनी', 'छत्रसाल दशक', 'भूषण उल्लास', 'दृषण उल्लास', 'भूषण हज़ारा' आदि प्रमुख ग्रंथ हैं।

6. देव (सन् 1673)

रीतिकाल में बिहारी के उपरांत सर्वाधिक लोकप्रिय एवं गंभीर-स्वाभाविक कवि हैं देव । आलोचकों के लिए बिहारी को टक्कर देने वाले कवि हैं देव । बिहारी -देव; देव- बिहारी का साहित्यिक विवाद, जो हिन्दी साहित्य की रोचक साहित्यिक कलह है और हिन्दी की तुलनात्मक आलोचना को गति देनेवाली प्रमुख घटना है। कवि देव द्वारा रचित 72 ग्रंथ बताए जाते हैं । इनमें से कुछ हैं - 'भाव विलास', 'रस विलास', 'भवानी विलास', 'कुशल बिलास',' जाति विलास', 'वृक्ष विलास', 'पावस विलास', 'राधिका विलास', 'सुजान विनोद', 'नीति शतक', 'प्रेम तरंग', 'रसानंद लहरी'; 'राय रत्नाकर'; 'प्रेम चंद्रिका', 'प्रेम दीपिका', 'प्रेम दर्शन', 'अष्टयाम', 'काव्य रसायन', 'देव चरित्र', 'देवमाया प्रपंच', 'नखाशिख' आदि।

7. कुलपति मिश्र (रचनाकाल सन् 1660-1700)

आप जयपुर के महाराज जयसिंह के पुत्र महाराज रामसिंह के आश्रय में रहते थे । पिंगलाचार्य के रूप में ख्यात रचनाकार कुलपति मिश्र, संस्कृत काव्यशास्त्र के विद्वान आख्याता के रूप में भी जाने जाते हैं । मौलिक काव्यरचना प्रतिभा से संपन्न आचार्य कवि भी हैं आप । आपके द्वारा लिखित 5 प्रमुख रचनाएँ हैं - 'रस रहस्य', 'संग्राम सार', 'दुर्गा भक्ति चंद्रिका', 'मुक्ती तरंगिणी', 'नखशिख' आदि ।

8. भिखारीदास

रीतिबद्ध कवियों में प्रमुख। काव्यशास्त्रीय ज्ञान एवं पांडित्य के साथ मौलिक काव्यप्रतिभा का संतुलन भिखारीदास की रचानाओं में देख सकते हैं । इनके 7 ग्रंथ उपलब्ध है — 'विष्णुपुराण भाषा', 'शतरंज शतिका', 'रस सारांश', 'छंदोर्णव पिंगल', 'श्रृंगार निर्णय', 'काव्य निर्णय', 'शब्दनाम कोश' आदि ।

9. पद्माकर (1753-1833)

नव रसों का सफल निरूपण करने वाले आचार्यों में प्रमुख हैं पद्माकर। आप अनेक राजाओं के आश्रय में रहते थे। इनमें प्रमुख हैं - सागर नरेश रघुनाथ राव अप्पा, जयपुर नरेश प्रताप सिंह, उदयपुर नरेश महाराज भीम सिंह आदि। इनके द्वारा रचित 7 मौलिक ग्रंथ मिलते हैं। 'पद्माभरण', 'जगद्विनोद', 'हिम्मत बहादुर विरुदावली', 'प्रतापसिंह विरुदावली', 'प्रबोध पचासा', 'कलि पच्चीसी', 'गंगा लहरी' आदि ।

अन्य रचनाकार और उनकी रचनाएँ

- ग्वाल कवि - इनके सोलह ग्रन्थ कहे जाते हैं- 'साहित्यानंद', 'कविदर्पण', 'सिकानंद', 'नेहनिर्वाह', 'हम्मीर हठ', विजय विनोद', 'भक्त भावन', 'गुरु पचासा' आदि प्रमुख ग्रंथ हैं ।
- तोष - 'सुधानिधि', 'नखशिख', 'विनय शतक'।
- याखूब खां - 'रस भूषण' ।
- बेनी 'प्रवीन'- 'नवरस तरंग'।
- रसलीन - 'रसप्रवोध', 'अंग दर्पण' ।
- सुखदेवमिश्र - वृत्तविचार; छंदविचार
- रसिकगोविंद - इनके 10 ग्रंथ माने जाते हैं । 'समय प्रबंध' , 'रामायण सूचनिका' आदि प्रमुख है।

- श्रीपति मिश्र - 'काव्य सरोज'; 'रस सागर', 'विक्रम विलास' ।
- सुरतिमिश्र - 'अलंकारमाला', 'ससरस', 'नखशिख', 'भक्तिविनोद', 'श्रृंगाररसा'।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

रीतिकाल की कवियों नें काव्यरचना की जो पद्धति स्वीकार की उसके अंतर्गत रीतिबद्धता प्रमुख प्रवृत्ति कही जा सकती है। रीतिबद्ध कवियों की प्रमुख प्रवृत्ति श्रृंगार परक रचनाओं को विविध रूपों में प्रस्तुत करना है । रीतिबद्ध कवि रीतिनिरूपक लक्षणग्रंथों के माध्यम से काव्य के समस्त अंगों-उपांगों को स्पष्ट किया । उसके लिए लक्षणों और उदाहरणों के माध्यम से काव्यमय अभिव्यक्ति भी की । इस प्रकार हिन्दी कविता का जैसे प्रसार एवं विकास इन कवियों ने किया है, वह उल्लेखनीय है।

काव्यरचना के इस व्यापक प्रयास को रीतिबद्ध काव्य के रूप में स्वीकार किया गया है और ऐसी काव्यरचना करने वाले कवियों को रीतिबद्ध कबि के रूप में जाना जाता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- रीतिकाल में रचित रीतिबद्ध काव्य का स्वरूप बहुत व्यापक है।
- इस काव्यधारा के कवि काव्यरचना के नियमों में बँधकर रचना करते थे ।
- इस धारा के कवियों ने अलंकार निरूपण, रसनिरूपण, नायिका भेद निरूपण आदि की सुदृढ़ और व्यापक परंपरा हिन्दी में स्थापित की।
- रीतिकाल की सम्यक प्रस्तावना लिखने वाले रीतिबद्ध आचार्य कवि हैं आचार्य केशवदास।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की दृष्टि में रीतिकाल के प्रवर्तक आचार्य कवि हैं चिन्तामणि ।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रीतिबद्ध कवियों की मुख्य प्रवृत्ति क्या- क्या है ?
2. रीतिकाल की सम्यक प्रस्तावना लिखने वाले रीतिबद्ध आचार्य कवि कौन हैं ?
3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की दृष्टि में रीतिकाल के प्रवर्तक आचार्य कवि कौन हैं ?
4. आचार्य केशवदास का जीवन काल कब से कब तक है ?
5. आचार्य चिन्तामणी का जीवन काल कब से कब तक है ?
6. आचार्य देव का जीवन काल कब से कब तक है ?
7. मंडन की तीन रचनाओं का नाम लिखिए ?
8. भिखारीदास की तीन रचनाओं का नाम लिखिए ?
9. कुलपति मिश्र की तीन रचनाओं का नाम लिखिए ?
10. देव की तीन रचनाओं का नाम लिखिए ?

Answers उत्तर

1. अलंकार निरूपण, रसनिरूपण और नायिका भेद निरूपण
2. केशवदास ।

3. चिन्तामणी ।
4. आचार्य केशवदास (1555 -1617) ।
5. देव (सन् 1637-1768) ।
6. कुलपति मिश्र (सन् 1660-1700) ।
7. रसरत्नावली; रसाविलास, नखसिख ।
8. 'विष्णुपुराण भाषा', 'नामप्रकाश', 'शतरंज शतिका' ।
9. 'रस रहस्य', 'संग्राम सार', 'दुगभिक्ति चंद्रिका', 'शक्ति तरंगिणी' ।
10. 'रसानंद लहरी', प्रेस दीपिका', 'प्रेम दर्शन' ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- केशवदास की रचनाओं की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ?
- देव की रचनाओं की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ?

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- आपकी राय में प्रमुख रीतिबद्ध कवि कौन हैं ?
- रीतिबद्ध कवि काव्यरचना की परंपरागत पद्धाति अपनाते हैं । सिद्ध कीजिए ?

इकाई : 2
रीतिसिद्ध परंपरा और उसके प्रमुख कवि

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- रीतिसिद्ध कवियों के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।
- रीति सिद्ध कवि के रूप में बिहारी का स्थान समझता है।
- रीतिकाल काल के सर्वश्रेष्ठ रीति सिद्ध कवि बिहारी के व्यक्तित्व, कृतित्व, आदर्श, दृष्टिकोण, भक्ति भावना, भाषा-शैली, रस, छंद तथा अलंकार आदि के जानकारी प्राप्त करता है।
- बिहारी के रस, अलंकार-भक्ति संबंधी विचार समझता है।
- बिहारी के समकालीन कवि और उनकी रचनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।
- बिहारी सतसई की मुख्य विशेषताएँ समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

रीति काल में मुख्य रूप में तीन प्रकार की रचना हुई है। रीति बद्ध कवि, रीति मुक्त कवि , रीति सिद्ध कवि। इनमें प्रमुख है रीतिसिद्ध धारा।
रीति के भली-भाँति जानकार होकर भी रीति ग्रंथ लिखे बिना उस जानकारी का पूरा-पूरा उपयोग अपने काव्य ग्रन्थों में किये गये कवि को **रीति सिद्ध** कवि कहते हैं। रीति सिद्ध कवियों में प्रमुख है बिहारी लाल ('बिहारी सतसई')। रीति-लक्षणा-शैली उनकी सतसई से प्राप्त होता है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

साहित्यिक ब्रजभाषा
संयोग और वियोग श्रृगार
पूर्वी हिन्दी, बुन्देलखड़ी, फारसी शब्द का प्रयोग
दोहा छन्द की प्रमुखता
अतिशयोक्ति, अन्योक्ति, व्यतिरेख, संदेह,- अलंकार
नीति, भक्ति, गणित, आयुर्वेद संबंधी दोहा
सूक्तिकार वृंद

Discussion / चर्चा

6.2.1 प्रमुख रीति सिद्ध कवि

6.2.1 .1 बिहारी लाल

कविवर बिहारीलाल का जन्म सन् 1603 में मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले के हुआ, गोविन्दपुर नामक गाँव में हुआ है।

रचनाएँ

बिहारी की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' है, जिसमें 719 दोहे संकलित हैं। 'बिहारी सतसई' में विविध विषयों से संबंधित दोहे उपलब्ध हैं। इसमें भक्ति, नीति और श्रृंगार सम्बन्धी दोहे मुख्य है। 'सतसई' संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ

होता है 'सात सौ' या उससे अधिक दोहे संकलित ग्रंथ। बिहारी सतसई इस अर्थ के भीतर आता है, जिसमें 719 दोहे संकलित हैं। यह रचना श्रृंगार, अलंकार, रस, नायिका-भेद आदि सभी दृष्टियों से रीतिकाल की सर्वश्रेष्ठ रचना कहीं जा सकती है।

बिहारी में भक्ति भावना

बिहारी श्रृंगारी कवि हैं। श्रृंगार के संयोग- वियोग पक्ष का आकर्षक वर्णन उन्होंने किया है। बिहारी अवश्य भक्त है, किंतु सूर का जैसा नहीं है । बिहारी राधा- वल्लभ संप्रदाय के विश्वासी हैं । उनकी भक्ति राधा और कृष्ण के प्रति होता है। बिहारी अपना अमर ग्रंथ सतसई के मंगलाचरण में राधा और कृष्ण के जो रूप खींच देता है वह सचमुच उनकी भक्ति का सच्चा उदाहरण है -

मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोय ।
जा तन की झाई परे, स्याम हरित दुति होय ।।

बिहारी और श्रृंगार रस

रीति काल के सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में बिहारी का आदरणीय स्थान है। 'बिहारी सतसई' में जितना श्रृंगार वर्णन मिलता है उतना मध्य काल के और किसी कवि में नहीं मिलता है। उन्होंने श्रृंगार के दोनों पक्षों को, संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार का अत्यंत आकर्षक वर्णन किया है । इसके अलावा उन्होंने नीति, भक्ति, ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद और इतिहास संबंधी दोहों की रचना भी की है।

बिहारी और प्रकृति चित्रण

प्रकृति के सौंदर्य चित्रण में बिहारी ने अत्यंत कुशलता दिखायी है। असल में प्रकृति की उतने रंग-विरंग वर्णन और कहीं नहीं है। बिहारी ने उसकी प्रकृति की खूबसूरत तथा अनुपम ढंग में चित्रण किया है। अथवा प्रकृति वर्णन बिहारी में जितनी उपलब्ध है उतनी उनके समकालीन और किसी कवि में नहीं मिलता है। उसके ग्रीष्म ऋतु का वर्णन देखिए -

कहलाने एकत बसत अहि मयूर मृग बाघ ।
जगत तपोतन से कियो, दरिघ दाघ निदाघ ।।

यह दोहा यह साबित करता है कि प्रकृति चित्रण में बिहारी सिद्धहस्त है।

भाषा-शैली

बिहारी ने मुख्य रूप में वृंदावन में प्रचलित साहित्यिक ब्रजभाषा का उपयोग किया है। ब्रजभाषा की सबसे बड़ी विशेषता उसका लालित्य और माधुर्य है। इसका सही रूप हम सूरदास के पदों में पाये जाते हैं। वही रूप बिहारी भी अपने दोहे में दर्शाये हैं।

भाषा में पूर्वी हिन्दी, बुंदेलखंडी, फारसी तथा उर्दू आदि भाषाओं के शब्द भी पाये जाते हैं । उन्होंने मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग के द्वारा भाषा आकर्षक बना दी। उनकी शैली मुक्तक है ।

काव्य-विषय के अनुसार बिहारी अपनी शैली बदलते हैं। उन्होंने श्रृंगार विषयक दोहे में माधुर्य पूर्ण व्यंजना किया है। भक्ति और नीति संबंधी दोहे में उन्होंने सरस शैली अपनायी तो गणित, दर्शन, ज्योतिष आदि का चमत्कार का प्रयोग किया है।

रस

बिहारी मुख्य रूप से राधा-कृष्ण के चित्रकार थे। इसलिए उनकी सतसई में श्रृंगार रस बन गया है। इसके अलावा उन्होंने शांत, हास्य, करूण जैसे रसों का इस्तेमाल भी किया है।

छंद / अलंकार

बिहारी ने सतसई में दोहा छंद की प्रमुखता दी है। अतिशयोक्ति, अन्योक्ति, सांगरूपक अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अन्वय, असंगति, व्यतिरेक, सन्देह, भ्रांतिमान, विरोधाभास, मानवीकरण, दृष्टांत आदि अनेक अलंकारों का उपयोग बिहारी ने किया है।

काव्यगत विशेषताएँ

बिहारी कृत सतसई हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि मानी जाती है। इसमें उसकी मौलिक एवं पूर्ण विकसित भावना दृष्टिगोचर है। प्रकृति के मनोरम वर्णन, सौन्दर्य और प्रेम वर्णन, भक्ति वर्णन, और नीति के वर्णन में बिहारी अद्बितीय है। भाव पक्ष और कला पक्ष की दृष्टि में सतसई के संपूर्ण दोहे अपने आप में सफल है।

6.2.2 अन्य रीतिसिद्ध कवि

वृंद

वृंद औरंगजेब तथा किशनगढ़ के महाराज राजसिंह के आश्रय में रहते थे। हिन्दी साहित्य के 'सूक्तिकार' के रूप में वृंद जाने जाते हैं।

वृंद की प्रमुख रचनाएँ हैं :- 'बारहमासा', 'भाव पंचाशिका', 'नयन पच्चीसी', 'पवन पच्चीसी', 'श्रृंगार शिक्षा', 'यमक सतसई'।

रसनिधि (पृथ्वी सिंह)-

रचनाएँ- 'रतनहजारा' (बिहारी सतसई का अनुकरण), 'विष्णुपद कीर्तन', 'कवित्त', 'बारहमासा', 'रसनिधि सागर',

'हिंडोला'।

कृष्ण कवि -

कृष्ण कवि ने बिहारी सतसई के प्रत्येक दोहे पर नए सवय्ये की रचना की। 'बिहारी सतसई की टीका', 'विदुर प्रजागर' आदि प्रमुख रचनाएँ हैं।

हठीजी - 'श्री राधा सुधाशतक'

बेनी वाजपेयी - 'फुटकर छंद'

पजनेस - 'पजनेस प्रकाश', 'नखशिख', 'मधु प्रिया'

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

रीतिसिद्ध कवि काव्यशास्त्र के आधार पर काव्य विवेचन नहीं करते। सीधे काव्यांगों का उदाहरण प्रस्तुत करना उनकी विशेषता हैं। छंद, अलंकार, और रस का विवेचन इनकी रचेनाओं में नहीं देख सकता।

Recap / पुनरावृत्ति

- बिहारी कृष्ण भक्त कवि है।
- हिन्दी में सतसई परम्परा का पहला ग्रंथ कृपाराम की हिततरंगिणी मानी जाती है।
- हिन्दी में समास संप्रदाय का खूब परिचय बिहारी ने किया है।
- रीतिकाल में प्रकृति का स्वतंत्र रूप में चित्रण करने का श्रेय सेनापति को मिलता है।
- भूषण को रीतिकाल का राष्ट्रकवि कहा जाता है।
- रीतिकाल का अंतिम कवि ग्वाल माना जाता है।
- बिहारी रीतिकाल के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि है।
- बिहारी का जन्म 1595 ई० में ग्वालियर में हुआ।
- नरहरि दास बिहारी के गुरु थे।
- बिहारी राजा जयसिंह के दरबारी कवि थे।
- बिहारी की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' है।
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बिहारी सतसई को रसिकों के ह्मदय का घर कहा है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है कि बिहारी के दोहे रस के छोटे छोटे छींटे हैं।
- बिहारी की भाषा पर आचार्य शुक्ल ने साहित्यिक कहा है।
- श्यामसुन्दर दास ने बिहारी सतसई को रामचरितमानस के पश्चात की सबसे अधिक प्रचारित कृति माना है।
- आचार्य विश्वनाथ प्रसाद ने बिहारी को हिन्दी साहित्य के बेजोड़ कवि निर्धारित किया है।
- बिहारी सतसई का मुख्य छंद दोहा है।
- अतिशयोक्ति, अन्योक्ति और सांगरूपक आदि बिहारी के प्रिय अलंकार रहे है।
- बिहारी मूल रूप में श्रृंगार व अनुराग के कवि हैं।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रीति काल का दूसरा नाम क्या है?
2. प्रमुख रीतिसिद्ध कवि का नाम लिखिए।
3. बिहारी की एक प्रमुख रचना का नाम लिखिए।
4. तीन रीतिबद्ध कवियों के नाम लिखिए ।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

5. बिहारी किस राजा के दरबारी कवि थे ?
6. बिहारी सतसई का मुख्य छंद कौनसी है ?
7. 'बिहारी के दोहे रस के छोटे छोटे छींटे हैं', किसका कथन है ?
8. बिहारी के गुरु कौन थे ?
9. 'रतन हजारा' किसकी सर्वश्रेष्ठ रचना है?
10. रस निधि की तीन अन्य प्रमुख रचनाएँ लिखिए।
11. 'बिहारी सतसई की टीका' किसकी रचना है ?
12. वृंद की तीन रचनाओं का नाम लिखिए।

Answers उत्तर

1. उत्तर मद्यकाल।
2. बिहारी।
3. बिहारी सतसई।
4. रसनिधि, वृंद, कृष्ण कवि।
5. जयपुर के राजा मिर्जा जयसिंह।
6. दोहा है ।
7. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का।
8. नरहरि दास।
9. रस निधि ।
10. 'रस निधि सागर', 'हिंडोला', 'स्नेहहजारा', 'बारहमासा' आदि ।
11. कृष्ण कवि की।
12. 'बारहमासा', 'भाव पंचाशिका', 'यमक सतसई' आदि।

Assignment प्रदत्त कार्य

- बिहारी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दीजिए।
- अन्य रीतिसिद्ध रचनाकारों की रचनाएँ पर टिप्पणी तैयार कीजिए।

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- आपकी राय में प्रमुख रीतिसिद्ध कवि कौन है ?

इकाई : 3
रीतिमुक्त परम्परा और उसके प्रमुख कवि

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- रीतिमुक्त काव्य के वर्गीकरण समझता है ।
- रीतिकालीन काव्य के परिप्रेक्ष्य में रीतिमुक्त काव्य का सामान्य परिचय प्राप्त करता है ।
- रीतिमुक्त काव्य के स्वरूप समझता है ।
- रीतिकालीन कविता में रीतिमुक्त काव्य के महत्व का परिचय प्राप्त करता है ।
- रीतिमुक्त काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करता है ।
- रीतिमुक्त प्रमुख कवियों और उनकी रचनाओं का परिचय प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

रीतिमुक्त काव्य परंपरागत काव्यरचना के नियमों से मुक्त रहनेवाली काव्यधारा है, जिसकी प्रवृत्ति स्वछंद थी । रीतिमुक्त कवियों ने अपने नवीन और क्रांतिकारी दृष्टिकोण का परिचय दिया। उन्होंने काव्यशास्त्रीय नियमों एवं प्रचलित साहित्यिक परंपराओं को नकारा । वे रीतिबद्ध कवियों की तरह निश्चित नियमों में बँधने के स्थान पर उनसे मुक्त होकर काव्यरचना करते थे । उन्हें कविता की बँधी-बँधाई परंपरा पसंद नहीं था। उन्होंने अपनी अनुभूतियों को कविता के माध्यम से बहुत सहज रूप में व्यक्त करने का प्रयत्न किया है। वे बहुत उन्मुक्त और स्वछंदभाव से अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के पक्षधर हैं।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

काव्य रीति के बन्धन से पूर्णतः मुक्त होकर रचना किये गये कवियों को रीति मुक्त कवि कहते हैं । इसे स्वछंद काव्यधारा के नाम से भी जाना-पहचाना जाता है।

Discussion / चर्चा

रीतिमुक्त कवि भी किसी न किसी राजाश्रय में ही रहते थे, पर वे अपने ऊपर आश्रयदाता के अनावश्यक दबाव स्वीकार नहीं करते थे। वे उनकी काव्याभिरुचियों से प्रभावित हुए बिना अपने रचनाकर्म में लीन रहते थे। इस काव्यधारा के कवियों ने अपनी तीव्र अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए काव्य को एक साधन या माध्यम के रूप में स्वीकार किया। रीतिमुक्त कवियों की काव्याभिव्यक्ति में भाव और कला का सुंदर समन्वय प्राप्त होता है। यहाँ रीतिमुक्त काव्यधारा की कतिपय प्रमुख विशेषताओं के आलोक में उसका मूल्यांकन किया जाना अपेक्षित है।

6.3.1 रीतिमुक्त काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

रीतिमुक्त कवियों ने स्वयं को काव्यरचना के शास्त्रीय नियमों- बंधनों में सीमित न करते हुए उन्मुक्त और स्वछंद रूप में काव्याभिव्यक्ति की है। उनकी कविताएँ उनके हृदय से सहज रूप में प्रस्फुटित हुई हैं, जिनमें उनके जीवन के विविध अनुभवों की झाँकी दिखाई देती है। तमाम साहित्यिक रूढ़ियों का परित्याग कर नवीन मार्ग का अनुगामी होने के कारण रीतिमुक्त कवियों की रचना में विशिष्टता प्रकट होती है। इस धारा के कवियों ने प्रेम की तीव्र अनुभूति को व्यक्त करने के साधन के रूप में काव्य को एक माध्यम माना।

रीतिमुक्त काव्यधारा की सामान्य प्रवृत्तियाँ निम्नवत रेखांकित की जा सकती हैं।

प्रेम का स्वछंद चित्रण

रीतिमुक्त काव्यधारा के कवियों ने तीव्र प्रेमानुभूति

को बहुत स्वछंद और उन्मुक्त भाव से सहज रूप में अभिव्यक्त किया है। इन कवियों ने एक सच्चे प्रेमी की तरह उत्कट प्रेम का अनुभव किया था। प्रेम में संयोग-वियोग की जैसी तीव्र अनुभूति इन कवियों को थी,वही कविता बनकर फूट पड़ी।

प्रेम के लौकिक पक्ष का चित्रण

रीतिमुक्त कविताओं में प्रेम के लौकिक पक्ष को बहुत सफल अभिव्यक्ति मिली है, क्योंकि इस धारा के कवियों ने प्रेम के लौकिक पक्ष को बहुत व्यापकता के साथ आत्मसात कर लिया था। प्रेम की लौकिकता की अनुभूति जन्य विवशता और व्यथा का मार्मिक चित्रण रीतिमुक्त कवियों ने बहुत स्वाभाविक रूप में किया है।

6.3.2 प्रमुख रीतिमुक्त कवि एवं उनकी रचनाएँ

6.3.2 .1 घनानंद

रीतिमुक्त कविता के सर्वोच्च कवि हैं घनानंद। वे प्रेम की पीड़ा के कवि कहे जाते हैं । घनानंद का जन्म 1689 ई. में हुआ। ये दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह के यहाँ मीर मुंशी थे । वे जाति के कायस्थ थे। ये सुजान नामक वेश्या से प्रेम करते थे।

घनानन्द की रचनाएँ - 'सुजान हित'(इसमें 507 पद हैं।),'सुजान सागर', 'सुजान शतक', 'विरहलीला', 'लोकसार', 'रसकेलिवल्ली', 'कृपाकाण्ड', 'विरहलीला', 'इश्कलता', 'प्रेमपत्रिका', 'वियोगबेलि', 'प्रेंमसरोवर', 'ब्रजविलास', 'रसवसंत', 'यमुनायश' आदि कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं ।

घनानंद की काव्य दृष्टि

घनानंद सरल, सहज भाषा के कवि हैं। ब्रजभाषा का माधुरी उनकी कविता की विशेषता है । घनानंद के काव्य में श्रृंगार रस की प्रधानता है। श्रृंगार के दोनों ही पक्ष संयोग और वियोग का निरूपण उनके काव्य में हुआ है।

घनानंद की विरहानुभूति

घनानन्द भावना के कवि थे । कवि के रूप में घनानन्द ने अनुभूति से मित्रता की थी, ज्ञान से नहीं । यही कारण है कि उनकी महत्ता अनुभूति, भावना और सौंदर्य के कारण ही अधिक है। एक प्रकार से उनकी कविता उनके व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है। भाषा का सौंदर्य, कल्पना की सूक्ष्मता, वैयक्तिक अनुभूतियों का ईमानदार निरूपण और प्रेममार्ग की विशिष्टता और सरलता जैसी प्रवृत्तियों ने घनानन्द को एक श्रेष्ठ कवि के रूप में प्रामाणित करती है।

अन्य कवि

आलम - 'आलमकेलि'
बोधा - 'विरह वारीशे'
ठाकुर - 'ठाकुर ठक्सको'
द्विजदेव - 'श्रृंगारलतिका', 'श्रृंगार बत्तीसी'

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

रीतिकालीन समयसीमा में उपलब्ध काव्यसर्जन को जिन प्रमुख दो वर्गों में विभक्त करने का प्रयास किया गया है, वे हैं -

रीतिबद्ध और रीतिमुक्त । इससे पूर्व आचार्य शुक्ल ने रीतिकाल के कवियों को रीतिग्रंथकार कवि एवं उनसे इतर को अन्य कवि के रूप में रखने का आग्रह किया था। रीतिबद्धता इस काल की प्रमुख प्रवृत्ति होने के कारण जिन कवियों की रचनाएँ काव्यांग विवेचन की परिधि में आती हैं, उन्हें रीतिबद्ध कवि कहते हैं । इस काल के अन्य कवि जो रीतिबद्धता की परिधि का स्पर्श ही नहीं करते, उन्हें रीतिमुक्त कवि कहने लगा।

Recap / पुनरावृत्ति

- रीतिमुक्त काव्यधारा स्वछंद भावाभिव्यक्ति के रूप में अपनी अलग पहचान बनाती है।
- रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्य धारा के विभाजन का श्रेय आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र को दिया जा सकता है।
- रीतिमुक्त कवियों में रीति का कोई विधान या तत्व नहीं है।
- इन कवियों की काव्यरचना का फलक बहुत व्यापक और उच्च भावभूमि पर उपस्थित है।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रमुख रीतिमुक्त कवि का नाम लिखिए?
2. घनानन्द की एक प्रमुख रचना का नाम लिखिए?
3. तीन रीतिमुक्त कवियों का नाम लिखिए?
4. 'आलमकेलि' किसकी रचना है?
5. 'विरह वारीशे' किसकी रचना है ?
6. 'ठाकुर ठक्षको' किसकी रचना है?
7. घनानन्द की अन्य तीन रचनाओं का नाम लिखिए?
8. किसे 'प्रेम की पीड़ा के कवि' कहा जाते हैं ?

Answers उत्तर

1. घनानन्द ।
2. सुजान ।
3. आलम, बोधा, ठाकुर ।
4. आलम की ।
5. बोधा की ।
6. ठाकुर की ।
7. 'वियोगबेलि', 'प्रेंमसरोवर, 'ब्रजविलास' ।
8. घनानंद को ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- रीतिमुक्त कवि घनानन्द की विशेषताओं पर टिप्पणी तैयार कीजिए ?

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- आपकी राय में प्रमुख रीतिमुक्त कवि कौन है ?

इकाई : 4
रीतिकाल के अन्य प्रमुख कवि और प्रवृत्तियाँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- रीतिकालीन अन्य प्रमुख कवियों की जानकारी प्राप्त करता है ।
- रीतिकालीन अन्य काव्य प्रवृत्तियों की जानकारी प्राप्त करता है ।
- रीतिकालीन भक्ति काव्य की जानकारी प्राप्त करता है ।
- रीतिकालीन सूफी काव्य की जानकारी प्राप्त करता है ।
- रीतिकालीन अन्य प्रेमाख्यान काव्य की जानकारी प्राप्त करता है ।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

रीतिकाल में राजा महाराजाओं के जीवन विलासिता से अतिरिक्त आम जनता धार्मिक प्रवृत्तियों से अधिक प्राभावित थे। निर्गुण भक्ति धारा से प्रभावित होकर जनसाधारण से अनेक कवि उभरकर आये । फलस्वरूप रीतिकाल में अनेक भक्तिकाव्य की रचना हुई । साथ ही अनेक सूफी और प्रेमाख्यान काव्य भी देख सकते हैं ।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

रीतिकाल की मुख्य प्रवृत्तियों के अलावा अन्य साहित्यिक प्रवृत्तियाँ भी रीतिकाल को संपन्न बना देते हैं । इनमें भक्ति भावना, सूफी अथवा प्रेमाख्यान की प्रवृत्तियाँ आदि उल्लेखनीय है ।

Discussion / चर्चा

6.4.1 संत भक्तिकाव्य

भक्तिकाल के बाद अपनी ज्ञान योग भावना को अग्रसर करने में रीतिकाल के कई संत कवियों ने समय -समय पर योग दिया। इनमें से प्रमुख हैं यारी साहब, दरिया साहब, जगजीवनदास, पलटू साहब, चरन दास, शिवनारायण और तुलसी साहब आदि।

6.4.2 सूफी तथा प्रेमाख्यान काव्य

भक्तिकाल के बाद रीतिकाल में भी पेमाख्यान काव्य परंपरा की प्रवृत्ति देख सकते हैं। यह दो प्रकार के होते थे। अध्यात्मिक सिद्धांत परक तथा लौकिक प्रेमपरक। प्रमुख कविगण हैं, कासिमशाह, नूर मुहम्मद, शेख निसार, सूरदास, दुखहरंदास आदि।

6.4.3 अन्य प्रवृत्तियाँ

रीतिकालीन प्रेमाख्यान प्रवृत्तियों में भक्तिकालीन प्रेमाख्यान काव्य भाषा की सरलता और स्वाभाविकता नहीं देख सकते हैं। उनमें अधिक अलंकरण, पाण्डित्य प्रदर्शन और नायक- नायिका भेद की प्रवृत्ति देख सकते हैं। रीतिकालीन राम काव्य, कृष्ण काव्य, नीतिकाव्य और वीर काव्य आदि उदाहरण हैं।

Critical Overview / आलोचनात्मक अवलोकन

रीतिकालीन समाज या कवियों में तत्कालीन जनता को प्रेरणा या संदेश देने वाली कोई प्रवृत्ति दिखाई नहीं देती। तत्कालीन रीतिकालीन काव्यों में नवीन जीवन दर्शन तो नहीं देख सकते। तत्कालीन राजाओं के विलासपूर्ण जीवन शैली के कारण रचनाओं में राष्ट्रीय भावना की कमी दिखाई पडता था।

Recap / पुनरावृत्ति

- भक्ति केंद्रित रचनायें देख सकते हैं ।
- सूफी काव्य की रचना ।
- प्रेमाख्यान काव्य की रचना ।
- राम और कृष्ण काव्य की रचना ।

Objective types Questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अन्य रीतिकालीन प्रवृत्तियाँ क्या- क्या हैं ?
2. अन्य रीतिकालीन संत कवियों के नाम लिखिए ।
3. रीतिकाल की पेमाख्यान काव्य परंपरा की प्रवृत्ति क्या क्या है ?
4. रीतिकाल के अन्य प्रमुख काव्य क्या- क्या हैं?
5. रीतिकाल के सूफी तथा प्रेमाख्यान काव्य परंपरा के तीन कवियों का नाम लिखिए ?
6. भक्तिकाल के बाद रीतिकाल में भी प्रेमाख्यान काव्य परंपरा देख सकते हैं । सही या गलत ?
7. रीतिकालीन प्रेमाख्यान प्रवृत्तियों में भक्तिकालीन प्रेमाख्यान काव्य भाषा की सरलता और स्वाभाविकता नहीं देख सकते हैं । सही या गलत ?
8. रीतिकाल में राम और कृष्ण काव्य की रचना भी हुई है ? सही या गलत ?

Answers उत्तर

1. सूफी तथा प्रेमाख्यान ।
2. दरिया साहब', 'जगजीवनदास','पलटू साहब' , 'चरन दास', 'शिवनारायण' और 'तुलसी साहब' ।
3. अध्यात्मिक सिद्धांत परक और लौकिक प्रेमपरक ।
4. राम काव्य, कृष्ण काव्य, नीतिकाव्य और वीर काव्य ।
5. कासिमशाह, नूर मुहम्मद, शेख निसार ।
6. सही ।
7. सही ।
8. सही ।

Assignment प्रदत्त कार्य

- रीतिकालीन अन्य कवियों की प्रवृत्तियों पर लेखनी तैयर कीजिए?

Self Assesment Questions स्वमूल्यांकन प्रश्न

- रीतिकाल के संत कवियों का योगदान पर अपना विचार स्पष्ट कीजिए?

Reference Books सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल ।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ.नगेन्द्र ।
3. युग और प्रवृत्तियाँ - डॉ. शिव कुमार मिश्र ।
4. बिहारी और सतसई - पद्मसिंह शर्मा ।
5. बिहारी सतसई: तुलनात्मक अध्ययन - पद्मसिंह शर्मा ।
6. देव और बिहारी - कृष्ण बिहारी मिश्र ।
7. बिहारी और देव - लाला भगवानदीन ।
8. बिहारी - विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ।
9. बिहारी की वाग्विभूति - विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ।
10. संक्षिप्त बिहारी - डॉ.संसार चंद ।
11. बिहारी दिग्दर्शन - डॉ. राजकुमार वर्मा ।
12. बिरारी सतसई - डॉ.नेमीचन्द जैन ।
13. कविवर बिहारी और उसका युग - डॉ. रणधीर सिंह ।
14. बिहारी सतसई - डॉ. हरिचरण वर्मा ।

E- Content ई : सामग्री

1. https://hi.wikipedia.org/wiki/रीति_काल

Model Question Paper
Set - 01

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ………

Reg. No : ……….............

Name : ………………...

FIRST SEMESTER B.A. HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION

DISCIPLINE CORE -I -B21HD01DC- हिन्दी साहित्य का इतिहास : आदिकाल से रीतिकाल तक

(CBCS - UG)

2022-23 - Admission Onwards

Time:3 Hours Max Marks: 70

SECTION - A

किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (1x10=10)

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल : वीरगाथा काल :: ………. : बीजवपन काल ।
2. भक्तिकाल का दूसरा नामकरण क्या है ?
3. रीतिमुक्त धारा के प्रमुख कवि कौन थे ?
4. कुलपति मिश्र किस श्रेणी के कवि थे ?
5. हिन्दी साहित्य में भक्ति आन्दोलन का प्रारंभ किस परंपरा से माना जाता है ?
6. रीतिकाल को 'कलाकाल 'नाम किसने दिया ?
7. परमाल रासो का दूसरा नाम क्या है ?
8. पृथ्वीराज रासो में कुल कितने अध्याय है?
9. हिन्दी साहित्य के प्रथम महाकवि कौन है ?
10. रामचरित मानस किस धारा का काव्य है ?
11. श्यामसुंदर दास ने रीतिकाल को क्या नाम दिया ?
12. सूरदास : …….. :: तुलसी दास : राम भक्ति ।
13. राहुल सांस्कृत्यायन ने प्रारंभिक काल को क्या नाम दिया ?
14. कबीरदास की भाषा ………..?
15. आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी के अनुसार रीतिकाल की समय - सीमा कब से कब तक मानी गयी है ?

SECTION -B

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (2 x 5 =10)

16. रासो साहित्य का केन्द्र विषय क्या है ?
17. दो प्रमुख रीतिबद्ध कवि और उनकी रचनाएँ लिखिए ।
18. भक्तिकाल के उदय के कारण बताइए ।
19. रीतिकालीन काव्यधारा की मुख्य प्रवृत्तियाँ क्या है ?
20. आदिकाल से आप क्या समझते है ?
21. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने रीतिकाल को ' श्रृंगार काल ' नाम क्यों दिया ?
22. वीरगाथा काल के प्रमुख चार कवियों और उनके रचनाओं के नाम लिखिए
23. भक्तिकालीन काव्यधारा की विशेषता पर प्रकाश डालिए ।
24. अष्टछाप का परिचय दीजिए ।
25. आदिकाल केलिए 'वीरगाथा काल' नामकरण कहाँ तक समीचीन है ? अपनी राय स्पष्ट कीजिए ।

SECTION -C

किन्हीं छः प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (5 x 6 =30)

26. वीरगाथा काल की प्रमुख प्रवृत्तियों पर विचार प्रकट कीजिए ।
27. प्रेम काव्य परंपरा अन्य भक्तिकालीन परंपरा से भिन्न है , अपना मत प्रकट कीजिए ।
28. रीति 'शब्द का मतलब क्या है ? विभिन्न विद्वानों के विचार भी स्पष्ट कीजिए ।
29. बिहारी और उनकी रचनाओं की विशेषता क्या है ?
30. पृथ्वीराज रासो महाकाव्य है या खण्ड काव्य ? समर्थन कीजिए ।
31. सगुण भक्ति कवि और उनके काव्यों का संक्षिप्त परिचय दीजिए ।
32. देव और बिहारी पर टिप्पणी लिखिए ।
33. निर्गुण भक्ति के प्रमुख प्रवर्तक कौन है ? निर्गुण भक्ति काव्यधारा पर अपना विचार लिखिए ।
34. सिद्ध साहित्य पर टिप्पणी लिखिए ।
35. रीतिकाल को हिन्दी साहित्य का अंधकार काल कहा जाता है। अपना मत प्रकट कीजिए ।
36. आदिकालीन अपभ्रंश रचनाओं पर प्रकाश डालिए ।
37. सूफी काव्यधारा की विशेषताएँ लिखिए ।

SECTION -D

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (10 x 2 =20)

38. हिन्दी साहित्य के काल विभाजन एवं नामकरण पर प्रकाश डालिए ।
39. सूर और तुलसी की काव्यधारा की विशेषताएँ लिखिए ।
40. रीतिकालीन विभिन्न नामकरण पर अपना विचार स्पष्ट कीजिए।
41. रासो साहित्य - परिचय एवं विशेषताएँ लिखिए ।

Model Question Paper
Set - 02

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ………   Reg. No : ………...............

Name : ………………...

FIRST SEMESTER B.A. HINDI LANGUAGE AND LITERATURE EXAMINATION

DISCIPLINE CORE -I -B21HD01DC- हिन्दी साहित्य का इतिहास : आदिकाल से रीतिकाल तक

(CBCS - UG)

2022-23 - Admission Onwards

Time:3 Hours   Max Marks: 70

SECTION - A

किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (1x10=10)

1. पृथ्वीराज रासो महाकाव्य में प्रत्येक अध्याय को क्या कहा जाता है ?
2. मलिक मोहम्मद जायसी की एक रचना का नाम लिखिए ।
3. कबीर की वाणी किस ग्रंथ में संकलित है ?
4. रसिकप्रिया किसकी रचना है ?
5. हम्मीर रासो के रचयिता कौन है ?
6. चिन्तामणि रीतिकाल के किस श्रेणी के कवि थे ?
7. किसी एक सिद्ध कवि का नाम लिखिए ।
8. विद्यापति कौन है ?
9. बिहारीलाल किस राजा के दरबारी कवि थे ?
10. एक रीतिबद्ध कवि का नाम लिखिए ।
11. सूफी शब्द से क्या तात्पर्य है ?
12. अमीर खुसरो किस काल के कवि थे ?
13. कविकुल कल्पतरु के रचनाकार कौन है ?
14. सूरदास की कीर्ति का आधार ग्रन्थ कौन है ?
15. तुलसीदास के गुरु का नाम लिखिए ।

SECTION -B

किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (2 x 5 =10)

16. पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता मानने वाले विद्वानों के नाम लिखिए ।
17. कवि जसवंत सिंह की प्रमुख रचनाएँ लिखिए ।
18. भक्तिकालीन साहित्य में ज्ञान की प्रमुखता है । स्पष्ट कीजिए ।
19. तुलसीदास के काव्य की समन्वयात्मकता पर अपना विचार स्पष्ट कीजिए ।
20. जैन साहित्य के प्रमुख कवियों के नाम लिखिए ।
21. रीतिमुक्त काव्यधारा पर टिप्पणी लिखिए ।
22. भक्ति काल को क्यों स्वर्ण काल कहा जाता है ?
23. वल्लभाचार्य कौन है ? उनके प्रमुख शिष्यों के नाम लिखिए ।
24. रीतिकाल के संत कवि और उनके प्रमुख रचनाएँ और क्या-क्या हैं?
25. रीति सिद्ध साहित्य माने क्या है ?

SECTION -C

किन्हीं छः प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (5 x 6 =30)

26. आदिकाल नामकरण की समस्याओं पर अपना विचार स्पष्ट कीजिए ।
27. भूषण और उनके रचनाओं की विशेषताएँ लिखिए ।
28. बिहारी सतसई पर टिप्पणी लिखिए ।
29. रामचरित मानस का परिचय दीजिए ।
30. अष्टछाप और अष्ट सखाओं का विस्तृत वर्णन कीजिए ।
31. सूर, तुलसी और जायसी पर टिप्पणी लिखिए ।
32. सिद्ध, नाथ और जैन साहित्य पर अपना मत प्रकट कीजिए ।
33. भक्तिकाल के विभिन्न नामकरण पर विचार व्यक्त कीजिए ।
34. घनानंद की रचनाओं की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए ।
35. संत कबीर दास ।
36. वीरगाथाकाल की मुख्य प्रवृत्तियाँ क्या-क्या है ?
37. पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता पर अपना विचार स्पष्ट कीजिए ।

SECTION -D

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (10 x 2 =20)

38. राम काव्य परंपरा और कृष्ण काव्य परंपरा पर तुलना कीजिए ।
39. हिन्दी साहित्य का आदिकाल पर विचार प्रकट कीजिए ।
40. रीतिकाल के प्रमुख धाराएँ और प्रमुख कवियों पर विचार प्रकट कीजिए ।
41. बिहारी लाल और उनकी रचनाओं की विशेषताएँ क्या - क्या है ?

Regional Centres

Kozhikode
Govt. Arts and Science College
Meenchantha, Kozhikode,
Kerala, Pin: 673002
Ph: 04952920228
email: rckdirector@sgou.ac.in

Thalassery
Govt. Brennen College
Dharmadam, Thalassery,
Kannur, Pin: 670106
Ph: 04902990494
email: rctdirector@sgou.ac.in

Tripunithura
Govt. College
Tripunithura, Ernakulam,
Kerala, Pin: 682301
Ph: 04842927436
email: rcedirector@sgou.ac.in

Pattambi
Sreeneelakanta Govt. Sanskrit College
Pattambi, Palakkad,
Kerala, Pin: 679303
Ph: 04662912009
email: rcpdirector@sgou.ac.in

Sreeenarayanaguru Open University
Kollam, Kerala Pin- 691601, email: info@sgou.ac.in, www.sgou.ac.in Ph: +91 474 2966841